Agamniga[...] Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

: श्री हरि :

रामलीला नाटक

—·—·— —

लेखक :-
पं० रामदत्त ज्योतिर्विद महोपदेशक
भीमताल- नैनीताल निवासी

बिना अग्रिम धन के वी० पी० पी० नही भेजी जा सकेगी
जुगल किशोर भीमसैन बुकसेलर
पल्टन बाजार, देहरादून

प्रकाशक :
अरुण ग्रुप आफ पब्लिकेशन्स
सिविल लाइन्स, मुरादाबाद ।

Rs 10 P.00

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाटक-पात्रों की सूची

पुरुष-पात्र

बन्दी–मङ्गलाचरण कर्ता
सूत्रधार–नाटक कर्त्ता
देवगण–इन्द्रादि देवता
विश्वामित्र–एक महर्षि
दशरथ–आयोध्यापति
वशिष्ठ–राम के गुरु
शृंगीमुनि–एक मुनि
सुमन्त–दशरथ के मन्त्री
राम–ईश्वरावतार मर्यादापुरुषोत्तम
लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न–राम के भाई
मारीच–एक राक्षस
सुबाहु–एक राक्षस
जनक–सीता जी के पिता, मिथलेश
सतानन्द–जनक के पुरोहित
रावण–लंकाधिपति
परशुराम–एक मुनि
निषाद–केवट
जयन्त–इन्द्र का पुत्र
अत्रिमुनि–एक महर्षि
अगस्त्य–एक महर्षि
भारद्वाज–एक महर्षि
बालमीकि–एक महर्षि
खरदूषण–राक्षस
जटायु–गृद्धराज
सुग्रीव–बानरों का राजा
हनुमान–सुग्रीव का मन्त्री
बालि–बानरों का राजा
अंगद–युवराज
जामवन्त–ऋच्छपति
सम्पात्ति–जटायु का भाई
विभीषण–रावण का भाई
अक्षयकुमार–रावण का पुत्र
मालवन्त–रावण का मन्त्री
समुद्र–सागर
मेघनाद–रावण का पुत्र
सुषेन–एक वैद्य
कुम्भकरण–रावण का भाई
अहिरावण–पाताल का राजा
मकरध्वज–अहिरावण का द्वारपाल
शतानन्द–जनक का मन्त्री
द्वारपाल–प्रतीहार
बन्दीजन–भाट
नल–एक बन्दर
नील–एक बन्दर

स्त्री-पात्र

नटी–सूत्रधार की स्त्री
ताड़का–एक राक्षसी
अहिल्या–गौतम की स्त्री
सीता–जनकनन्दिनी
गौरी–पार्वती
सहेली–सखी
सुनैना–सीता की माता
कैकेयी–भरत की माता
कौशल्या–राम की माता
सुमित्रा–लक्ष्मण की माता
अनुसूया–अत्रि पत्नी
सूर्पणखा–रावण की भगिनी
शवरी–भिल्लिनी
तारा–बालि की पत्नी
त्रिजटा–एक राक्षसी
मन्दोदरी–रावण की रानी
सुलोचना–मेघनाथ की पत्नी
मन्थरा–केकैयी की दासी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। हरि ओ३म् ।।

सर्वे धर्म्मे प्रतिष्ठितम्

बी० बी० वही मैजी का दफ्तरी भीमसैन बुकसेलर पल्टन बाजार, देहरादून

भूमिका

भारतबर्ष में पूर्व काल ही से संगीत विद्या का अति आदर होता आया है। हमारे प्यारे इष्टदेव श्याम सुन्दर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की मुरली एवं विश्वनाथ भगवान् शंकर का डमरू भलि भाँति इस बात का परिचय दे रहे हैं कि आर्य जाति की संगीतविद्या कितनी प्यारी वस्तु है। हमारे पवित्र सनातन धर्म के अनुसार भगवती सरस्वती माता को संगीत की अधिष्ठात्री माना है। वीणापुस्तकधारिणी शारदा माता के अतिरिक्त देवर्षि नारद की वीणा की झंकार पुराणों में प्रसिद्ध है। केवल पुराण ही नहीं वेद भी हमारे इस विषय में चुप नहीं हैं। गान उपासना का प्रधान अङ्ग होने ही से गीतोपनिषद् में भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीमुख से "वेदाना सामवेदोस्मि" सामवेद को अपनी एक मूर्ति बतलाया है। वेदों की संहिताओं में गाने योग्य कवित्वपूर्ण सूक्तों की कमी नहीं है। हमारे पूर्वज दण्डकारण्य वासी ऋषि मुनि आरण्यक उपनिषदों के गान ही से संसार के माया मोह से विरक्त होकर स्वर्ग एवं मोक्ष पद प्राप्त करते थे।

कामोद्दीपन अथवा विषयशक्ति के लिये संगीत विद्या का प्रचार ऋषियों ने नहीं किया था, जैसा कि वर्तमान काल में उसका उलटा फल दीख रहा है। संगीत की सृष्टि विषय वासना निवृत्ति एवं भगवद्भक्ति के हेतु ही हुई थी, जैसा कि पद्मपुराण में भगवान् ने नारद से कहा है:—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ते तत्र तिष्ठामि नारदः ।।

अर्थात हे नारद ! मैं वैकुण्ठ में नहीं रहता हूँ और न योगियों के ही हृदय में रहता हूँ, किन्तु जहाँ मेरे भक्त गाते हैं वहीं ठहरता हूँ। परम योगिराज धर्मशास्त्र प्रवर्तक महर्षि याज्ञवल्क्य जी ने इस विद्या का कैसा अलौकिक महात्म्य दर्शाया है, देखिये—

गीतवादनतत्वज्ञः श्रुतजातिविशारदः ।
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गमवाप्नुयात् ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संस्कृत के अति प्राचीन काव्य नाटक हमको भलि-भाँति साक्षी दे रहे हैं कि आधुनिक पाश्चात्य नाटक, उपन्यास, प्रहसनादि की सृष्टि से ही आपके देश में नाटकों का प्रचार नहीं हुआ, किन्तु बहुत प्राचीनकाल से भारत-भूमि में नाटक बनते आये हैं और बहुत कुछ उनका प्रचार था। कृष्ण पुत्र शाम्ब-कुमार इस कला में बड़े ही प्रवीण थे, नाटक खेलने की उनकी कथा मिलती है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत कुछ इस बात का पुराणों से पता मिलता है।

पाश्चात्य तत्वदर्शी पण्डितगण भी मुक्त कण्ठ से इस बात को स्वीकार करते हैं कि भारतवासी बहुत प्राचीन काल में इस विद्या के जानकार थे, गान विद्या की बहुत कुछ चर्चा पूर्वकाल ही से इस आर्यावर्त्त में है। इस देश के संगीत शास्त्रवेत्ता तत्वदर्शी इस विषय में यही कहते हैं कि—

साहित्य संगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।

खेद का विषय है कि आज उसी देश के नाटक रूप रामलीला एवं रासलीलाओं की वर्तमान दशा देखकर कैसा दुःख होता है। इन बेचारों को अभी तक नाटक के सींग पूँछ की कुछ खबर नहीं है। हरिश्चन्द्र का पार्ट लिया हुआ नाटक-पात्र रंग भूमि में आता है और स्वयं ही क्या गाता है— "सत्यव्रती राजा हरिश्चन्द्र आये", इसी प्रकार रामलीला में सीताहरण करते हुये रावण "जोशी रूप बनाओ रावण ने" इस रागिनी को गाते हुये देखा जाता है। अथवा पण्डित जी सातों काण्ड रामायण की कथा बाँच गये और राम लक्ष्मण सीता रावण इत्यादि स्वरूप बनाकर एक बड़े दालान में बैठा दिये अथवा दस दिन तक उलटे सीधे कूदते फाँदते रहे, आतिशबाजी उड़ती रही, दो चार सहस्र मुद्रा स्वाहा हुये, लीला हो गई। विधर्मी लोग लड़कों के खेल के तुल्य इस प्रकार की लीला को समझकर उपहास करते हैं और अपना जो वास्तविक उद्देश्य लीला करने का है सो भी सिद्ध नहीं होता। उत्तर प्रदेश एवं अवध के अनेक नगरों में मुझे जहाँ कहीं रामलीला देखने का अवसर मिला प्रायः ऐसी ही लीला देखी।

हमारे पर्वतीय प्रदेश जिला अल्मोड़ा और नैनीताल में जबसे रामलीला का प्रचार हुआ, आरम्भ से ही नाटक की रीति पर ही लीला होती आई। यहाँ पर हम स्वर्गीय पं० देवीदत्त जोशी जी डिप्टी कलक्टर साहब को हृदय से धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस कूर्मांचल में नाटक की रीति पर रामलीला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करने की नींव डाली–तब से इस प्राँत में रामलीलाओं का प्रचार हुआ। गत कई वर्ष से हमारे भीमताल में भी नाटक की रीति पर रामलीला होती है। इस प्रकार की लीला करने के लिये एक रामलीला नाटक की आवश्यकता थी, जिससे अभिनय की रीति पर रामलीला करने में सहायता मिले। इसी कारण यह "रामलीला नाटक" बनाया गया। इस ग्रन्थ में तुलसीदास कृत रामायण की दोहा चौपाई सम्वाद के ढंग पर कवि वाक्य हटा करके रक्खी गई हैं और कहीं कहीं पर श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण एवं अध्यात्म नैपाली रामायण के श्लोक भी दिये गये हैं। अनेक प्रकार की राग-रागिनी, गाने की चीजें, प्रभाती, भैरवी, झिंझौटी, खम्माच, श्याम कल्याण,गौरी, पीलू, सोरठ, विहाग, देश, जयजयवन्ती, जोगिया, बेसवाड़ा,माड़,हम्मीर, काफी, कहरुआ, ग़ज़ल थियेटरी राग इत्यादि का इसमें समावेश किया गया है।

अधिकाँश राग-रागिनी इसमें अपनी ही लीला की बनी हुई लिखी हैं। उनका अभी तक अन्यत्र प्रचार नहीं हुआ है। हमारे अनेक मित्रों की यही सम्मति थी कि इस पुस्तक में बाहर की बनी हुई चीज़ें न लिखी जायँ और अपनी ही राग रागिनी इसमें छपें। पर यहाँ लीला में तीन साल से देहरादून की रामलीला रामायण एवं अल्मोड़ा नैनीताल की बनी हुई कुछ फुटकर चीजें गाई गयीं। इसी कारण हमने भी उन सबको इस नाटक में संयुक्त कर दिया है, जो हमारे यहाँ गाई गयीं। भक्त यमुनादास प्रभृति उनके रचियता महाशयों को बार-बार हमारा धन्यवाद है।

इस पुस्तक में कहीं-कहीं पर सम्वाद परणार्थ दोहा चौपाइयों में नये-नये पद अपनी ओर से भी मिलाये हैं। नाटक-ग्रन्थों में प्रायः अनेक गर्भांक इत्यादि भाग प्रति भाग दिये जाते हैं। पर यह पुस्तक विशेष करके रामलीला अभिनय ही के लिये लिखो गई है,इसी कारण इस पुस्तक में दिवस और दृश्य इस क्रम से अंक गर्भांक विभाग किये हैं। ग्यारह दिवस अङ्क विभाग दृश्य ही गर्भांक विभाग समझिये। इस रामलीला नाटक के लिखने का हमारा यही अभिप्राय है कि रामलीलाओं के प्रवन्धकर्त्ता इसी के अनुसार लीला करायें, जिससे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र के पवित्र चरित्रों की सर्व-साधारण को शिक्षा मिले और संसार में सुख पूर्वक जीवन बिताकर अन्त में परमपद प्राप्त हो, जैसा कि गोसाईं जी महाराज ने कहा है–

सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं। अन्तकाल रघुपतिपुर जाहीं ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्री गणेशायनमः ॥

अथ

रामलीला नाटक प्रारम्भ

प्रथम दिवस

मङ्गलाचरण

पहला दृश्य–स्थान रंगभूमि

(नान्दी का मङ्गलाचरण पढ़ते हुए प्रवेश)

श्लोक–शान्तं शाश्वतमप्रमेयपनघं निर्वाणशान्तिप्रदं ।
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं ।
वंदेऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूड़ामणिम् ॥

दोहा–जेहि सुमिरत सिधि होय गणनायक करिवर वदन ।
करहु अनुग्रह सोइ बुद्धिराशि शुभ गुण सदन ॥
मूक होहिं वाचाल पंगु चढ़ैं गिरिवर गहन ।
जासु कृपासुदयाल द्रवहु सकल कलिमल हरन ॥

(नान्दी जाता हैं, नटी सूत्रधार का प्रवेश)

श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन हरण भव भय दारुणम् ।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम् ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नीलनीरज सुन्दरम् ।
पट पीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम् ॥
भज दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्यवंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम् ॥
शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंङ्ग विभूषणम् ।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम ज़ित खरदूषणम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इमि वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास करु कामादि खलदल गंजनम् ॥

नटी—प्राणनाथ ! आज क्या अभिनय होगा ? दासी को इतनी शीघ्रता से क्यों बुलाया है ? आज दर्शक समाज को देखकर मन रूपी भ्रमर प्रसन्न होकर गूँज रहा है । आज के अभिनय के श्रवण करने की बार-बार उत्कण्ठा हो रही है ।

सूत्रधार—प्राणप्यारी ! आज का नाटक संसार को परम लाभदायक होगा । इस लोक में सुशिक्षाप्रद पितृ-मातृ भक्ति, भ्रातृप्रेम एवं सुहृद मैत्री, पातिव्रत आदि की शिक्षा देता हुआ परम सुखदायक, परलोक में मोक्षदायक, रावणारि, भक्तवत्सल, भगवान रामचन्द्र की लीला का नाटक गुसाईं तुलसीदासजी की मानस रामायण के अनुसार खेलने की इच्छा है, जो कि शृङ्गारादि नवरस पूर्ण है ।

नटी—प्रियतम ! धन्य हैं दशरथनन्दन रघुराज श्रीरामचन्द्र का चरित्र ऐसा ही पवित्र एवं मनोहर है । निस्सन्देह इस अभिनय को आरम्भ कीजिये ।

सूत्रधार—बहुत अच्छा, आरम्भ करता हूँ, तो कौन सी ऋतु का आश्रय लेकर गाऊँ ।

नटी—स्वामिन् ! आकाश घन रहित एवं निर्मल हो गया है । चन्द्रमण्डल का प्रकाश देखकर काव्यों की उपमाओं का स्मरण हो रहा है, तारामण्डल स्वच्छ दीखता है, प्यारे ! शरद ऋतु का ही आश्रय लीजिए ।

सूत्रधार—आहा हा ! प्यारी मुझे भी, श्री रामचन्द्र का यह वाक्य याद आ गया हैं । (यथा)

वर्षा विगत शरद् ऋतु आई । सुधि न तात सीता की पाई ।

नटी—शीघ्रता कीजिए विलम्ब होता है । प्राणनाथ क्या देर है ?

सूत्रधार—(गाता है)

सीतापति रामचन्द्र श्रीपति रघुराई,
रसना रस नाम लेत सन्तन को दरश देत ।
विहसत मुख मन्द मन्द सुन्दर सुखदाई ॥
केशर को तिलक भाल मानो रवि प्रात काल ।
श्रवणन कुण्डल सुहात रतिपति छविछाई ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोतिन की गले माल ताराउडुगण विशाल।
मानो गिरि शिखर फोरि सरवरि विहाई ॥
दशन चलत चतुर चाल नैनामृत सम विशाल।
अरुण नयन भृकुटि भाल नासिका सुहाई ॥
सरयू के नीर तीर विहरत रघुवंश वीर।
तुलसीदास हरण निरखि चरनन रज पाई ॥

(जाता है)

(पर्दा उठता है—स्थान हिमालय पर्वत)

"ब्रह्मादि देवगण इन्द्र सहित गौ रूप धारा पृथ्वी एवं सिद्ध महर्षियों को साथ लिए हुए बैठे तप करते हैं, और स्तुति करते हैं।

देवगण—(एक स्वर हो गाते हैं, यमन कल्याण)

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रणतपाल भगवन्ता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिन्धु सुता प्रिय कन्ता ॥
पालन सुर धरणी अद्भुत करणी मर्म न जाने कोई।
सो सहज कृपाला दीनदयाला करो अनुग्रह सोई ॥१॥
जय जय अविनाशी घट घट वासी व्यापक परमानन्दा।
अविगत गोतीता चरित पुनीता मायारहित मुकुन्दा ॥
जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनि वृन्दा।
निशि वासर ध्यावहिं हरि गुण गावहिं जयति सच्चिदानन्दा॥२॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा ॥
जो भव भय भंजन जन मन रंजन गंजन विपति वरूथा।
मन वच क्रम वानी छांड़ि सयानी शरण सकल सुर यूथा ॥३॥
शारद श्रुति शेषा ऋषय अशेषा जा कहँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवहु सो श्री भगवाना ॥
भव वारिधि मन्दिर सब विधि सुन्दर गुण मन्दिर सुख पुन्जा।
मुनि सिद्धि सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इमि वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास करु कामादि खलदल गंजनम् ।।

नटी–प्राणनाथ ! आज क्या अभिनय होगा ? दासी को इतनी शीघ्रता से क्यों बुलाया है ? आज दर्शक समाज को देखकर मन रूपी भ्रमर प्रसन्न होकर गूँज रहा है । आज के अभिनय के श्रवण करने की बार-बार उत्कण्ठा हो रही है ।

सूत्रधार–प्राणप्यारी ! आज का नाटक संसार को परम लाभदायक होगा । इस लोक में सुशिक्षाप्रद पितृ-मातृ भक्ति, भ्रातृप्रेम एवं सुहृद मैत्री, पातिव्रत आदि की शिक्षा देता हुआ परम सुखदायक, परलोक में मोक्षदायक, रावणारि, भक्तवत्सल, भगवान रामचन्द्र की लीला का नाटक गुसाईं तुलसीदासजी की मानस रामायण के अनुसार खेलने की इच्छा है, जो कि शृङ्गारादि नवरस पूर्ण है ।

नटी–प्रियतम ! धन्य हैं दशरथनन्दन रघुराज श्रीरामचन्द्र का चरित्र ऐसा ही पवित्र एवं मनोहर है । निस्सन्देह इस अभिनय को आरम्भ कीजिये ।

सूत्रधार–बहुत अच्छा, आरम्भ करता हूँ, तो कौन सी ऋतु का आश्रय लेकर गाऊँ ।

नटी–स्वामिन् ! आकाश घन रहित एवं निर्मल हो गया है । चन्द्रमण्डल का प्रकाश देखकर काव्यों की उपमाओं का स्मरण हो रहा है, तारामण्डल स्वच्छ दीखता है, प्यारे ! शरद ऋतु का ही आश्रय लीजिए ।

सूत्रधार–आहा हा ! प्यारी मुझे भी, श्री रामचन्द्र का यह वाक्य याद आ गया हैं । (यथा)

वर्षा विगत शरद् ऋतु आई । सुधि न तात सीता की पाई ।

नटी–शीघ्रता कीजिए विलम्ब होता है । प्राणनाथ क्या देर है ?

सूत्रधार–(गाता है)

सीतापति रामचन्द्र श्रीपति रघुराई,
रसना रस नाम लेत सन्तन को दरश देत ।
विहसत मुख मन्द मन्द सुन्दर सुखदाई ।।
केशर को तिलक भाल मानो रवि प्रात काल ।
श्रवणन कुण्डल सुहात रतिपति छविछाई ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोतिन की गले माल ताराउडुगण विशाल ।
मानो गिरि शिखर फोरि सरवरि विहाई ।।
दशन चलत चतुर चाल नैनामृत सम विशाल ।
अरुण नयन भृकुटि भाल नासिका सुहाई ।।
सरयू के नीर तीर विहरत रघुवंश वीर ।
तुलसीदास हरण निरखि चरनन रज पाई ।।

(जाता है)

(पर्दा उठता है—स्थान हिमालय पर्वत)

"ब्रह्मादि देवगण इन्द्र सहित गौ रूप धारा पृथ्वी एवं सिद्ध महर्षियों को साथ लिए हुए बैठे तप करते हैं, और स्तुति करते हैं ।

देवगण–(एक स्वर हो गाते हैं, यमन कल्याण)

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रणतपाल भगवन्ता ।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिन्धु सुता प्रिय कन्ता ।।
पालन सुर धरणी अद्‌भुत करणी मर्म न जाने कोई ।
सो सहज कृपाला दीनदयाला करो अनुग्रह सोई ।।१।।
जय जय अविनाशी घट घट वासी व्यापक परमानन्दा ।
अविगत गोतीता चरित पुनीता मायारहित मुकुन्दा ।।
जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनि वृन्दा ।
निशि वासर ध्यावहिं हरि गुण गावहिं जयति सच्चिदानन्दा।।२।।
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा ।।
जो भव भय भंजन जन मन रंजन गंजन विपति वरूथा ।
मन वच क्रम वानी छांड़ि सयानी शरण सकल सुर यूथा ।।३।।
शारद श्रुति शेषा ऋषय अशेषा जा कहँ कोउ नहिं जाना ।
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवहु सो श्री भगवाना ।।
भव वारिधि मन्दिर सब विधि सुन्दर गुण मन्दिर सुख पुन्जा ।
मुनि सिद्धि सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ।।४।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(नेपथ्य से आकाशवाणी)

हे देवराज ! सिद्ध महर्षि तथा देवगणों ! निर्भय रहो। सूर्यवंश में महाराजा दशरथ के घर अवतार होगा, तुम सब वानर तन धर कर भूमन्डल में रहो।

(यह सुनकर देवता एक स्वर स्तुति करते हैं)

देवगण–

प्रभाती–भो दीनबन्धु दयासिन्धु जग के सृजन हारे।
माया तेरी है अपार तू है ब्रह्म निराकार।
नावें शीश बार बार ऋषि मुनि तिहारे॥
सब के घट में वास करें काहु सों न जान परें।
जो तेरो नित ध्यान धरें अन्त वाको तारे॥
जो न धरत तेरो ध्यान वो है मूढ़ नीच अज्ञान।
जग में करत विष को पान क्षुद्र बुद्धि वारे॥

(देवगण विदा होते हैं) पटाक्षेप

दूसरा दृश्य

(पर्दा उठता है) स्थान–राजसभा।

(महाराज दशरथ चिन्तित होकर दरबार में बैठे हैं मन्त्री एवं द्वारपाल उपस्थित हैं)

मन्त्री–(महाराज से) हे पृथ्वीनाथ ! आज आप चिन्तित क्यों जान पड़ते हैं क्या कारण है ?

दशरथ–(मन्त्री से) हे मन्त्री ! शास्त्र में कहा है "अपुत्रस्य गृहं शून्य" अब चौथी अवस्था आ गई हैं, सन्तान नहीं हुई, राज्य का भार किसके ऊपर छोड़ेंगे, वानप्रस्थाश्रम कैसे ग्रहण करें। यही चिन्ता व्याप्त हैं।

मन्त्री–(दशरथ से) महाराज दीर्घायु हों। आप जैसे धैर्यशाली प्रतापी नरेशों को इस प्रकार शोकाकुल होना शोभा नहीं देता। अपने कुलपूज्य त्रिकालदर्शी महर्षि वशिष्ठजी को बुलवाकर कोई यत्न कीजिये। जिस प्रकार महाराज के वृद्ध प्रपितामह महाराज दिलीप ने श्री गुरू महाराज की कृपा से अपनी अभिलाषा पूर्ण की थी उसी प्रकार भगवान् श्रीमान् की अकाँक्षा पूरी करेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशरथ–(मन्त्री से) धन्य है तुम्हारी बुद्धि को। यथायोग्य तुम्हारी सम्मति है शीघ्र ही श्री गुरूजी महाराज को बुलवाओ।

मन्त्री–(दशरथ से) जो आज्ञा (कहकर द्वारपाल से) अरे द्वारपाल ! तुम शीघ्र महात्मा वशिष्ठ मुनि के आश्रम में जाओ, और सविनय महाराज का सन्देशा कहकर गुरू महाराज को आदर सहित शीघ्र लिवा लाओ।

द्वारपाल–(मन्त्री से) जो आज्ञा (कहकर विदा होता है और वशिष्ठ जी को लिवा लाता है)

(द्वारपाल सहित वशिष्ठ जी का प्रवेश और राजा दशरथ एवं सभासदों का उठकर प्रणाम करना)

वशिष्ठ–(प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं)

श्लोक–स्वस्त्यस्तुते कुशलमस्तु चिरायरस्तु, गोवाजि हस्ति धन धान्य समृद्धिरस्तु, ऐश्बर्यमस्तु विजयोस्ति रिपुक्षयोस्तु, सन्तानवृद्धिसततं हरिभक्तिरस्तु ॥

दशरथ–(हाथ जोड़कर) हे गुरो ! आपकी कृपा से दास के घर धेनु धन धरणी सभी कुछ है–परन्तु हे प्रभो! इस राज को मेरे पश्चात् चलाने वाला कोई नहीं, कोई सन्तानोपाय बतलाइये, आप त्रिकालदर्शी महात्मा हैं। इस कुल की नाव डूबती है बचाइये।

वशिष्ठ–(दशरथ से) हे राजन ! कुछ चिन्ता न करो, अभिलाषा पूर्ण होगी। शृंगी ऋषि को बुलाकर एक पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान करो। सब आनन्द हो जायेगा।

दशरथ–(वशिष्ठ से) जो आज्ञा।

वशिष्ठ–(अपने शिष्य से) भो शिष्य! तुम शृंगी ऋषि के आश्रम में जाकर राजा का निमन्त्रण हमारा नाम लेकर कहो और अपने ही साथ महात्मा को आदर पूर्वक ले आओ।

दशरथ–(मन्त्री से) एक दूत भी महाराज के साथ भेज दो।

मन्त्री–(दशरथ से) जो आज्ञा (दूत से) हे दूत ! तुम ब्रह्मचारी जी के साथ जाओ। (दूत व शिष्य "जो आज्ञा" कहकर विदा होते हैं। शृंगी ऋषि को साथ में लाकर प्रवेश करते हैं।)

दशरथ–(सभा सहित उठकर और आसन देकर प्रणाम करते हैं)

शृंगी मुनि–(वशिष्ठ जी से मिलकर राजा को आशीर्वाद देते हैं)

जय हो कल्याण हो, लोक लोक में सम्मान हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(नेपथ्य से आकाशवाणी)

हे देवराज ! सिद्ध महर्षि तथा देवगणों ! निर्भय रहो। सूर्यवंश में महाराजा दशरथ के घर अवतार होगा, तुम सब वानर तन धर कर भूमन्डल में रहो।

(यह सुनकर देवता एक स्वर स्तुति करते हैं)

देवगण–

प्रभाती–भो दीनबन्धु दयासिन्धु जग के सृजन हारे।
माया तेरी है अपार तू है ब्रह्म निराकार।
नावें शीश बार बार ऋषि मुनि तिहारे ॥
सब के घट में वास करें काहु सों न जान परें।
जो तेरो नित ध्यान धरें अन्त वाको तारे ॥
जो न धरत तेरो ध्यान वो है मूढ़ नीच अज्ञान।
जग में करत विष को पान क्षुद्र बुद्धि वारे ॥

(देवगण विदा होते हैं) पटाक्षेप

दूसरा दृश्य

(पर्दा उठता है) स्थान–राजसभा।

(महाराज दशरथ चिन्तित होकर दरबार में बैठे हैं मन्त्री एवं द्वारपाल उपस्थित हैं)

मन्त्री–(महाराज से) हे पृथ्वीनाथ ! आज आप चिन्तित क्यों जान पड़ते हैं क्या कारण है ?

दशरथ–(मन्त्री से) हे मन्त्री ! शास्त्र में कहा है "अपुत्रस्य गृहं शून्य" अब चौथी अवस्था आ गई है, सन्तान नहीं हुई, राज्य का भार किसके ऊपर छोड़ेंगे, वानप्रस्थाश्रम कैसे ग्रहण करें। यही चिन्ता व्याप्त है।

मन्त्री–(दशरथ से) महाराज दीर्घायु हों। आप जैसे धैर्यशाली प्रतापी नरेशों को इस प्रकार शोकाकुल होना शोभा नहीं देता। अपने कुलपूज्य त्रिकालदर्शी महर्षि वशिष्ठजी को बुलवाकर कोई यत्न कीजिये। जिस प्रकार महाराज के वृद्ध प्रपितामह महाराज दिलीप ने श्री गुरू महाराज की कृपा से अपनी अभिलाषा पूर्ण की थी उसी प्रकार भगवान् श्रीमान् की अकाँक्षा पूरी करेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशरथ–(मन्त्री से) धन्य है तुम्हारी बुद्धि को। यथायोग्य तुम्हारी सम्मति है शीघ्र ही श्री गुरूजी महाराज को बुलवाओ।

मन्त्री–(दशरथ से) जो आज्ञा (कहकर द्वारपाल से) अरे द्वारपाल ! तुम शीघ्र महात्मा वशिष्ठ मुनि के आश्रम में जाओ, और सविनय महाराज का सन्देशा कहकर गुरू महाराज को आदर सहित शीघ्र लिवा लाओ।

द्वारपाल–(मन्त्री से) जो आज्ञा (कहकर विदा होता है और वशिष्ठ जी को लिवा लाता है)

(द्वारपाल सहित वशिष्ठ जी का प्रवेश और राजा दशरथ एवं सभासदों का उठकर प्रणाम करना)

वशिष्ठ–(प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं)

श्लोक–स्वस्त्यस्तुते कुशलमस्तु चिरायरस्तु, गोवाजि हस्ति धन धान्य समृद्धिरस्तु, ऐश्वर्यमस्तु विजयोस्ति रिपुक्षयोस्तु, सन्तानवृद्धिसततं हरिभक्तिरस्तु ॥

दशरथ–(हाथ जोड़कर) हे गुरो ! आपकी कृपा से दास के घर धेनु धन धरणी सभी कुछ है–परन्तु हे प्रभो! इस राज को मेरे पश्चात् चलाने वाला कोई नहीं, कोई सन्तानोपाय बतलाइये, आप त्रिकालदर्शी महात्मा हैं। इस कुल की नाव डूबती है बचाइये।

वशिष्ठ–(दशरथ से) हे राजन ! कुछ चिन्ता न करो, अभिलाषा पूर्ण होगी। शृंगी ऋषि को बुलाकर एक पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान करो। सब आनन्द हो जायेगा।

दशरथ–(वशिष्ठ से) जो आज्ञा।

वशिष्ठ–(अपने शिष्य से) भो शिष्य! तुम शृंगी ऋषि के आश्रम में जाकर राजा का निमन्त्रण हमारा नाम लेकर कहो और अपने ही साथ महात्मा को आदर पूर्वक ले आओ।

दशरथ–(मन्त्री से) एक दूत भी महाराज के साथ भेज दो।

मन्त्री–(दशरथ से) जो आज्ञा (दूत से) हे दूत ! तुम ब्रह्मचारी जी के साथ जाओ। (दूत व शिष्य "जो आज्ञा" कहकर विदा होते हैं। शृंगी ऋषि को साथ में लाकर प्रवेश करते हैं।)

दशरथ–(सभा सहित उठकर और आसन देकर प्रणाम करते हैं)

शृंगी मुनि–(वशिष्ठ जी से मिलकर राजा को आशीर्वाद देते हैं)

जय हो कल्याण हो, लोक लोक में सम्मान हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कस्तूरी तिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभम् ।
नासाग्रे गजमौक्तिकम् करतले वेणुः करे कङ्कणम् ॥
सर्वांगे हरिचन्दनेन लिपितं कण्ठे च मुक्तावली ।
गोपस्त्री परिवेष्ठितो विजयते गोपाल चूड़ामणिः ॥

दशरथ—(हस्तार्घ पादार्घ एवं आसन देकर)

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनाँ वृहस्पतिः ।
यथा त्वं मम यज्ञोस्मिन् आचार्यो भय सुव्रत ॥
भो मुने त्वं मे आचार्यो भव—

शृंगी मुनि— (दशरथ से) अहं भवामि । यज्ञ की सामग्री एकत्र करो, मण्डप में चलकर शुभ मुहूर्त में यज्ञ आरम्भ करो ।

(सब मण्डप की ओर बिदा होते हैं) [पर्दा उठता है]

तीसरा दृश्य

स्थान—यज्ञ भूमि

राजा दशरथ तीनों रानियों के सहित यज्ञशाला में बैठे हैं । और शृंगी ऋषि वशिष्ठादि महामुनियों को साथ ले यज्ञ आरम्भ करते हैं ।)

शृंगी मुनि प्रभृति ऋषिगण (एक स्वंर हो)

ओ३म् स्वस्तिनो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यादितिर-नर्वणः स्वस्तिपूषा असुरो दधातुनः ॥१॥ स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतना स्वस्तये वायुसुपाब्रवामहै सोमंस्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः वृहस्पतिः सर्व गण स्वस्तये स्वस्तये आदित्यासी भवन्तुनः । इत्यादि ।

संक्षिप्त प्रकारेण गणेशपूजा मातृपूजा पुण्याहवाचन कलशस्थापनं कुर्यात् । अथातो गृह्यस्यालीपाकांनां कर्म इत्यादि आत्मासनँ यज्ञमानासनं दक्षिणतो ब्रह्मासनं अग्नेरुत्तरतःआसनद्वयं कल्पयित्वा प्रणीतापात्रं चतुर्षुस्था-नेषु गन्ध पुष्पाक्षतादिभिः सम्पूज्य (कुशकण्डिका यथावकाश मरुतनामांन्ने इहागच्छ० । भरादि नवाहुति । भू स्वाहा इदमग्नये भुवः स्वाहाः इदं वायवे-स्वः स्वाहा इदं ॐसूर्याय-तन्नो अग्निरिति वामदेवऋषिरनुष्टप्छन्द अग्निर्वंकणौ देवता सर्वप्रायश्चित्तहोमे विनियोगः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आकृष्णेन–इमदेवां इत्यादि स्वाहा। ॐसोमाय स्वाहा। ॐभौमाय स्वाहा ॐबुधाय स्वाहा ॐबृहस्पतयेस्वाहा ॐशुक्रायस्वाहा। शनैश्चराय-स्वाहा। राहवेस्वाहा। केतवे स्वाहा। ॐत्र्यम्बकं यजामहे स्वाहा। ॐरूपं रूपं प्रतिरूपो वभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय। इन्द्रो मायाभिः पुरुरूपं ईयते युक्ता ह्यस्वः हरयः शतादश। "पूर्णाहुति होम ॐमूर्द्धनिमिति (अग्नि का चरु लेकर प्रकट होना।)

शृंगी मुनि–[राजा से] हे राजन्! तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा, यह चरु रानियों को बाँट दो।

राजा–[मुनि से] जो आज्ञा [कहकर चरु के भाग करके उठते हैं, इसके बाद चार भ्राताओं का जन्म] पटाक्षेप

–०००–

चौथा दृश्य--बाल याचना

स्थान–राजसभा

(महाराज दशरथ, रामचन्द्र, लक्ष्मण एवं वंशिष्ठ मुनि तथा अन्य सभासदों सहित विराजमान हैं) द्वारपाल का प्रवेश

द्वारपाल–[राजा से] महाराजा की जय हो, विश्वामित्र मुनि द्वार पर आये हैं, कुछ अपना प्रयोजन आवश्यक लाये हैं।

दशरथ–(उठकर) अरे महाराज को शीघ्र लाओ।

द्वारपाल–(राजा से) जो आज्ञा (जाता है और साथ में मुनि को ले आता है)

(द्वारपाल सहित मुनि का प्रवेश)

(राजा दशरथ, रामचन्द्र, लक्ष्मण सभासदों के सहित चरण छूकर प्रणाम करते है)

विश्वामित्र–जय हो, जय हो, कल्याण हो (आशीर्वाद देते हैं)

मंगल भगवान् विष्णुर्मङ्गलंगरुड़ध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः॥

आनन्द रहो, सुखी रहो।

(आसन पर बिराजते हैं)

दशरथ–(विश्वामित्र से) चौपाई

केहि कारण आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लाउब बारा।
कृपा कीन्ह मोंहि दीन्ह बड़ाई। कीन्ह पवित्र मोर गृह आई॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्वामित्र–[दशरथ से] (चौपाई तर्ज भैरवी)

असुर समूह सतावहिं मोही ❀ मैं याचन नृप आयेउँ तोही ॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा ❀ निशिचर वध मैं होव सनाथा ॥

दोहा–देहु भूप मन हर्षि सुत, तजहु मोह अज्ञान ।
धर्म सुयश नृप तुम कहँ, इन कह अति कल्यान ॥

दशरथ–(विश्वामित्र से) चौपाई

चौथेपन पायउँ सुत चारी ❀ विप्र वचन नहिं कहेहु विचारी ॥
मांगहु भूमि धेनु धन कोषा ❀ सर्वस देहुँ आज सहि रोषा ॥
देह प्राणते प्रिय कछु नाहीं ❀ सोउ मुनि देउँ निमिष इकमाहीं ॥
सब सुत मोहिं प्रिय प्राण कि नाईं ❀ राम देत नहिं बनै गुसाईं ॥
कहँ निशिचर अति घोर कठोरा ❀ कहँ सुन्दर सुत परम किशोरा ॥

विश्वामित्र–[दशरथ से] चौपाई

जो अस भीरु रहेसि तैं राजा ❀ केहिबल कहेसि करौं सब काजा ॥
देन कहा जो दीन न सोई ❀ अब तब वचन प्रतीत न होई ॥

दशरथ–(विश्वामित्र से)

ठुमरी। (तर्ज डोले डोलेरी जोवन)

विप्र वचन तुम बोले ना विचारी ॥टेक॥
माँगहु भूमि धेनु धन कोषा तुमहिं देत लाऊँ नहिं बारी ॥
जो इच्छा हो सोइ तुम माँगो, प्राणते हो यदि अधिक पियारो ॥

(पुत्रों की ओर संकेत करके)

ये सब सुत मोहु प्राण पियारे, राम विछोह मोहे दुख भारी ॥
सुनि निशिचर बन घोर कठोरा, मोरे हृदय मँह लागै कटारा ॥

वशिष्ठ–(दशरथ से)

हे राजन ! रामचन्द्र को वालक समझ कर न रोको। अवश्य ही विश्वामित्र जी की सहायता के हेतु भेज दो। ब्राह्मण का आशीर्वाद लो।

दशरथ–(विश्वामित्र से)

हे मुनिनाथ ! यद्यपि राम लक्ष्मण मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथापि आपकी आज्ञानुसार दोनों पुत्र आपकी सेवा के निमित्त भेजता हूँ इनकी रक्षा कीजिए।

(रामचन्द्र एवं लक्ष्मण से) हे पुत्र ! तुम महाराज के साथ जाकर यज्ञ की रक्षा करना और पिता के तुल्य महर्षि की सेवा करना जैसा कि हमारा क्षत्रि धर्म है।

रामचन्द्र लक्ष्मण–जो आज्ञा (कहकर राजा दशरथ तथा वशिष्ठ जी को प्रणाम करके विश्वामित्र जी के साथ विदा होते हैं)   पर्दा गिरता है।

पाचवां दृश्य

स्थान–मार्ग और वन

(विश्वामित्र मुनि की रामचन्द्र लक्ष्मण सहित यात्रा)

विश्वामित्र–(राम से) हे राघव देखो यह कैसा विकट कराल वन है। यहाँ बड़े-बड़े वनचर और निशिचर रात दिन घूमते हैं।

राम–हे मुनिश्रेष्ठ ! सत्य है इसमें क्या सन्देह ! हमको तो ऐसा वन देखने का आज ही प्रथम अवसर प्राप्त हुआ है। धन्य है! ब्रह्मा की सृष्टि को ऊँचे-ऊँचे वृक्ष दूर तक कतार बाँधे खड़े हैं। आह ! यह कोमल घास क्या ही शोभा दे रही है !

(चिल्लाते हुए ताड़का राक्षसी का प्रवेश)

विश्वामित्र–(राम से) हे रामचन्द्र ! दुष्टा ताड़का राक्षसी आ गई है। इसके प्राण हरिये।

रामचन्द्र–जो आज्ञा (धनुष वाण चढ़ाते हैं) (गर्जते हुए सुबाहु का प्रवेश)

ताड़का–(विश्वामित्र से) अरे कुबड़े ब्राह्मण तुझे खाती हूँ। आ हा हा हा ! (राम से)

चौपाई

रे नृप बालक धनुष चढ़ाये। क्यों तुम सन्मुख मेरे आये ॥
धाये जिनकी करन सहाई। ते डरपोक विप्र मुनिराई ॥

राम–(ताड़का से)   थियेटर "तर्ज-बहादुर जङ्गी"

अरी तू पापिन प्राण खोवै आपन तुझे मैं मारूँ तीर ॥
हट तू बचकर कहूँ मैं डट कर यहीं करूँ दो चीर ॥
क्यों मुनियन को दुख देवै इनको बनै फिरै बे पीर।
बान से मारूँ जान से मारूँ हम रघुवंशी वीर ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ताड़का–(राम से) रागिनी (तर्ज हमीर)

मैं तो ताड़का तड़ाक तड़ तड़ ताड़ करती हूँ।
तुम सरीखे पुरुषों का नित आहार करती हूँ ॥
आजाय मेरे सामने तो जीता न छोड़ूँ।
सौ–सौ मुंह में डाल गरम दाढ़ करती हूँ ॥

(रामचन्द्रजी का वाण मारना, ताड़का का रोते चिल्लाते प्राण त्याग और सुबाहु का भागना) —— पटाक्षेप

छठा दृश्य

स्थान–यज्ञ भूमि

(विश्वामित्र सप्तर्षियों के सहित यज्ञशाला में बैठे हैं। और रामचन्द्र लक्ष्मण धनुष चढ़ाये वीरासन में स्थित हैं)

ऋषिगण–(एक स्वर होकर) स्वस्तिवाचन।

स्वस्तिनोमिमीता मश्विनांभग: स्वस्तिदेव्यदितिरनर्वण: स्वस्तिपूषाअसुरो दधातुन: स्वस्तिन: इन्द्रोवृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा विश्ववेदा:। स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमि: स्वतिनोवृहस्पतिर्दधातु। इत्यादि स्वस्तिवाचनम् ॥ ओं भूर्भुव:स्व: कलिंगदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्णसूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि ओ३म् आकृष्णेनरजसावर्त्तमानो निवेशयन्नमृतमित्यादि सर्वेषाम् सूर्यदक्षिणपार्श्वे त्र्यम्बक इहागच्छ इहतिष्ठ पूजार्थ त्वामावा हयामि। ओं त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनात् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।

(ऋषिगण यथास्थान बैठते हैं)

(मारीच राक्षस का प्रवेश)

मारीच–(राम से) चौपाई

रे शठ बालक धनुष चढ़ाई। आवा हमसे लड़न लड़ाई ॥
देखेउँ अति सुन्दर तन तोरा। दयावन्त भा मन अति मोरा ॥

राम–(मारीच से) चौपाई

जैसे हम बालक हैं भाई। देख अभय तोहि परम लखाई ॥
अतिहि तीक्ष्ण हैं बाण हमारे। लागत प्राण न रहहिं तुम्हारे ॥

[बाण छोड़ते हुए] अरे नीच राक्षस–तुझे बिना फर के बाण से उड़ाये देता हूँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[मारीच आकाश में उड़कर सौ योजन पर गिरता है]

ऋषिगण—ओम् आदित्यायनमः ॐसोमायनमः ॐभौमायनमः ॐबुधायनमः ॐबृहस्पतयेनमः ॐशुक्रायनमः ॐशनिश्चरायनमः ॐराहवेनमः ओ३म् केतवेनमःओ३म् अधिदेवतेभ्योनमः ओ३म् प्रत्यधिदेवतेभ्योनमः। ओ३म् गणेशादि पंच लोकपालेभ्योनमः ओ३म् इन्द्रादिदशदिग्पालेभ्यो नमः ।। भूरादिनवाहुतिः ।। 'होममन्त्राः' ओ३म् सर्वभूताधिपतये स्वाहा। ओ३म् सर्वपापशमनाय स्वाहा। ओ३म् विष्णवे स्वाहा। ओ३म् चक्रपाणये स्वाहा। ओ३म् ईश्वराय स्वाहा। ओ३म् इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदं समूढ़मस्यपाँ सुरे स्वाहा।

(सुबाहु का प्रवेश)

सुबाहु—अरे दुष्टो ! तुम्हारे यज्ञ का नाश करता हूँ। तुम्हारा तप हरता हूँ। (विश्वामित्र से) अरे विसुवा बमनौटे, छोकरों के भरोसे बैठा है, धत्तेरे की हत्तेरे की।

रामचन्द्र—(सुबाहु से) रे नीच निशाचर ! क्या बकता है भाग नहीं तो यमलोक जाने का तेरा समय आ गया है।

[धनुष चलाते हैं बाण लगते ही सुबाहु का प्राण त्यागकर जमीन में गिरना]

ऋषिगण—[एक स्वर हो] धन्य हो रामचन्द्र धन्य हो दशरथ नन्दन धन्य !

[पूर्णाहुति] ॐमूर्द्धानन्दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानरंभृत। आजातमग्निम् !

कवि सम्राजमतिथि जनानामसन्ना पा जनयन्तदेवाः स्वाहा। पूर्णादर्विपरापतसु सुपूर्णापुनरापत वस्नेवविक्रीणावहा इष मूजूँ शतक्रतो स्वाहा

[यज्ञ समाप्त हुआ विश्वामित्र राम लक्ष्मण को लेकर आश्रम को जाते हैं। धीरे धीरे पर्दा गिरता है।

सातवां दृश्य

स्थान—विश्वामित्राश्रम

(रामचन्द्र लक्ष्मण एवं विश्वामित्र जी बैठे हैं—जनक के दूत का प्रवेश)

दूत—(विश्वामित्र जी को प्रणाम करते हुए पत्र देता है) महाराज मिथिलेश ने पत्र भेजा है।

विश्वामित्र—(पत्र लेकर राम को देते हैं) हे राघव ! इसमें क्या लिखा है ?

रामचन्द्र—(विश्वामित्र से) जो आज्ञा (पत्र पढ़ते हैं)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(विश्वामित्र शर्म्मणां समीपेषु)

श्रीमत्पूज्यपाद ब्राह्मणकुलभूषण महर्षिवर श्री १०८ सिद्धि श्री ६ सत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ब्रह्मर्षिवर्य ब्रह्मावतार भूदेव नरदेव पूजितेषु श्रीचरणकमलेषु जनकस्य विनयपूर्वकप्रणामसहस्रमजस्रं, विज्ञप्तिश्च । शञ्चोभयतः ।

सविनय निवेदन है कि आश्विन शुक्ला द्वितीया को मेघ लग्न शुभ मुहूर्त में मेरी पुत्री आयुष्मती जानकी के विवाहार्थ स्वयम्वर एवं धनुषयज्ञ महोत्सव होना निश्चिय हुआ है। कृपया आप भी इस उत्सव में पधार कर मेरा निमन्त्रण स्वीकार कीजिये। अनेक राजाओं महाराजाओं एवं ऋषि मुनि महात्माओं के आने की पूर्ण आशा है। शिष्य मण्डली सहित पधार कर मेरे नगर को अपने चरण कमल से पवित्र कीजिये। आशा है कि अवश्य ही श्रीमान् दर्शन देंगे। इति शुभम्।

भवदीय चरणसेवी–राजा जनक, मिथिलापुरी।

विश्वामित्र–(राम से) चौपाई

सुनहु वचन मम प्रिय रघुनाथा। चलहु जनकपुर दोउ जन साथा ॥
सीय स्वयम्बर देखिय जाई। ईश काहि धौ देहिं बढ़ाई ॥

लक्ष्मण–(मुनि से) चौपाई

अहह नाथ यश भाजन सोई। कृपा स्वामि तव जापर होई ॥
विप्र होहिं जापर अनुकूला। तापर दैव न हों प्रतिकूला ॥

(राम लक्ष्मण एवं शिष्यमण्डली को साथ लेकर विश्वामित्र जनकपुर को जाते हैं)

पर्दा उठता है।

आठवाँ दृश्य–अहिल्योद्धार

स्थान–मार्ग

शिलारूप अहिल्या पड़ी है। राम-लक्ष्मण विश्वामित्र का प्रवेश)

राम–(शिला देखकर विश्वामित्र जी से)

केहि कारण यह शिला गुसाईं। भई कहहु सब कथा बुझाई ॥
दीखै यह आश्रम तप धामा। केहि कारण भई शिला ललामा ॥

विश्वामित्र–(राम से) चौपाई

गौतमऋषि एक सुन पृथिवीशा। यह उनकी पत्नी जगदीशा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बिनापराध शाप मुनि दीन्हा । नाम अहिल्या परम प्रवीना ।।

दोहा—गौतम नारी शाप वश, उपल देह धरिधीर ।
चरण कमल रज चाहती, कृपा करहु रघुवीर ।।

(राम जी चरण से शिला को स्पर्श करते हैं, अहिल्या प्रकट होती है)

अहिल्या—(हाथ जोड़कर स्तुति करती है) (छन्द),

मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावण रिपु जन सुखदाई ।
प्रभु राजिव लोचन भव भय मोचन पाहि-पाहि शरणहि आई ।।
मुनि शाप जो दीन्हा अतिभल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।
देखेउँ भरि लोचन भव भय मोचन यही लाभ शङ्कर जाना ।।
विनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न वर माँगौं आना ।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ।।
जेहि पद सुर सरिता परम पुनीता प्रगट भई शिव शीश धरी ।
सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम शिर धरेउ कृपालु हरी ।।

(अहिल्या स्वर्ग को जाती है। रामचन्द्र, लक्ष्मण, विश्वामित्र जी आगे को बढ़े)

(ड्राप सीन)

(इति प्रथम चरित्र यज्ञ संरक्षण समाप्तम्)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वितीय दिवस

प्रथम दृश्य–जनक विश्वामित्र सम्वाद

(स्थान–जनक राजसभा)

(राजा जनक दरबारियों के सहित बैठे हैं। रामचन्द्र एवं लक्ष्मण सहित विश्वामित्र जी का सभा में प्रवेश। राजा जनक का मुनि को प्रणाम करना।)

विश्वामित्र–जय हो, कल्याण हो, सर्वत्र सम्मान हो, सभा में मान हो।

ॐस्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा विश्ववेदा: स्वस्तिन स्ताक्ष्यों अरिष्टनेमि: स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु ।। (पुष्प देते हुए)

मन्त्रार्था: सफला: सन्तु पूर्णा: सन्तु मनोरथा:।

शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ।।आयुष्मान् भव।।

राजा जनक–(विश्वामित्र से) चौपाई

कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक। मुनिकुलतिलक कि नृपकुलपालक
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। सोई कि उभय देह धरि आवा
सहज विराग रूप मन मोरा। थकित होत जिमि चन्द्र चकोरा
ताते प्रभु पूछों सत भाऊ। कहिय नाथ जनि करिय दुराऊ
इनहिं विलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्म सुखहिं मन त्यागा

भैरवी तर्ज–"सैयां को मिलन०"

मुनि जी कहहु ये बाल दोउ काके।
कौन नगर में जन्म लियो है, कहा है नाम पिता के।
रवि शशि कोटि बदन की शोभा, श्याम गौर सुन्दर तन जाके ।।
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा, सोइकि उभय देह धरि आके।
ये सूरत कबहुं नहिं देखी, कहत हूँ मैं तिहुँपुर फिर आके ।।

विश्वामित्र–(जनक से) चौपाई

हे मिथिलेश कहेउ बड़ नीका। वचन तुम्हार न होहि अलीका
ये प्रिय सबहिं जहाँ लगि प्रानी। शील सनेह न जाय बखानी
रविकुलमणि दशरथ के जाये। मम हित लागि नरेश पठाये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोहा–राम लखन दोउ बन्धुवर, रूप शील बल धाम।
मख राखेउ सब साखि जग, जीति असुर संग्राम ।। (पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य–वाटिका गमन

स्थान--पुष्प वाटिका

(एक ओर से रामचन्द्र लक्ष्मण का और दूसरी ओर से सहेलियों सहित सीता का प्रवेश)

राम–लक्ष्मण से लावनी

भ्राता यह कैसी फूल रही फुलवारी।
इस फुलवारी की रंग-बिरंगी क्यारी ।।
नव पल्लव और फल फूल मनोहर नाना।
बाग बीच यह रत्न जटित सोपाना ।।
कहूं चातक मोर चकोर नृत्य करें नाना।
यहां सेन सहित ऋतुराज पधारेउ ताना ।।
सोहत बाग तड़ाग सभी सुखकारी।
इस फुलवारी की रंग-बिरंगी क्यारी ।।

लक्ष्मण–(राम से) हे भ्राता, ये उत्तम पुष्प महर्षि विश्वामित्र जी की पूजा के लिए तोड़ लेवें (पुष्प तोड़ते हैं) अहा ! यहाँ तो कोई देवकन्या भी पुष्प तोड़ने आई है।

राम–(लक्ष्मण से) चौपाई

तात जनक तनया यह सोई। धनुषयज्ञ जेहि कारण होई ।।
पूजन गौरि सखी लै आई। करत प्रकाश फिरत फुलवाई ।।
जासु विलोक अलौकिक शोभा। सहज पुनीत मोर मन क्षोभा ।।
सो सब कारन जान विधाता। फरकहिं सुभग अंग सुन भ्राता ।।
रघुवंशिन कर सहज सुभाऊ। मन कुपन्थ पग धरहिं न काऊ ।।
मोरे मन प्रतीत जिय केरी। जिन स्वपनेहु पर नारि न हेरी ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(सीता–सहेलियों से) रागिनी (तर्ज–झुक-२ परै रे पायल भारी)

चलो सखी गौरी को पूजन जावें ।
जुही चमेली तोड़ो, चम्पा को उनमें जोड़ो ।।
कुछ खिली हजारि तोड़ो, अब हम फूलों के हार बनावें ।।
गौरी को जाय मनावें, दुर्गे माता से हम वर पावें ।।

सखी–(दूसरी सखी से) हे सखी! पूजा की थाली गंगा की झारी ले आओ ।

(सखी जाती हैं)

राम–(लक्ष्मण से) ठुमरी (तर्ज–माथे पै मुकुट श्रुति कुण्डल०)

तनक निहारो तुम जानकी की छवि भाई ।
वाटिका फिरत कोटि चन्द्र भी लजाई है ।।
गति गजराज कैसी कटि मृगराज जैसी ।
घूँघट छवि कैसी हिरिणी से नैन हैं ।।
अलि के से केश अरु कीर की सी नासिका है ।
कण्ठ कपोत कैसी बैन कोकिला से हैं ।।
चरण कमल कैसे अँगुली कुसुमि रंग ।
चम्पक वरण तन गन्ध जुहि जैन हैं ।।
चन्द्र को भी फीको करै जानकी आनन देखो ।
दन्त बाके बिम्बाफल दाड़िम बिजैन हैं ।।
कोकिला के बैन चोरे हरिणी के नैन चोरे ।
मम चित चैन चोरे छवि ये समाई है ।।

(रामचन्द्र लक्ष्मण का नैपथ्य में जाना)

सीता–(सखी से) चौपाई

सुनहु सखी वे दोउ किशोरा । कहाँ गये मोरे चित चोरा ।।
श्यामलरूप बसेउ मन माहीं । बिनु देखे मम जीवन नाहीं ।।

सखी–(सीता से) हे प्यारी ! धैर्य धरो वे किशोर अवश्य मिलेंगे ।

सखी–(सहेली से) सत्य है सखी ? मेरी बाँई आँख फड़कती है इससे चित्त सावधान होता है । पर उस किशोर राजकुमार की छवि मन में आते ही जी घबड़ाता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सखी—(सीता से) हे सीते ! अब विलम्ब होता है, माता तुम्हारी बाट देखती होंगी। चलें वह देखो पूजा की थाली भी आ गई।

(पूजा का सामान लिए हुए सखी का प्रवेश)

सीता—(सहेलियों से) चलो सखी अब सावधान चित्त हो गौरी की पूजा करें।

[मन्दिर के समीप जाकर हाथ जोड़कर स्तुति करती हैं]

चौपाई

जय जय जय गिरिराज किशोरी। जय महेश मुखचन्द्र चकोरी।
जय गजबदन षड़ानन माता। जगत जननि दामिनी द्युतिगाता।
नहिं तब आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाव वेद नहिं जाना।
भव भव विभव पराभव कारिणि। विश्व विमोहिनि स्ववश विहारिणि
सेवत तोहिं सुलभ फल चारी। वरदायिनी त्रिपुरारि पियारी।
देवि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।
मोर मनोरथ जानहु नीके। बसहु सदा उरपुर सब ही के।

दोहा—पति देवता सुतीय महँ मातु प्रथम तब रेख।
महिमा अमित न कहि सकहिं सहस शारदा शेष॥

(गौरी का प्रसन्न हो सीता को वर देना)

गौरी की प्रतिमा—(हँसती हुई) चौपाई

सुन सिय सत्य अशीष हमारी। पूजहिं मन कामना तुम्हारी।
नारद वचन सदा शुचि सांचा। सो वर मिलहिं जाहि मन रांचा॥

(छन्द)

मन जाहि रांचो मिलहिं सो वर सहज सुन्दर सांवरो।
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो॥

(सीता सहेलियों के सहित प्रसन्न होकर विदा होती है) [पटाक्षेप]

—:o:—

तृतीय दृश्य चाप भंजन

स्थान—रंगभवन

(राजा जनक सभासदों के सहित बैठे हैं। विश्वामित्र मुनि एवं राम लक्ष्मण तथा अन्य राजा महाराजाओं का यथाक्रम सभा में प्रवेश)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[सखियों के सहित सीता जी का प्रवेश]

जनक–(सुदामन से) हे मन्त्री ! देश देशान्तर के आये हुए नरेशों को सभा में बुलाओ।

सुदामन–(राजा से) जो आज्ञा [द्वारपाल से] हे द्वारपाल, सब-राजा-महाराजाओं को सभा में बुलाओ।

द्वारपाल–जो आज्ञा

[एक-एक करके सब नरेशों को सभा में लाता है और वन्दीजन राजाओं की वंशावली सुनाते हुए परिचय कराते हैं] यथाक्रम राजा लोग बैठते हैं !

राजा जनक–(बन्दियों से) हे वन्दीजनों ! हमारा प्रण सभा में सुनाओ।

बन्दीजन–जो आज्ञा। (चारो ओर घूमते हुए)

दोहा–(कवित्त)

सदा भवानी दाहिनी सिद्धि करैं गणेश।
पांच देव रक्षा क : ब्रह्मा विष्णु महेश ।।

(गद्य) जय हो–महाराज का हुक्म भरपूर रहे। दुश्मन दूर रहे।

खम्माच।

सुनहु सकल नृपगण, प्रण को चित लायके ।।
शिव जी को कठिन धनुष देखि डरैं देव दनुज।
काँपत महिपाल सकल थर थर घबराय के ।।
सोई आज सभा बीच नृप जो डारैं तोर खींच।
जनक नन्दनी सिया को जावैं घर ब्याह के ।।
विक्रम कुल विभव अचल दिखलाओ आज सकल।
पाओ यश अमित अटल, चाप को चढ़ाय के ।।

दूसरा बन्दी–

दोहा–धर्म नीति कर वचन यह, सुनहु सकल महिपाल।
प्रण विदेह कर कहहिं हम, भुजा उठाय विशाल ।।

चौपाई

नृप भुजबल विधु शिव धनु राहू। गरुअ कठोर बिदित सब काहू।
रावण बाण महा भट भारे। देखि शरासन गवहिं सिधारे।
सोइ पुरारि को दण्ड कठोरा। राज समाज आजु जिहि तोरा।
त्रिभुवन जय समेत बैदेही। बिनहि विचारि बरै नृप तेही।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(एक-एक करके राजा धनुष तोड़ने को उठते हैं, न उठने पर लज्जित हो बैठ जाते हैं)

एक राजा–(अन्य राजाओं से) हे नरेशों ! धनुष तोड़ने की आशा छोड़ घर को मुँह मोड़ो।

दूसरा राजा–(निराश होकर) चौपाई

बिनु भंजेउ यह धनुष विशाला। मेलहिं सिया राम उर माला।
अस विचारि गमनहु घर भाई। जय प्रताप बल तेज गवाई।

तीसरा राजा–(हँसकर) चौपाई

तोड़े धनुष ब्याह अवगाहा। विनु भंजेउ को कुंवरि विवाहा।
एक बार कालहु किन होई। सिय हित समर करब हम सोई।

चौथा–एक बार सब मिलकर धनुष को उठावें।

(दस हजार नरेश एक साथ धनुष तोड़ने का उद्योग करते हैं परन्तु धनुष उनसे जरा भी नहीं उठता)

राजा जनक–(विस्मित एवं निराश दुखी हो) चौपाई

द्वीप द्वीप के भूपति नाना। आए सुनि हम जो प्रण ठाना।
देव दनुज धरि मनुज शरीरा। वितुल वीर आए रणधीरा।।
दोहा–कुंवरि मनोहरि विजय बड़ि, कीरति अति कमनीय।
पावन हार विरंचि जनु, रचेउ न धनु दमनीय।।

(शोक में व्याकुल होकर)

राग पीलू

वीर विहिन मही भइ सारी, जो नहिं चाप चढ्यो त्रिपुरारी।
देव दनुज और भूपति नाना, विपुल वीर आए बलधारी।।
एकहि बार सहस दस लागे, तिलभर भूमि ना सके कोउ टारी।
अब नहिं कोउ जगवीर कहावै हार गये तुम योद्धा भारी।।
तजहु आस सब निज गृह जाहू, सीता कुंवरि रहैगी कुवारी।।

(गद्य–हाय-हाय आज त्रेतायुग ही में निर्वीजा पृथ्वी हो गई है। हे वसुधे! आज क्षत्रिय वीरों से तू हीन हो गई ! कहाँ हैं वे राजा सागर इत्यादि जिन्होंने रथ के चक्र से समुद्र बनाये ? क्या आज सूर्यवंश और चन्द्रवंश में वीर्य्य नहीं रहा ? इतने क्षत्रियों की भरी सभा में किसी राजपुत्र से धनुष न टूटा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौपाई

कहहु काहु यह लाभ न भावा । काहु न शङ्कर चाप चढ़ावा ॥
रहा चढ़ाउब तोरब भाई । तिल भर भूमि न सकेउ छुड़ाई ॥
अब जनि कोउ भाषे भटमानी । वीर विहीन मही हम जानी ॥
तजहु आस निज-निज गृह जाहू । लिखा न विधि वैदेहि विवाहू ॥
सुकृत जाय जो प्रण परिहरऊँ । कुँवरि कुँवारि रहै का करऊँ ॥
जौ जनतेउँ बिनु भट महि भाई । तो प्रण करि करितेउँ न हँसाई ॥

लक्ष्मण--(कुपित होकर–राम से) चौपाई

रघुवंशिन महँ जहँ कोउ होई । तेहि समाज अस कहै न कोई ॥
कही जनक अस अनुचित बानी । विद्यमान रघुकुलमणि जानी ॥
सुनहु भानुकुल पंकज भानू । कहौं स्वभाव न कछु अभिमानू ॥
जो राउर अनुशासन पाऊँ । कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊँ ॥

[राग–विहाग]

भ्राता कहूं मैं शीश नवा के ।
जो आज्ञा प्रभु देवें मुझको, करूँ मैं कौतुक जाके ॥
काचे घट सम डारो फोरी, तब आयसु प्रभु पाके ॥
जो न करूँ यह कार्य सभा में, सुनो सकल चित लाके ॥
पुनि न धरूँ धनु हाथ कभी मैं, कहूं शपथ यह खाके ॥
कमल नाल इव चाप चढ़ाऊँ, शत योजन लैं धाके ॥

राम–(लक्ष्मण से) हे वत्स ! धैर्य धरो, तुम्हारा उत्साह प्रशंसनीय है ।
(विश्वामित्र से) रागिनी

आयसु दीजे कृपा निधाना, देखुँ ये शंकर चाप पुराना ।
सब देखें कौतुक नर और नारी, तोरूँ धनुष नहिं लाऊँ मैं बारी ।
सभा मांझ प्रण रोपूं पुकारी, खण्ड खण्ड करि महिं में डारी ।
आयसु होय विनय अस करऊँ, भंजि चाप नृप संशय हरऊँ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्वामित्र–(राम से) चौपाई

उठहु राम भंजहु भव चापू । मेटहु तात जनक परितापू ॥
राम तुमहिं नृप बालक जानी । दुखित होइ बोलेउ कटु बानी ॥

सीता की माता–(आश्चर्ययुक्त हो सखी से) चौपाई

सखि सब कौतुक देखन हारे । जेऊ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहहिं नृप पाहीं । ये बालक अस हठ भल नाहीं ॥
रावण बाण छुआ नहिं चापा । हारे सकल भूप करि दापा ॥
सो धनु राजकुँवरि कर देहीं । बाल मराल कि मन्दर लेहीं ॥
भूप सयानप सकल बिसारी । अनरथ होत सभा महँ भारी ॥

राग बिहाग (तर्ज–नाथ कैसे गज को फन्द छुड़ायो)

सभा में हो रहा अनरथ भारी, कोउ करत विचार न प्यारी ॥
अति कोमल सुन्दर यह बालक, दिव्य रूप बलिहारी ।
तेहि को देत धनुष जेहि धनु से हारे नृप बलकारी ॥
विश्वामित्र मुनी ने आज्ञा दीनी बिना विचारी ।
इस धनु को तो वही उठावै जो सम हो त्रिपुरारी ॥

सखी–(रानी से) चौपाई

परिहरि सोच सुनहु मम बानी । तेजवन्त लघु गनिय न रानी ॥
कहँ कुम्भज कहँ सिन्धु अपारा । शोषेऊ सुयश सकल संसारा ॥
रवि मण्डल देखत लघु लागा । उदय तासु त्रिभुवन तम भागा ॥
काम कुसुम धनु सायक लीन्हे । सकल भुवन अपने बस कीन्हे ॥
देवि तजिय संशय अस जानी । भंजब धनुष राम सुन रानी ॥

दोहा–मन्त्र परम लघु जासु बस, बिधि हरि हर सुर सर्व ।
महामत्त गजराज कहँ, बस कर अंकुस खर्व ॥

विश्वामित्र–(राम से) हे रामचन्द्र ! अब शुभ मुहूर्त आ गया है शीघ्र धनुष तोड़कर राजा जनक का परिताप, सीता का शोक और रानियों का दुख दूर कीजिये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रामचन्द्र–(विश्वामित्र से) जो आज्ञा [कहकर धनुष के निकट जाते हैं]

सीता–(प्रेम में विकल एवं चकित होकर सहेली से) राग पीलू

सुन्दर वदन विलोकत हारी तुमहुँ विचार करो मेरि प्यारी।
हमरे मन में सोच यही है हमरे पिताजी को है प्रण भारी॥
कठिन धनुष शिव शङ्कर जी को कोमल गात उमर है बारी।
चाप चढ़ै न चढ़ै मोरि आली मैं अपने मन यही विचारी॥
विश्व के ईश रघुवर को ब्याहूं नाहि जनकपुर रहुँगी कुंवारी।
तुमहुँ सकल मिलि गौरी मनाओ तुरत हरो यह पीर हमारी॥
जेहि को जेहि पर सत्य सनेहू सो तेहि मिलहि कहैं सब प्यारी।
करहु कृपा गणनायक स्वामी जो पूजे यह आश हमारी॥

(गद्य) हे सखी! ये किशोर न मिले तो अवश्य प्राणघात करूँगी अथवा घर पर कुंवारी रहकर पूर्ण योग धरूँगी।

लक्ष्मण–(एक चरण से भूमि को जोर से दबा) चौपाई

दिशि कुँजरहु कमठ अहिकोला। रहहु धीरधरि धरणि न डोला॥
राम चहहिं शंकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा॥

(गद्य) हे वीरो सावधान रहो, श्री रामचन्द्र जी भूत भावन भगवान् शङ्कर के धनुष को तोड़ते हैं।

(रामचन्द्र धनुष तोड़कर भूमि में डालते हैं। ऋषि लोग जय-जयकार और देवता पुष्प-वर्षा करते हैं - वेदध्वनि एवं शंखध्वनि होती है)

(सीता का राम के गले में पुष्पमाला डालना)

वन्दीगण–(नाचते हुए जाते हैं)

चलो आवो शुभ घड़ियाँ मनावें रे।
घर घर मगन ऋतु छाय रही है॥
ऐसी खुशी में मनावें रंग रसियाँ मनाबें रे॥

(नेपथ्य में गाना)

गाओ गाओ मगन मन सब जन रे।
चंग मृदंग बजाओ ठन ठननन रे॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बारी आला तू है ताला लेने वाला देने वाला ।
तेरा सारा खेल निराला तू ही है दुख भंजन रे ।।

(परशुराम का प्रवेश–सब नरेशों का पिता सहित अपने २ नाम लेकर प्रणाम करना तदनन्तर राजा जनक का सीता सहित प्रणाम करना)

परशुराम–(सीता से)

हे पुत्री ! दीर्घायु हो, सौभाग्यवती हो, चक्रवर्ती राजा को प्राप्त हो ।

विश्वामित्र–(परशुराम जी परस्पर नमस्कार करते हैं और रामचन्द्र लक्ष्मण जी दोनों भ्राता प्रणाम करते हैं) हे मुनिवर ! यह राजा दशरथ के पुत्र हैं ।

परशुराम–(लक्ष्मण से) आयुष्मान् भव, स्वस्वि हो, कल्याण रो ।

(चारों ओर देखकर राजा जनक से) हे राजा जनक ! तेरे यहाँ इतनी भीड़-भाड़ होने का क्या कारण है ?

जनक–(हाथ जोड़ सिर झुका, परशुराम से) महाराजा पुत्री सीता के विवाह हेतु स्वयम्वर रचा है ! इस कारण आज राजा-महाराजा पधारे हुए हैं।

परशुराम–(धनुष टूटा हुआ देखकर सक्रोध उच्च स्वर से) चौपाई

शम्भु शरासन अति प्रिय मोरा । कहु जड़ जनक धनुष केहि तोरा ।
वेग दिखाउ मूढ़ नतु आजू । उलटों महि जहँ लगि तव राजू ।।

(जनक भयभीत होकर उत्तर नहीं देते)

रामचन्द्र–(परशुराम से) चौपाई

नाथ शम्भु धनु भंजन हारा । होईहि कोउ एक दास तुम्हारा ।।
आयसु कहा कहिय किनमोही । अंगीकार करौं मैं सोई ।।

परशुराम–(राम से) चौपाई

सुनहु राम जेहि शिवधनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ।
सो बिलगाइ बिहाइ समाजा । न तु मारे जैहैं सब राजा ।।

लक्ष्मण–(परशुराम से) चौपाई

बहु धनुहीं तोरेउ लरिकाई । कबहुँ न अस रिस कीन गुसाईं ।।
इहि धनु पर ममता केहि हेतू । कहिय कृपा करि भृगुकुल केतू ।

परशुराम–(लक्ष्मण से) भजन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रे क्षत्री काहे बोलें न सम्भारी ।
यही परशु मैं काटि गिराये, बड़े-बड़े बलधारी ।
क्षत्रियहीन मही सब कीनी तोहे न हतौं शठ बाल विचारी ।।
बार-बार मोरे सन्मुख आवै तू है निपट अनारी ।
हट रे बालक मेरे आगें से, नहिं तो आई शठ मृत्यु तिहारी ।।
मातु पिता के होके भरोसे, बना फिरै धनुधारी ।
उनका गर्व क्या मोहै दिखलावे, क्षण महँ डारूं शठ तोहे मैं मारी ।।

[विश्वामित्र की ओर देखते हुए]

कौशिक तुम समझाओ इनको, कह के कीर्ति हमारी ।
अब ना प्राण बचैं काहू के, पल में हतौं मैं यह सभा सारी ।।

लक्ष्मण—(परशुराम से) भजन

काहे रिस होत पिनाक पुराना ।।
ऐसे धनुष बहुत हम तोरे कबहुँ क्रोध न कीना ।
या में ममता है केहि कारण, जो देखत भृगुनाथ रिसाना ।।
बार-बार मोहि परशु दिखाकर, क्यों करते अभिमाना ।
जो कायर तुम्हें मिले मुनिजी, उन्हीं को तुम जा धमकाना ।।

परशुराम—(लक्ष्मण से)

दोहा—रे नृप बालक काल बस, बोलत तुहि न सम्भार ।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु, विदित सकल संसार ।।

लक्ष्मण—(परशुराम से) चौपाई

सुनहु नाथ सब हमरे ज्ञाना । धनुष धनुष सब एक समाना ।।
का क्षति लाभ जीर्ण धनु तोरे । देखा राम नये के भोरे ।।
छुअत टूट रघुपतिहिं न दोषू । मुनि बिनु काज करिये कत रोषू ।।

परशुराम—(लक्ष्मण से) रे रे नीच क्षत्रियाधम, आत्मश्लाघा करने वाले तेरा शीश अवश्य मेरे परशु से कटेगा । चुप रह ।

लक्ष्मण—(परशुराम से) थियेटर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वामी जी स्वामी किस नादान को बहकाने आये ।
आँखें निकाले आये, काँधे कुठारा लाये ॥
कीजें महाराज, जो तुम्हारे मन में ऐसा भावे ।
स्वामी जी मैंने तुमको बड़ा ही गुमान देखा ॥
ना काहूँ को तुमने अपने से बलवान देखा ।
फिरते हो मतवारे न्यारे, माता को दे अपनी मारे ॥
क्या जल्लादी क्या बरबादी नाहक खून मचाने आये ।

परशुराम--(लक्ष्मण से) अरे ब्रह्मद्रोही नीच ! मुझे नहीं जानता ?

चौपाई

बालक जानि बधौउ नहिं तोही । केवल मुनि जड़ जानेसि मोही ॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही । विश्वविदित क्षत्रिय कुल द्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीनी । विपुल बार महि देवन दीनी ॥
सहसबाहु भुज छेदन हारा । परशु विलोक महीप कुमारा ॥

दोहा--मातु पितहि जनि सोच बस, करसि महीप किशोर ।
गर्भिन के अर्भक दलन, परशु मोर अति घोर ॥

लक्ष्मण--(नम्र हो) हे मुनिनाथ ! क्षमा कीजिये, ब्राह्मण देवता आप तो हमारे वैसे भी पूज्य हैं ।

परशुराम--(चिढ़कर) चौपाई

निपटहिं द्विज करि जानेसि मोही ! मैं जस विप्र सुनाओं तोही ॥
चाप स्रुवा शर आहुति जानूँ । कोप मोर अति घोर कृशानूँ ॥
समिध सेन चतुरंग सुहाई । महा महीप भये पशु आई ॥
मैं इहि परशु काटि बलि दीन्हा । समर यज्ञ जग कोटिन कीन्हा ॥

लक्ष्मण--अच्छा ! तब तो आपने बहुत काम किया अब क्या इच्छा है ?

परशुराम--(फरसा तान हाथ उठा लक्ष्मण की ओर झपटते हैं) अरे मूढ़ !

सभासद्गण--हा ! हा ! हा ! बालक है, बालक है मुनिनाथ क्षमा करो ।

लक्ष्मण--(परशुराम से) चौपाई

पुनि पुनि मोहि दिखाव कुठारा । चहत उड़ावन फूंकि पहारा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इहां कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं । जो तर्जनि देखत मरि जाहीं ॥
देखि कुठार शरासन बाना । मैं कुछ कहा सहित अभिमाना ॥
भृगुकुल समुझि जनेउ विलोकी । जो कछु कहेहु सहों रिस रोकी ॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई । हमरे कुल इन पर न सुराई ॥
बधै पाप अपकीरति हारे । मारत हूं पां परिय तुम्हारे ॥
कोटि कुलिश सम वचन तुम्हारा । वृथा धरहु धनु बाण कुठारा ॥

दोहा–जो विलोकि अनुचित कहेउ सुनिय महा मुनि धीर ॥
निज तनु कोपि कुठार हनि वृथा सहहु दुख पीर ॥

परशुराम–(लक्ष्मण से) थियेट्रिकल तर्ज

बालक छोटा बड़ा है खोटा ढोटा है नादान ।
बार-बार समुझाया तुझको कहना मेरा मान ॥
उत्तर देत बिनु मारे न छोड़ूँ निश्चय लीजे जान ।
सब मुनियन सम जाने मुझको करै मेरा अपमान ॥
हौं ब्रह्मचारी परशाधारी किये सब नृप हैरान ।
विपुल बार पृथ्वी देवन को दीनी करके दान ॥

(विश्वामित्र से) चौपाई

कौशिक सुनहु मन्द यह बालक । कुटिलकाल बस निजकुल घालक ॥
भानु वंश राकेश कलंकू । निपट निरंकुश अबुध अशंकू ॥
काल कवल होइहि क्षण माहीं । कहौं पुकारि खोरी मोहिं नाहीं ॥
तुम हटकहु जो चहहु उबारा । कहि प्रताप बल रोष हमारा ॥

(विश्वामित्र)

हे भृगुनाथ क्षमिय अपराधू । बाल दोष गुण गणिय न साधू ॥

लक्ष्मण–(परशुराम से)

जानि परा मुनि सुयश तुम्हारा । तुमहिं अछत को बरणे पारा ॥
अपने मुख तुम आपनि करणी । बार अनेक भाँति बहु बरणी ॥
नहिं संतोष तौ पुनि कछु कहहू । जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू ॥
बीर बृत्ति तुम धीर अक्षोभा । गारि देत नहिं पावहु शोभा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोहा—शूर समर करणी करहिं कहि न जनावहिं आपु ।
विद्यमान रण पाय रिपु, कायर करहिं प्रलापू ।।

परशुराम—(आप ही आप) चौपाई

अब जनि दोष देहु मोहि लोगू । कटुवादी बालक बध योगू ।।
बाल विलोकी बहुत मैं बाँचा । अब यह मरणभार भा साँचा ।।
कर कुठार मैं अकरण कोही । आगे अपराधी गुरुद्रोही ।।
उत्तर देत छाड़ों बिनु मारे ।
[विश्वामित्र जी की ओर देख]
केवल कौशिक शील तुम्हारे ।।
नतु इहि काटि कुठार कठोरे । गुरुहिं उऋण होतेउँ श्रम थोरे ।।

लक्ष्मण—

अहो मुनीश्वर शील तुम्हारा । कोउ नहिं जान विदित संसारा ।।
मातहि पितहिं उऋण भये नीके । गुरु ऋण रहा सोच बड़ जीके ।।
भृगुवर परशु दिखावहु मोही । विप्र विचार बचौं नृप द्रोही ।।

रामचन्द्र—(परशुराम जी को अधिक क्रोधित देख)
चौपाई

नाथ करिय बालक पर छोहू । शुद्ध दूध मुख करिय न कोहू ।।
जो पै प्रभु प्रभाव कछु जाना । तौकि बराबर करहि अयाना ।।
जो लरिका कछु अनुचित करहीं । गुरु पितु मात मोंद मन भरहीं ।।
करिय कृपा शिशु सेवक जानी । तुम सम धीर शील मुनि ज्ञानी ।।

परशुराम—(लक्ष्मण को हँसते हुए देखकर) चौपाई

अबहुँ देख कस हँसत अलापी । राम तोर भ्राता बड़ पापी ।।
गौर शरीर श्याम मन माहीं । काल कूट मुख पथ मुख नाहीं ।।

लक्ष्मण—(परशुराम से) चौपाई

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया । परिहरि कोप करिय अब दाया ।।
टूट चाप नहिं जुड़हि रिसाने । बैठिय होइहिं पाँव पिराने ।।
जो अति प्रिय तौ करिय उपाई । जोड़िय कोउ बड़ गुणी बुलाई ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परशुराम--(जनक से) चौपाई

देख जनक हठि बालक येहू । कीन्ह चहत जड़ यमपुर गेहू ।।

मन मलीन तन सुन्दर कैसे । विष रस भरा कनक घट जैसे ।।

जनक--लक्ष्मण से) हे लक्ष्मण ! ऐसी अनुचित बात न कहो ! चुप रहो ।

राम--(परशुराम से) चौपाई

सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना । बालक बचन करिय नहिं काना ।।

बर्रे बालक एक स्वभाऊ । इनहिं न सन्त विदूषहिं काहू ।।

तिन नाहिं कछु काज बिगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ।।

कृपा कोप बध बन्ध गुसाईं । मोकहँ करिय दास की नाईं ।।

कहिय बेगि जेहिं विधि रिस जाई । मुनि नायक सोइ करिय उपाई ।।

परशुराम--(लक्ष्मण की टेढ़ी निगाह देख) चौपाई

कहु तैं राम जाय रिस कैसे । अजहु बन्धुं तव चितव अनैसे ।।

इहि के कण्ठ कुठार न दीना । तो मैं कहा कोप करि कीन्हा ।।

दोहा--गर्भ बहि अवनिप रमणि, सुनि कुठार गति घोर ।
परशु अक्षत देखों जियत, बैरी भूप किशोर ।।

बहै न हाथ दहै रिस छाती । भा कुठार कुण्ठित नृपघाती ।।

भयेउ बाम विधि फिरेउ सुभाऊ । मोरे हृदय कृपा अस काउ ।।

आज दैव दुख दुसह सहावा । बहुरिस करि हम कहा बनावा ।।

लक्ष्मण--

बाउ कृपा मूरति अनुकूला । बोलत वचन झरत जनु फूला ।।

जोपै कृपा जरहिं मुनिगाता । क्रोध भये तनु राख बिधाता ।

परशुराम--(कुठार उठाकर राम से) चौपाई

बन्धु कहैं कटु सम्मत तोरे । तू छल विनय करसि कर जोरे ।।

कर परितोष मोर संग्रामा । नाहितु छाँड़ कहाउब रामा ।।

छलु तजि समर करहु शिवद्रोही । बन्धु सहित नतु मारौं तोही ।।

दोहा--हृदय कपट मुख मृदु वचन, मेटि चहसि मम क्रोध ।
शम्भु शरासन तोरि शठ, करसि हमारि प्रबोध ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम-(हाथ जोड़कर परशुराम से)

रागिनी-तर्ज ख्याल

क्यो करते हो क्रोध मुनी जी, क्या है दोष हमारा।
जनक राज ने सभा मध्य में, जोर से यही पुकारा ॥
सब राजे उपहास योग हैं, धनुष न किसी ने उबारा।
तब हमको गुरु आयसु दीन्हीं, कहा ये काम तुम्हारा ॥
छूवत ही गया टूट शरासन, बीत गया था सब सारा।

"कुठार के आगे सिर कर" चौपाई

अजहु न तब रिस जाय मुनीशा। है कुठार आगे यह शीशा ॥
जेहि रिस जाय करिय सोइ स्वामी। मोहिं जानि आपन अनुगामी ॥

दोहा-प्रभु सेवकहिं समर कस, तजहु विप्रवर रोष।
भेष विलोकि कहेसि कछु, बालक हूँ नहिं दोष ॥

चौपाई-(तर्ज सहाना)

देखि कुठार बाण धनुधारी। भइ लरिकहिं रिस वीर विचारी।
नाम जान पै तुमहिं न चीन्हा। वंश स्वभाव उतर तेहि दीन्हा ॥
जो तुम अवतेउ मुनिकी नाईं। तौ पदरज शिशु धरत गुसाईं ॥
क्षमहु चूक अनजानत केरी। चहिय विप्र उर कृपा घनेरी ॥
हमहिं तुमहिं सरिवरि कस नाथा। कहु तो कहां चरण कहँ माथा ॥
राम मात्र लघु नाम हमारा। परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा ॥
देव एक गुण धनुष हमारे। नवगुण परम पुनीत तुम्हारे ॥
सब प्रकार हम तुम सन हारे। क्षमहु बिप्र अपराध हमारे ॥

परशुराम-(राम से)

दोहा-बार बार मुनि विप्रवर, मोहिं कहसि शठ राम।
तोरेहु गुण मोहि लखि परेउ, तुहूँ बन्धुसम बाम ॥

(गद्य) रे रे कटु प्रलापी क्षत्रिय! बार-बार मुझे ब्राह्मण कहता है। क्या तू मुझे नहीं जानता कैसा ब्राह्मण हूँ? सहस्रबाहु की सहस्र भुज छेदने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाला और इक्कीस बार क्षत्रियों का संहार करने वाला ब्राह्मण हूँ। अरे क्षत्रिय कुमार ! चाप तोड़कर तुझे अभिमान हुआ है मानो जगत को जीतकर खड़ा हुआ है। यदि कुछ शक्ति रखता हैं तो विश्वामित्र मुनि की आड़ छोड़कर मैदान में आजा।

राम–(परशुराम से) चौपाई (तर्ज बैसवारा)

देव दनुज भूपति भट नाना। सम-बल अधिक न कोउ बलवाना ॥
जो रण हमहिं प्रचारै कोउ। लरहिं सुखेन काल किन होऊ ॥
क्षत्रिय तनुधरि समर सकाना। कुलकलंक तेहि पामर जाना ॥
कहहुँ स्वभाव न कुलहिं प्रशंसी। कालहु डरहिं न रण रघुवंशी ॥
विप्र वंश की अस प्रभुताई। सभय होय जो तुमहि डराई ॥

परशुराम–[कोप रहित एवं क्षीणबल होकर राम से]

राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहू चाप मिटै सन्देहू ॥

[धनुष आप ही आप चढ़ जाता है]

राम–(परशुराम से) हे मुनिनाथ ! धनुष का चढ़ना वृथा न होगा या तो स्वर्ग की आशा छोड़िये अथवा पृथ्वी का वास छोड़िये।

परशुराम–(हाथ जोड़कर भगवान रामचन्द्र की स्तुति करते हैं)

चौपाई (तर्ज बैसवारा)

जय रघुवंश वनज वन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृशानू
जय सुरधेनु विप्र हितकारी। जय मद मोह कोह भ्रमहारी
विनय शील करुणागुण सागर। जयति वचन रचना अति नागर
सेवक सुखद सुभग सब अङ्गा। जय शरीर छवि कोटि अनङ्गा
करौं कहा मुख एक प्रशंसा। जय महेश मन मानस हँसा
अनुचित बहुत कहेहु अज्ञाता। क्षमहु क्षमा मन्दिर दोउ भ्राता
जयजय जयजय रघुकुल केतू। मैं अब जाउँ बनहिं तप हेतु

(रामचन्द्र पवन वाण आकाश को छोड़ते हैं परशुराम वन को विदा होते हैं)

जनक–(मन्त्री से) हे सुदामन ! एक दूत भेजकर राजा दशरथ जी के पास पत्र द्वारा सन्देशा भेजो। (पटाक्षेप)

इति द्वितीय चरित्र चाप-भंजन समाप्तम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ तृतीय दिवस

प्रथम दृश्य

स्थान—दशरथ राजभवन

[राजा दशरथ, वशिष्ठ, सुमन्त, भरतादि के सहित बैठे हैं]

द्वारपाल—(दशरथ से) महाराज की जय हो, मिथिलापुरी से राजा जनक का दूत आया है।

दशरथ—(द्वारपाल से) हे द्वारपाल ! दूत को शीघ्र ही दरबार में ले आओ।

[द्वारपाल सहित दूत का प्रवेश]

दूत—महाराज की जय-जयकार हो—राजा जनक ने यह पत्र दिया हैं।

दशरथ—(पत्र पढ़कर) चौपाई

भैया कुशल कहो दोउ बारे तुम नीके निज नयन निहारे।
श्यामल गौर धरे धनु हाथा वय किशोर कौशिक मुनि साथा
जा दिनते मुनि गयेउ लिवाई तबते आज साँच सुधि पाई
कहहु विदेह कवन विधि जाने बालक दोउ केहि विधि पहिचाने

दूत—(दशरथ से)

पूछन योग न तनय तुम्हारे पुरुष सिंह तिहुँपुर उजियारे
जेहि कौतुक शिवशैल उठावा सो तेहिं सभा पराभव पावा
दोहा—तहाँ राम रघुवंश मणि, सुनहु महामहिपाल।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु, जिमि गज पंकज नाल
सुनहु महीपति मुकुटमणि, तुम सम धन्य न कोउ।
राम लखन जिनके तनय, विश्व विभूषण दोउ।

[राजा दशरथ दूत को पत्रोत्तर देकर विदा करते हैं और बारात सजाते हुए जनकपुर को अयोध्यावासियों सहित प्रस्थान करते हैं]

(पर्दा धीरे २ उठता हैं)

द्वितीय दृश्य-राम विवाह

स्थान-मण्डप

[राजा जनक शतानन्द इत्यादि कन्यापक्षी पुष्प चन्दनादि पूजा की सामग्री

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शंख घट लेकर–(सीता एवं सहेलियों के तथा रानी सहित बैठे हैं)
(राजा दशरथ का बारात लेकर प्रवेश–प्रथम विश्वामित्र जी से राम लक्ष्मण के सहित मिलना तदनन्तर शिष्टाचार यथायोग्य प्रणामादि होकर)

मंगलाचरण

शतानन्द– आशीर्वाद श्लोक

जेतुं यस्त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजाद् बलिबध्नता ।
सृष्टं वारिभवोद्भवेन भुवनं शेषेण धर्तुं धराम् ॥
पार्वत्या महिषासुरप्रमथने सिद्धादिभिर्मुक्तये ।
ध्यातः पञ्चशरेण विश्वविजये नागाननः पातु वः ॥

शाखोच्चारः

किं गोत्रस्य किं प्रवरस्य किं शाखिनः किं वेदाध्यायिनः किं वर्मण प्रपौत्राय । किं गोत्रस्य किं प्रवरस्यः किं शाखिनः किं वेदाध्यायिनः किं वर्मणः पौत्राय । किं गोत्रस्य किं प्रवरस्य किं शाखिनः किं वेदाध्यायिनः किं वर्मणः पुत्राय आयुष्मते कन्यार्थिने विष्णु स्वरूपिणे किं नाम्ने वराय ॥

वशिष्ठ— आशीर्वाद श्लोक

कौपीनं परिधाय पन्नगपते गौरीपते श्रीपते ।
रम्यर्णे समुपागते कमलया सार्द्धं स्थितस्यासने ॥
आयाते गरुडेऽथ पन्नगपतौ त्रासाद् बहिर्निर्गते ।
शम्भुं वीक्ष्य दिगम्बरं जलभुवः स्मेरं स्मितं पातु वः ॥

काश्यपगोत्रस्य काश्यप वत्सारनैध्रु वेति त्रिप्रवरस्य माध्यन्दिनीय शाखिनः यजुर्वेदाध्यायिनः श्री युत राजा नाभागवर्मणः प्रपौत्राय । काश्यप गोत्रस्य काश्यपवत्सार नैध्रु वेति त्रिप्रवरस्य माध्यन्दिनीयशाखिनः यजुर्वेदाध्यायिनः श्रीमद्राजाअजवर्म्मणः पौत्राय । काश्यपगोत्रस्य काश्यप वत्सारनैध्रु वेति त्रिप्रवरस्य माध्यन्दिनीय शाखिनः यजुर्वेदाध्यायिनः श्रीमद्राजादशरथवर्म्मणः पुत्राय श्रीमते रामचन्द्र नाम्ने विष्णु स्वरूपिणे कन्यार्थिने वराय ।

किं गोत्रस्य किं प्रवरस्य किं शाखिनः किं वेदाध्यायिनः किं वर्म्मणः प्रपौत्रीम् । किं गोत्रस्य किं प्रवरस्य किं शाखिनः किं वेदाध्यायिनः किं वर्म्मणः पौत्रीम् । किं गोत्रस्य किं प्रवरस्य किं शाखिनः वेदाध्यायिनः किं वर्म्मणः पुत्रीम् आयुष्मतीम् श्रीस्वरूपिणम् वरार्थिनीं किं नाम्नीं कन्याम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शतानन्द— अशीर्बाद श्लोक:

च्युतामिन्दोर्लेखां रतिकलह भग्नं च वलयं ॥
दूयं चक्रकृत्य प्रहसितमुखी शैलतनया ॥
अवोचद्यं पश्येत्यवतु स शिवः सा च गिरिजा ।
स च क्रीडाचन्द्रो दशनकिरणा पूरित तनुः ॥

शाखोच्चार:

आत्रेयगोत्रस्य आत्रेयशातातपसाँख्येति त्रिप्रवरस्य माध्यन्दिनीयशाखिनः यजुर्वेदाध्यायिनः श्रीमद्राजानिमिवर्म्मणः प्रपौत्रीम् आत्रेय गोत्रस्य आत्रेय शातातप साँख्येति त्रिप्रवरस्य माध्यन्दिनीयशाखिनः यजुर्वेदाध्यायिनः श्रीमद्राजामिथिलेष वर्म्मणः पौत्रीम् । आत्रे गोत्रस्य आत्रेयशातातपसांख्येति त्रिप्रवरस्य माध्यन्दिनीय शाखिनः यजुर्वेदाध्यायिनः श्रीमद्राजाजनक वर्म्मणः पुत्रीं आयुष्मती वरार्थिनीं सीता नाम्नीं कन्याम् ।

महासंकल्प:

ॐ विष्णः ३ ॐ नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय ओ३म् तत्सत् श्रीहंसस्य सच्चिदानन्दरूपिणो ब्रह्मणोऽनिर्वाच्यमाया। शक्तिविजृम्भिताविद्यायोगात्कालकर्म्म स्वभावाविर्भू तमहत्तत्वोदिताऽहंकारतृतीयोद्भूत विपदादिपंचकेन्द्रियदेवता निर्मिताण्डकटाहे चतुर्दशलोकात्मकं लोके लीलया तन्मध्यवर्ति भगवतःश्रीनारायणस्याङ्कनाभिकमलोद्भूतेन सकललोकपितामहेनब्रह्मणा सृष्टिं कुर्वता तदुद्धाराय प्रजापतिप्रार्थितेन महापुरुषरूपिणा सितवाराहावतारेण ध्रियमाणायामस्याँ भूलोकसंज्ञितायाँधरित्र्यां सप्तद्वीपमण्डितायाँ क्षीराद्यब्धि गुणद्वीपबलयीकृत लक्षयोजनविस्तीर्णे जम्बूदीपे भरतखण्डे स्वर्गस्थिताद्या शासितावतारेण गंगादिसरिभ्दिः पावितेनिखिलजनपावने शौनिकादिनिर्म्मितनैमिषारण्ये आर्य्यावर्ते पुण्यक्षेत्रे अयोध्याख्ये श्री ब्रह्मणोद्वितीय प्रहरार्द्धेय द्वितीयोयामे तृतीयमुहूर्ते श्रीश्वेतवाराहनाग्नि प्रथमकल्पे स्वायम्भूव स्वारोचिषोत्तम तामस रैवत चाक्षुपेतिषण् मनूनति-क्रम्यमाणे, सम्पत्ति सप्तमे वैवस्वत नाम मन्वन्तरे चतुर्णायुगानां मध्ये त्रेता युगे, पष्ट्यब्दानां मध्ये सौम्यनाम सम्वत्सरे मार्गशीर्षमासे शुक्ल पक्षे अमुक वासरे अमुकनाम महानक्षत्रे अमुकनामं दिवसर्क्षे अमुकनाम योगे भवारवसात् अमुकनाम स्थूलयोगे अमुकनाम करणे अमुकनाम मुहूर्ते शुभाऽवस्थायाम् वृश्चिक राशे जनक वर्मा समहिषीकोऽहं काश्यप गोत्रस्य (शाखोच्चारःपूर्ववत्) इत्यादि विष्णु स्वरू–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पिणे श्रीरामचन्द्रनाम्ने वराय (आत्रेय गोत्रस्य इत्यादि) आयुष्मति श्री रूपिणी सीता नाम्नी कन्यां यथा शक्तवलंकृतां वहुयौतुकान्वितां समस्त फल प्राप्तकामः पितृन् पवित्री कर्तुं आत्मनश्च श्रीलक्ष्मीनारायण प्रीतये देवाग्नि गुरुब्राह्मण सन्निधो अग्नि साक्षकतया सहधर्माचरणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे पतिगृह्यातु भवान् ।

दानवाक्यम्

सीता कन्यामिमां राजन् यथाशक्तयु पलंकृताम् ।।
तुभ्यंकाश्यपगोत्राय दत्तां राम समाश्रये ।।

पटाक्षेप ।

तृतीय दृश्य–बारात विदा करना

स्थान–र जमहल

[बराती और कन्या पक्षी यथा स्थान स्थित हैं, राजा जनक सीता को उपदेश करते हुये विदा करते हैं।]

राजा जनक—(सीता से) रागिनी "तर्ज कब्वाली"

सुनो सीता पतिव्रत धर्म को तुम जी लगा करके ।
सुनाता हूँ मैं ये तुमको मनु का मत दिखा करके ।।

श्लोक

कुरूपो वा कुवृत्तो वा सुस्वभावोथ वैपतिः ।
रोगान्वितः पिशाचो वा क्रोधिनो वाथ मद्यपः ।।
अगर ऐसा भी हो स्वामी तो पूजै तुल्य ईश्वर के ।
देवो मनुष्यो गन्धर्वो सतीनां ना परप्रियः ।
अप्रियं नैव कर्त्तव्यं पत्न्या कदाचन ।।
मिले तब उसको सुख प्यारी सदा इस नीति पर चलके ।
न्याय कामयते चित्ते सावियेज्ञा पतिव्रता ।।
र्भक्ति श्वसुरयोः कुर्यात्पत्युश्चापि विशेषता ।।
ससुर और सास की सेवा करो नित चित लगा करके ।
सुनो सीता पतिव्रतं धर्म को तुम जी लगा करके ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीता जी की माता—(सीता से) रागिनी

मत रोवे लाड़ली सिया पति की सेवा करियोरी।
पतिहिं छोड़कर और कि आशा। उसका होय नरक में बासा।
वचन वेद का यह खासा जानै नर नारी॥

[बारात का विदा होना]

पटाक्षेप।

चतुर्थ दृश्य

स्थान—राजमहल—राजा दशरथ का

[राजा दरबारियों सहित बैठे हैं, हाथ में दर्पण है]

दशरथ–(सुमन्त से) हे मन्त्री! हमारी चौथी अवस्था आगई है अब रामचन्द्र के राज्याभिषेक की तैयारी कराओ। गुरु महाराज ने कल का मुहूर्त निश्चिय किया है, नगर को सजाओ।

सुमन्त–(दशरथ से) जो आज्ञा, हे आर्य जाता हूं [विदा होता है]

पटाक्षेप।

पंचम दृश्य

स्थान—कैकेयी महल

(कैकेयी अकेली बैठी है, मन्थरा का प्रवेश)

मन्थरा–(कैकेयी के निकट जाकर) प्यारी! तुम्हारे दुःख का समय आ गया। हाय······(रोती हुई)

कैकेयी (मन्थरा से) अरी मन्थरा क्या हुआ? बोलती क्यों नहीं? तू तो बड़ी वाचाल थी, लक्ष्मण ने तुझे मारा तो नहीं। रामचन्द्र कुशल से तो हैं?

मन्थरा–(कैकेयी से) चौपाई

कति सिख देह हमहिं कोउ माई। गाल करव केहिके बल पाई॥
रामहिं छाड़ि कुशल केहि आजू। जाहि नरेश करहिं युवराजु॥
भा कौशल्यहि विधि अति दाहिन। देखत गर्व रहत उर नाहिन॥
देखहु कस न जाइ पुर शोभा। जो अवलोकि मोर मन क्षोभा॥

कैकेयी–(मन्थरा से) रागिनी– "पूजन को अम्बे गौरी"

श्रीराम राज पावैं फिर हानि क्या पियारी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुझको ये दुःख हुआ क्यों, प्यारी सखी हमारी ।।
कुल का यही धरम है, राजा ने जो विचारी ।

मन्थरा–(कैकेयी से) रागिनी [तर्ज यही]

क्यों भूलि तुम हो बैठी सुनिये हमारी रानी ।।
कल राम राज पावैं राजा नें मन में ठानी ।
सङ्कट भरत को होगा नहिं पावैं राजधानी ।।

कैकैयी –(मन्थरा से) चौपाई

पुनि अस कबहुं कहसि घर फोरी । तो धरि जीभ कढ़ाओं तोरी ।।
सुदिन सुमङ्गल दायक सोई । तोर कहा फुर जा दिन होई ।।
जेठ स्वामी सेवक लघु भाई । यह दिन कर कुलरीति सुहाई ।।
रामहिं तिलक जो सांचेउ काली । देउ मांग मन भावत आली ।।
प्राण ते अधिक राम सिय मोरे । तिन के तिलक क्षोभ कस तोरे ।।
कौशल्या सम सब महतारी । रामहिं सहज सुभाव पियारी ।।
मो पर करहिं सनेह विशेषी । मैं करि प्रीति परीक्षा देखी ।।
जो विधि जन्म देई कर छोहू । होहि राम सिय पूत पतोहू ।।

दोहा–भरत शपथ तोहि सत्य कहूँ, परिहरि कपट दुराव ।
हर्ष समय विस्मय करेसि, कारण मोहिं सुनाव ।।

मन्थरा -- (कैकैयी से) चौपाई–"तर्ज सहाना"

एकहिं बार आस सब पूजी । अब कछु कहब जीभ करि दूजी ।।
(कपाल पर हाथ मार आंखों में आँसू भर कर)
फोरे योग कपार अभागा । भलो कहत दुख रौरेहु लागा ।
हमहु कहब अब ठकुर सुहाती । नाहिन मौन रहब दिन राती ।
करि कुरूप विधि परवस कीन्हा । वाचा शाल हमें तिन्ह दीन्हा ।
कोउ नृप होइ हमहि का हानि । चेरि छाँड़ अब होहिं कि रानी ।
जारे योग स्वभाव हमारा । अनभल देखि न जाय तुम्हारा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कैकेयी–(मन्थरा से) चौपाई

का अनभल देखेउ तुम मोरा । उपजावसि मोहिं सोच न थोरा ।
रामचन्द्र जो पावहिं राजू । सत्य कहहु का मोर अकाजू ।

मन्थरा–(कैकेयी से) चौपाई

का पूछहु सखि अजहूँ न जाना । हित अनहित निज पशु पहचाना ।
प्रिय सिय राम कहा तुम रानी । रामहिं तुम प्रिय सो फुरवानी ।
रहे प्रथम अब सो दिन बीते । समय पाय रिपु होहि परीते ।
चतुर गम्भीर राम महतारी । बीच पाय निज काज संभारी ।
रचि प्रपञ्च भूपहिं अपनाई । रामतिलक हित लग्न धराई ।
भये पाखदिन सजत समाजू । तुम सुधि पायऊ मोसन आजू ।
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे । सत्य कहें नहिं दोष हमारे ।
रामहिं तिलक कालि जो भयेऊ । तुम कहँ विपति बीच विधि वयेऊ ।
जो सुत सहित करो सेवकाई । तौ घर रहहु न आन उपाई ।

दोहा–कद्रू विनतहि दीन्ह दुख, तुमहिं कौशल्या देव ।
भरत बन्दि गृह सेई हैं, लषण राम के नेव ।

कैकेयी – (मन्थरा से) चौपाई

सुनु मन्थरा बात फुर तोरी । दाहिन आँख नित फरकत मोरी ।
दिन प्रति देखों गति कुसपने । कहीं न तेहिं मोह बस अपने ।
काह कहौं सखि शुद्ध स्वभाऊ । दहिन बाम नहीं जानौं काऊ ।
नैहर जन्म भरब वरि आई । जियत न करब सवति सेवकाई ।
अरि बस दैव जियावै जाही । मरण नीक तेहि जीवन चाही ।

मन्थरा–(कैकेयी से) चौपाई

अब कस कहहु मानि मन ऊना । सुख सुहाग तुम कहँ दिन दूना ।
जब ते कुमति सुना मैं स्वामिनि । भूख न वासर नींद न यामिनि ।
पूछा गुणिन रेख तिन खाँची । भरत भुआल होहिं यह सांची ।
भामिनि करहु सो कहूँ उपाऊ । हैं तुम्हारे सेवा बस राऊ ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कैकैयी—(मन्थरा से)

दोहा–अपने चलत न आज लगि, अनभल काहुहिं कीन्ह ।
केहि अघ एकहिं बार मोहिं, दैव दुसह दुख दीन्ह ।
परौं कूप तब वचन लगि, सकों पूत पति त्याग ।
कहेसि देखि दुख मोर बड़, कस न करब हित लागि ।

मन्थरा–(कैकेयी से) चौपाई

दुइ वरदान भूप सन थाती । मांगहु आज जुड़ावहु छाती ।
सुतहिं राज रामहिं बनवासू । देहु लेहु सब सवति हुआसू ।
भूपति राम सपथ जब करहीं । तब मांगहु जेहि वचन न टरहीं ।
कोप भवन सजि सकल समाजू । सयन करो जब आवहिं आजू ।

कैकेयी –सखी मैं इसी समय कोप भवन में जाती हूँ जो ईश्वर कल मेरा मनोरथ पूरा करें तुझे आँख की पुतली बनाऊँगी ।

(कोपभवन को कैकेयी और दूसरी ओर को मन्थरा जाती है)

पर्दा उठता है ।

—०—

छठा दृश्य

स्थान–कोपभवन

[वस्त्राभूषण चारों ओर फेंक केश फैलाये हुये कैकेयी शैया पर बैठी है । राजा दशरथ का प्रवेश]

दशरथ – (कैकेयी के अंग को स्पर्श करते हुये—आभूषण देते हुये)

दोहा–सुमुखि सुलोचनी पिकवचनि, का दुख मोहि जनाउ ।
गजगामिनि निज कोप कर, कारण मोहि सुनाउ ।।

(कैकेयी मुख मोड़ती है) चौपाई

अनहित तोर प्रिया केहि कीन्हा । केहि दोउ शिर केहि यम चह लीन्हा ।
कहु केहि रंकहि करौं नरेशू । कहु केहि नृपहि निकारौं देशू ।
सकहुँ तोर अरि अमरहिं मारी । कहा कीट बपुरे नर नारी ।
जानेसि मोर सुभाव बरोरू । तव मुख मम दृग चन्द्र चकोरू ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रिया प्राण सुत सर्वस मोरे । परिजन प्रजा सकल बस तोरे ।
जो कछ कहौं कपट करि तोही । भामिनी राम शपथ शत मोही ।
बिहसि माँगु मनभावति बाता । भूषण साजु मनोहर गाता ।

[भूषण पहिनाते हैं]

घरि कुघरी समुझि जिय देखू । वेगि पिया परिहरिहु कुवेखू ।
भामिनि भयउ तोर मन भावा । घर घर नगर आनन्द बधावा ।
रामहिं देऊँ काल युवराजू । सजहु सुलोचनि मंगल साजू ।

(गद्य) हे प्राण प्यारी! तुझे मलिन देख मेरा चित्तव्याकुल होता है। हे मृग-नयनी ! तेरे चन्द्रमुख को दशरथ पाने की इच्छा रखता है। प्यारी मन्द मुस्कान सहित मुझसे वार्त्ता करो व्याकुल होने की कौनसी वार्त्ता है ? कहो ।

कैकेयी—हे आर्य क्षमा करो, कपट की प्रीति बाल की भीत बहुत नहीं रहती मैं अब राजप्रपंच में नहीं आऊँगी। आपकी प्राणप्यारी तो बड़ी रानी है बस ?

दशरथ—(कैकेयी से) राग विहाग

प्रिया तुम काहे होत मलीन ।।

मैं अपने मन सोच रहा हूँ क्या किन जादू कीन्ह ।
क्या काहु ने बोली मारी क्या किन ताना दीन ।
तुमरे सोचते जिय अति व्याकल जैसे जल बिनु मीन ।
अब मोहि सत्य बता मोरि प्यारी क्या किन लीन्हा छीन ।
राम शपथ मैं सत्य कहत हूँ मैं तुमरे आधीन ।
हम रघुवँशी बचन न त्यागें कहौं बार तोहे तीन ।

कैकेयी — (दशरथ से)

दोहा—माँगु मांगु पै कहहु पिय कबहूँ देहु न लेहु ।
देन कहेउ वरदान दुइ तेउ पावन सन्देहु ।।

(जैजैवन्ती राग)

देउ पिया मोहे वह वरदाना देन कहा जो दुइ वरदाना ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूल गयेउ सो सुधि बिसराई हा हा नाथ स्वभाव मैं जाना ।
सतवादी तुम झूठ न भाषा प्राणनाथ तुम सकल सुजाना ।
रघुकुल छत्र प्राणप्रिय मोरे आज कहाँ तुम धर्म पयाना ।
दिये वचन जो तुम मोहि स्वामी सुमिरन करो बचन पठियाना ।

(राग जैजैवन्ती)

सुनहु प्रिया मैं कहूँ नत वानी तुम कहँ प्राणप्रिया निज जानी ।
मैं ना कहौं कछु बात बनाई तुमते प्रिया मोहे अधिक न रानी ।
भूल गयेउँ कछु सुरत ना रखी याद सकल सुन मोरि सिरानी ।
माँगहु वर मन वांछित देउँ काहे धरो प्रिया मन में गलानी ।
प्राण यदपि तुम मांगो पियारी देहूँ तुरत तोहे अस जिय जानी ।

रागनी

हम नहिं बोलैं झूठ —उलटजा चाहे मही सारी ।
पलटजा चाहे जमीं सारी ।
नहीं असत्य सम पातक भारी–वेद शास्त्र सब कहैं पुकारी ।
रघुकुल की मर्यादा यही हम कबहूँ न प्रण टारी ।
पश्चिम दिशा उदय हो भानू–गङ्गा उलटी बहै निदानू ।
वेदविहीन जगत सब जानू तौ भी न हूँ हारी । उलटा जा० ।

कैकेयी–(दशरथ से) चौपाई

सुनहु प्राणपति भावत जीका । देहु एक वर भरतहिं टीका ।
दूसर वर माँगों कर जोरी । नाथ मनोरथ पुरवहु मोरी ।
तापस वेष विशेष उदासी । चौदह वरष राम वनवासी ।

(राजा दशरथ मूर्च्छित होते हैं)

भरत कि राउर पूत न होही । आनेहु मोल वेसाहिकि मोही ।
जो सुनि शरसम लागि तुम्हारे । काहे न बोलेहु वचन सम्भारे ।
देन कहेउ वर अब जनि देहू । तजहु सत्य जग अपयश लेहू ।
सत्य सराहि कहेउ वर देना । जानेउ लेहि कि मांगि चबेना ।
शिव दधिचि बलि जो कछु भाषा । तन धन तजेउ बचन प्रण राखा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दशरथ–

मोर राम भरत दोउ आँखी। साय कहूँ करि शंकर साखी।
सुदिन शोधि सब साज बनाई। देहुँ भरत कहँ राज बजाई।
राम शपथ सत कहों सुभाऊ। राम मातु मोहि कहा न काऊ।
रिस परिहरि अब मंगल साजू। कछु दिन गये भरत युवराजू।
एकहिं बात मोहि दुख लागा। वर दूसर असमंजस मांगा।
कहु तजि रोष राम अपराधू। सब कोउ कहत राम सुठि साधू।
जासु स्वभाव अरिहि अनूकूला। सो किमि होई मातु प्रतिकूला।
समुझि देखु तैं प्रिया प्रवीना। जीवन दशरथ राम अधीना।

कैकेयी–

कहहु करहु किन कोटि उपाया। यहाँ न लागहिं राउर माया।
देहु कि लेहू अयश करि नाहीं। मोहिं न बहु परपंच सुहाहीं।
राम मातु तुम भल पहिचाना। राम साधु तुम साधु सुजाना।
दोहा–होत प्रात मुनि वेष धरि, जो न राम बन जाहिं।
मोर मरण राउर अयश, नृप समुझहु मन माहिं।

(क्रोधाग्नि से प्रज्ज्वलित हो उठकर जाती है)

दशरथ– (हाथ पकड़ बैठाकर) चौपाई

का गई तोरि निपट मति मारी। जनि दिन कर होसि कुठारी।
माँगु माँथ अबही देउँ तोही। राम बिरह जनि मारेसि मोही।

(सिर पीट कर) हा राम! हा राम! हे रघुनाथ!

क्यों तू मारे है पापिन, मोहे राम विरह के बान।
लोभ न रामहिं राज कर, भरतहिं मानें प्रान।
जेठ जानि नृप नीति में, करता रहा प्रमान।
अवध बसे आनन्द से, मेरे जायेंगे प्रान।
तेरे सिर हत्या लगी, निश्चय लीजे जान।
हंसती अपनी ऐन खुशी में, पड़ा करै था चैन।
डूब गया गम के गोते में, सुनि के हरि के बैन।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कैकेयी— चौपाई तर्ज – काफी 'बारा जोरी कर रंग डारी'

जो अन्तहु अस करतब रहेऊ । मांगु मांगु केहि के बल कहेऊ ।
तन तिय धाम तनय धन धरणी । सत्य सन्ध कह तृण समवरणी ।
छाड़हु वाच की धीरज धरहू । जनि अबला इव करुणा करहू ।
दीन दान फिर मांगहु राजा । परिहरि लोक वेद की लाजा ।

दशरथ –(कैकेयी से) चौपाई

चहत न भरत भूप पद भोरे । विधि बस कुमति बसी उर तोरे ।
सो सब मोर पाप परिणामू । कछु न बसाय भयो विधि बामू ।
सुबस बसहिं पुनि अवध सुहाई । सब बिधि सुखद राम प्रभुताई ।
करिहहिं भ्रात सकल सेवकाई । होईहिं तिहु पुर राम बड़ाई ।
तोर कलंक मोर पछिताऊ । मुयेहु न मिटहिं न जाइहि काऊ ।
अब तोहि नीक लागु कर सोई । लोचन ओट बैठ मुख गोई ।
जब लगि जियों कहौं करि जोरी । तब लगि जनि कछु कहसि बहोरी ।
फिर पछितैहसि अन्त अभागी । मारेसि गाय नाहरू लागी ।

हा राम ! हा राम ! तुम्हारे बिना कौन जियावेगा ? हा विधाता मेरा दुख देखकर विहान मत करना हे सूर्यदेव ! कल उदय न होना । तेरे उदय होते ही जग में अन्धकार हो जायेगा । हे सूर्य कुल के सूर्य ! हे राम हा रघुवीर ! (भूमि पर गिर पड़ते हैं)

[प्रातः काल होने पर सुमन्त का प्रवेश]

सुमन्त–(कैकेयी से) आज क्या कारण है कि महाराज अभी तक नींद से नहीं उठे ? पहर रात्रि रहे ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर महाराज नित्य सन्ध्यादि से निवृत होते थे ।

कैकेयी – (सुमन्त से)

दोहा–परि न राजहि नींद निशि, मर्म जानि जगदीश ।
राम राम रटि भोर करि, हेतु न कहेउ महीश ॥

हे मन्त्री शीघ्र जाकर राम को बुला लाओ, तब समाचार पूछना ।

सुमन्त–बहुत अच्छा मैं जाता हूँ । (विदा होता है)

(राम सहित सुमन्त का प्रवेश)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम—(कैकेयी से) रागिनी (तर्ज गजल)

पिता जी कैसे व्याकुल हैं हमें माता बता दीजे ।
हुआ अपराध जो मुझसे क्षमा उसको करा दीजे ।
मेरा है शोक अति भारी नहीं हटता हटाने से ।
हुआ हो दोष जो मुझसे वही माता मिटा दीजे ।
जो मुझमें दोष देखा हो बता दीजे मेरी माता ।
जो कारण कोप दायक हो वही कारण जता दीजे ।

कैकेयी - (राम से) (तर्ज वही)

नहीं कुछ कोप का कारण जो कारन है सो सुन लीजे ।
तुम्हारे नेह से राजा, दुखी हैं ये समझ लीजे ।
मिले दो वर जो थे मुझको वो माँगे आज राजा से ।
दो वन एक वर से रघुवर को भरत को राजपद दीजे ।
तुम्हारे प्रेम से राजा पड़े हैं धर्म से हारी ।
जो तुम चाहो सफल करना तो उनका वाक्य सिध कीजे ।

राम--(कैकेयी से) चौपाई

सुन जननी सोइ सुत बड़ भागी । जो पितु मातु वचन अनुरागी ।
तनय मातु पितु पोषण हारा । दुर्लभ जननी यह संसारा ।

दोहा–मुनिगण मिलन विशेष वन, सब प्रकार भल मोर ।
तेहि पर पितु आयसु बहुरि, सम्मति जननी तोर ॥

चौपाई

भरत प्राण प्रिय पावहिं राजू । विधि सब विधि मोहि सम्मुख आजू ।
जो न जाऊँ बन ऐसेहु काजा । प्रथम गणिय मोहि मूढ़ समाजा ।
सेवहिं अरण्ड कल्पतरू त्यागी । परहरि अमिय लेहिं विष माँगी ।
तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं । देखु विचार मातु मन माहीं ।
अम्ब एक दुख मोहि विशेषी । निकट विकल नर नायक देखी ।
राउ धीर गुण उदधि अगाधू । भा माते कछु बड़ अपराधू ।
ताते मोहिं न कहत कछु राऊ । मोर शपथ तोहि कहुं सत भाऊ ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कैकेयी – (राम से)

शपथ तुम्हार भरत कै आना। हेतु न दूसर मैं कछु जाना।
तुम अपराध योग नहिं ताता। जननी जनक बन्धु सुख दाता।
राम सत्य तुम जो कछु कहहू। तुम पितु मातु वचन रत अहहू।
पितहिं बुझाइ कहहु बलि सोई। चौथेपन अघ अयश न होई।

दशरथ–हा राम! हा राम! (करवट लेते हैं)

राम–(दशरथ से) चौपाई

तात कहौं कछु करों ढिठाई। अनुचित क्षमहु जानि लरिकाई।
अति लघु बात लागि दुख पावा। काहे न मो कहँ प्रथम जनावा।
देखि गुसाइंहि पूछेहु माता। सुनि प्रसंग भा शीतल गाता।
विदा मातु सन आवौं मांगी। चलि हौं बहुरि बनहिं पालागी।

[राजा प्रेम बस कुछ उत्तर नहीं देते, रामचन्द्र कौशल्या भवन को जाते हैं]

(धीरे धीरे पर्दा गिरता है)

सातवां दृश्य

(स्थान–कौशल्या भवन)

[कौशल्या जी बैठी हैं, राम का प्रवेश–प्रणाम करते हैं, माता हृदय से लगाती है]

कौशल्या (राम से) चौपाई

कहहु तात जननी बलिहारी। कबहूँ लगन मुद मंगलकारी।
तात जाऊँ बलि वेगि अन्हाऊ। जो मन भाव मधुर कछु खाऊ।
पितु समीप तब जायहु भैया। भइ बड़ि बेरि जाइ बलि मैया।

राम–(माता से) चौपाई

पिता दीन्ह मोहि कानन राजू। जहँ सब भांति मोर बड़ क़ाजू।
आयसु देहु मुदित मन माता। जेहि मुद मंगल कानन जाता।
जनि सनेह बस डरपसि भोरे। आनन्द मातु अनुग्रह तोरे।

दोहा–वर्ष चारि दश विपिन बसि, करि पितु वचन प्रमान।
आय पाँय पुनि देखि हौं, मत जनि करिस मलान।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कौशल्या -- (राम से)

तात पितहि तुम प्राण पियारे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे।
राज देन कह शुभ दिन साधा। कहेउ जान बन केहि अपराधा।
तात सुनाबहु मोहि निदानु। को दिनकर कुल भयउ कृशानू।

[मन्त्री पुत्र का प्रवेश]

मन्त्री पुत्र-(राम की चेष्टा देखकर) हे माता! छोटी महारानी ने कल दो वर महाराजा से माँगे हैं। एक से भरत को राज्याभिषेक और दूसरे से राम को वनवास।

कौशल्या -- (राम से सजल नेत्र हो) चौपाई तर्ज "सहाना"

तात जाउँ वलि कीन्हउ नीका। पितु आयसु सब धर्महि टीका।
जो केवल पितु आयसु ताता। तौ जनिजाहु जानि बड़ि माता।
जो पितु मातु कहैं बन जाना। तौ कानन शत अवध समाना।
पितु बनदेव मातु बनदेवी। खग मृग चरण सरोरुह सेवी।
अन्तहु उचित नृपहिं बनवासू। वय बिलोकि हिय होत हिरासू।
बड़भागी वन अवध अभागी। जो रघुवंश तिलक तुम त्यागी।

[रोती हुई राम को हृदय से लगाती है]

राम -- (माता से) रागिनी

क्यों तू रुदन मचावै जननी, आँसू थाम थाम थाम।
नहिं दोष मातु का माता, लिख दिया था यही विधाता।
अब क्या हाथ मले से आता, है विधि बाम बाम बाम।
लिखते हैं वेद अरु गीता, सब झूठी जग की रीता।
सदा रहा है नहीं कोई जीता, है एक नाम नाम नाम।

[सीता का प्रवेश]--(सास के चरण छूकर)

सीता -- (सास से) चौपाई

चलन चहत वन जीवन नाथा। कवन सुकृतपन होईय साथा।
की तनु प्राण कि जीवन प्राणा। विधि करतव कछु जाइ न जाना।

कौशल्या--(राम से)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोहा–पिता जनक भूपालमणि, ससुर भानु कुल भानु।
पति रविकुल कैरव विपिन, विधु गुण रूप निधानु॥

चौपाई

तात सुनहु सिय अति सुकुमारी। सास ससुर परिजनहिं पियारी।
पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा। सिय न दीन पग अवनि कठोरा।
जिवन मूरिइव जुगवतिं रहेऊँ। दीप बाति नहिं टारन कहेऊँ।
सो सिय चलन चहत वनसाथा। आयसु कहा कहिय रघुनाथा।
है तापस तिय कानन योगू। जिन तप हेतु तजा सब भोगू।
सिय वन बसहिं तात केहि भाँती। चित्र लिखित कपि देखि डराती।
सुर सर सुभग बनज बनचारी। डाबर योग कि हँस कुमारी।

राम–(सीता से) चौपाई

आयसु मोर सासु सेवकाई। सब विधि भामिनि भवन भलाई।
इहिते अधिक धर्म नहिं दूजा। सादर सासु ससुर पद पूजा।
जब जब मातु करहिं सुधि मोरी। होइहि प्रेम बिकल मति भोरी।
तब तब तुम कहि कथा पुरानी। सुन्दरि समझायेउ मृदु बानी।
कहौं स्वभाव शपथ शत मोहीं। सुमुखि-मातु हित राखौं तोही।

दोहा–गुरु श्रुति सम्मत धर्मफल, पावहिं बिनहिं कलेश।
हठ बस सब संकट सहे, गालव नहुष नरेश॥

मैं पुनि करि प्रमाण पितु बानी। बेगि फिरव सुनि सुमुख सयानी।
दिवस जात नहिं लागहिं बारा। सुन्दर सिखवन सुनहु हमारा।
जो हठ करहु प्रेमबस वामा। तो तुम दुख पाउव परिणामा।
कानन कठिन भयंकर भारी। घोर घाम हिम बारि बयारी।
कुश कंटक मग कंकर नाना। चलव पयादेहि बिनु पदत्राना।
भालु बाघ वृक केहरि नाना। करहिं नाद मुनि धीरज भागा।
नर अहार रजनीचर करहीं। कपट भेष वन कोटिन फिरहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोहा–भूमि शयन बलकन बसन, असव कन्द फल मूल ।
नेकि सदा सब दिन मिलहिं, समय समय अनुकूल ॥

सीता–(राम से) चौपाई

प्राणनाथ तुम बिनु जग माहीं । मोकहूँ सुखद कतहुँ कोउ नाही ।
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसेहि नाथ पुरुष बिनु नारी ।
बनदेवी बनदेव उदारा । करिहैं सासु श्वसुर सम सारा ।
वन दुख नाथ कहेउ बहुतेरे । भय विषाद परिताप घनेरे ।
प्रभु वियोग लवलेश समाना । सब मिलि हौंहि न कृपा निधाना ।
मैं सुकुमारि नाथ बन योगू । तुमहिं उचित तप मोकहँ भोगू ।

राम–(सीता से) गज़ल

रहो घर जानकी मानो हमारी । बहुत दुख पाओगी जंगल में प्यारी ।
थकेंगे चलते चलते पैर बन में । नहीं मिलती वहाँ कोई सवारी ।
डरोगी देखकर जंगल के वनचर । ये देगी दुख बहुत सी हठ तुम्हारी ।

सीता–(राम से) राग जोगिया

स्वामी मोहे बहुत भाँति समुझायें । टेक ।

निशिचर घोर कठोर गिरि कानन, नाना भय दिखलाये ।
भालु बाघ वृक केहरि नागा, पन्थ कठिन बतलाये ।
तुम दुःख सहो बन बन में स्वामी, मैं यहाँ रहुँ हरषाये ।
को पापिन हो मो सम जग में, जों पति बिनु गृह भाये ।

राम–(सीता से) चौपाई

लागे अति पहार के पानी ꕥ विपिन विपति नहीं जाय बखानी ।
डरपहिं धीर गहन सुधि आये ꕥ मृग लोचनि तुम भीरु सुभाये ।
हंस गमनि तुम नहिं वन योगू ꕥ सुनि अपयश मोंहिं देहहिं लोगू ।
रहहु भवन अस हृदय विचारी ꕥ चन्द्रवदनि दुख कानन भारी ।

(गद्य)–प्रिये ! सच्चे मित्र एवं गुरु तथा पति की शिक्षा न मानने से दुःख उठाना और अन्त में पछताना पड़ता है । हे चन्द्रमुखी ! सोच लो ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(रागिनी)

सीता-(राम से)

नाथ मोहे त्यागो मति लीजौ संग छोड़ी जनि प्रभु रघुराई।
ताड़िका मारि मुनि यज्ञ पूरण कियो अहल्या श्राप छुटाई।
करुणायतन उर अन्तर्यामी मोसे करो निठुराई।
राखो अवध में तुम मोहे स्वामी यही चित में समाई।
प्राण पयान करूँ या तन से कहूँ शपथ मै खाई।

(गद्य)–हे प्राणनाथ ! हे आर्य पुत्र ! दासी को न छोड़िये, जल के बिना मीन कदापि नहीं रह सकती [चरण पकड़ लेती है]

राम-(सीता से) (वही तर्ज)

प्यारी मेरी मानो सीख धरो, धीर राजा जनक दुलारी।
बन बन डोलन यदि तुम चाहो, चाहो सहन दुख भारी।
तो सब सन मिलि शीघ्रहि आवो, करो बन गमन तयारी।

चौपाई

सब मातन पद नावहु माथा। परिहरि शोच चलहु बन साथा।
नहिं विलम्ब कर अवसर आजू। वेगि करहु बन गमन समाजू।

(लक्ष्मण का प्रवेश)

लक्ष्मण–(प्रणाम करके राम से) रागिनी [तर्ज बिलोचां जालिमां]

सुनो भ्राता पिता हैं बृद्ध भारी। उन्होंने लाज अपने सिर से टारी।
दिया वर कैकेयी को हाय कैसे। न कुल रीति भी इसमें कुछ विचारी।
रहेंगे कैसे वन के बनचरों में। चौथे काल में बुद्धि बिसारी।

राम–(लक्ष्मण से) राम उपरोक्त

लषण तुम जानते हो नीति सारी। लिखा था कर्म्म में विधिना हमारी।
पितामाता का क्या फिर दोष भाई। तुम्हीं समझो जरा मन में विचारी।
धरम है हम पिताकीआज्ञा मानें।यह उत्तम रीति श्रुति ने है विचारी।

लक्ष्मण–(राम से) रागिनी

मैं विनय करूँ कर जोर नाथ बन चलूँगा रघुराई।
तुम स्वामी मैं दास तुम्हारा त्यागा तो क्या जोर हमारा।
शरण छोड़ महाराज आपकी लक्ष्मण कहं जाई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम-(लक्ष्मण से) चौपाई

भवन भरत रिपुसूदन नाहीं। राउ वृद्ध मम दुख मन माहीं।
मैं बन जाऊँ तुम्हहि लै साथा। होइहि सब विधि अवध अनाथा।
गुरु, पितु, मातु, प्रजा परिवारू। सब कहँ परै दुसह दुख भारू।
जासु राज्य प्रियप्रजा दुखारी। सो नृप अवशि नरक अधिकारी।
रहहु करहु सब कर परितोषू। नतरु तात होईहिं बड़ दोषू।

लक्ष्मण-(राम से) चौपाई

गुरु, पितु, मातु न जानौं काहू। कहौं स्वभाव नाथ पतियाहू।
मोरे सबै एक तुम स्वामी। दीन बन्धु उर अन्तरयामी।
धर्म नीति उपदेशिय ताही। कीरति भूति सुगति प्रिय जाही।
मन क्रम वचन चरण रत होई। कृपा सिन्धु परहरिय कि सोई।

राम-(लक्ष्मण से) राग-परज

भ्राता करम रेख ना टारी।
कर्म के दान तुरंग नचावै, कर्म क्षत्रपति धारी।
कर्म के हाथन करत अमीरी, कर्म हि कर्म भिखारी।
पिता मोहे बनवास दियो है, संग चलै सिया प्यारी।
पितु आज्ञा से त्यागों अवध को, हर्ष से करूँ तय्यारी।
बैठे राज्य करो तुम भय्या, मानों सीख हमारी।
नित्य नीति का पालन कीजो, प्रजा रहे जो सुखारी।

लक्ष्मण- परज

मोहे राज नीति नहीं भावै भ्राता, क्या मुझको समुझाये।
राज काज की सार न जानूँ, क्या मुझको बतलाये।
यह बड़ भार सहूँ कैसे स्वामी, कहूँ मैं शीश नवाये।
बाल अवस्था है मोरे भ्राता, तुम देखो चितलाये।
राज काज को कौन करत है, बिना भरत के आये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो मोहे संग नहीं जो स्वामी, यह मन मेरे आये ।
प्राण पयान करूँ या तन से, मार कटारी खाये ।

राम–हे भ्राता माता से आज्ञा ले आओ, शीघ्र आकर बन को चलो । अधिक कहने का समय नहीं है । शीघ्र चलो ।

[लक्ष्मण विदा होते हैं]

❁ पर्दा गिरता है ❁

आठवाँ दृश्य

(सखियों के सहित रानी बैठी है–लक्ष्मण का प्रवेश)

लक्ष्मण–(माता को प्रणाम करते हैं) हे माता ! गत रात्रि में श्री महाराज से माता कैकेयी ने दो बर माँगे हैं। एक भरत को राजपद, दूसरा श्री रामचन्द्र को बनवास। अस्तु मुझे भी वन को जाने की आज्ञा दीजिये ।

सुमित्रा–(लक्ष्मण से) चौपाई

तात तुम्हार मात वैदेही । पिता राम सब भाँति सनेही ।
अवध तहां जहँ राम निवासू । वहाँ दिवस जहाँ भानू प्रकाशू ।
जो पै रामसीय बन जाहीं । अवध तुम्हार काज कछु नाहीं ।
गुरु पितु मातु बन्धु सुरसाईं । सेई सकल प्राण की नाईं ।
तुमरे भाग राम बन जाहीं । दूसर हेतु तात कछु नाहीं ।
अस जिय जानि संग बन जाहू । लेहू तात जगं जीवन लाहू ।
पुत्रवती युवती जग सोई । रघुवर भक्त जासु सुत होई ।

(लक्ष्मण प्रणाम करके विदा होते हैं)

–०००– पटाक्षेप

नवम दृश्य

स्थान–कौशल्या भवन

(राम, लक्ष्मण, सीता कौशल्या जी को प्रणाम करते हैं)

कौशल्या – (राम को हृदय से लगाकर) चौपाई

वेगि प्रजा दुख मेटव आई । जननी निठुर बिसरि जनि जाई ।
फिरहिं दशाविधि कबहुँ कि मोरी । देखिहौं नयन मनोहर जोरी ।
सुदिन सुधरी तात कब होई । जननी जियत बदन बिधु जोई ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीता–(चरणों में गिर) हे माता, मैं हत भागिनी हूँ। मेरा अपराध क्षमा कीजिये सेवा के समय दैव ने वन दिया। (नेत्रों से अश्रुपात)

कौशल्या–(छाती से लगाकर) हे पुत्री! तेरा सौभाग्य अचल हो जब तक गंगा यमुना में पानी रहे, तब तक पति की प्यारी हो!

(तीनों विदा होते हैं)

[धीरे धीरे पर्दा गिरता है]

—०००—

दसवाँ दृश्य

स्थान–कोप भवन

(दशरथ मूर्छित पड़े हैं, कैकेयी और सुमन्त बैठे हैं)

राम–(दशरथ से) चौपाई

पितु अशीस आयसु मोहि दीजे। हर्ष समय विस्मय मत कीजे।
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू। यश जग जाय होय अपवादू।

हे तात मुझे वन जाने की आज्ञा दीजिये।

दशरथ–(राम से) चौपाई

सुनहु तात तुम कहँ मुनि कहईं। राम चराचर नायक अहईं।
शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी। ईश देहि फल हृदय विचारी।
करै जो कर्म पावै फल सोई। निगम नीति अस कह सब कोई।

दोहा–और करै अपराध कोइ, और पाव फल भोग।
अति विचित्र भगवन्त गति को जब जानै योग॥

कैकेयी–(तापस वस्त्र कमण्डलादि आगे रख, राम से)

चौपाई

नृपहि प्राणप्रिय तुम रघुवीरा। शील सनेह न छाँड़हि धीरा।
सुकृत जाइ परलोक नसाऊ। तुमहिं जान वन कहहिं न राऊ।

(दशरथ कैकेयी के वाक्य सुनकर फिर अचेत होते हैं)

राम-लक्षमण (तापस भेष बनाते हुये) ग़ज़ल

उतारूँ राज के कपड़े जो है माता तेरे मन में।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बनाऊँ भेष मुनियों का रमाऊँ भस्म सब तन में ।
पिता ने दुख वृथा माना यही चिन्ता रही मन में ।
(प्रणाम करके विदा होते हैं)

दशरथ–(मूर्छा से जाग) रागिनी (तर्ज कव्वाली)
चले बन राम हा लक्ष्मण मुझे अब जी के क्या करना ।
मेरे सुत बन में दुख पावैं अरे उस दैव से डरना ।
ऐसे जीने से बेहतर है, जो हो इस वक्त पै मरना ।

(सुमन्त से) चौपाई
राम चले वन प्राण न जाहीं । केहि सुख लागि रहे तन माहीं ।
इहिते कबन व्यथा बलवाना । जो दुख पाय तजैं नहिं प्राना ।
मोते कहि न जात अब काहू । लै रथ सङ्ग सखा तुम जाहू ।

दोहा–सुठि सुकुमार कुमार दोउ, जनक सुता सुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ दिखराइ बन, फेरेहुँ गये दिन चारि ।।

चौपाई
जो नहिं फिरहिं धीर दोउ-भाई । सत्य सिन्धु दृढ़ व्रत रघुराई ।
तो तुम विनय करेहु करजोरी । फेरिय प्रभु मिथलेश किशोरी ।

सुमन्त-(अश्रुपात करते हुए वस्त्र से पोंछते हुए) जो आज्ञा हो (कहकर विदा होते हैं ? राम लक्ष्मण सीता को रथ पर चढ़ा वन को पयान करना

दशरथ–हा राम, हा राम (करते मूर्छित होते हैं)

पर्दा गिरता है ।

इति तृतीय चरित्र बन-गमन समाप्तम्

–००००–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुर्थ दिवस

प्रथम दृश्य–निषाद सम्मेलन

स्थान–गंगातट

(एक ओर से राम, लक्ष्मण, सीता, सुमन्त का आना दूसरी ओर से निषाद का प्रवेश)

निषाद–(फल फूलों की डाली आगे रखकर प्रणाम करते हुए)
महाराज ! मोर बखरी श्रृंगवेर गाउँ है, केवट जाती मोरा गुह नाउँ है।

निषाद–(राम से) चौपाई

नाथ कुशल पद पंकज देखे। भयेउ भाग्य भाजन जन लेखे।
देव धरणि धन धाम तुम्हारा। मैं जन नीच सहित परिवारा।
कृपा करिय पुर धारिय पाऊँ। थापिय जानि सब लोग सिहाऊँ।

राम–हे सखा सो सब ठीक है पर मुझको पिता ने कुछ और ही आज्ञा दी है अर्थात चौदह साल पर्यन्त ऋषि वेष में रहकर किसी नगर या ग्राम में न जाकर केवल वन में रहना। अतएव इस समय क्षमा करो रात्रि में यहीं विश्राम करेंगे।

(रामचन्द्र सीता पृथ्वी पर शयन करते हैं लक्ष्मण धनुष चढ़ाये हैं)

निषाद–(अश्रुपात करते हुये) चौपाई

आज विपति विधि यह दिखलाई। पृथ्वी पर सोवत रघुराई।
सिय रघुवीर कि कानन योगू। कर्म प्रधान सत्य कहैं लोगू।
हाय कठिन दुःखदीन विधाता। राम सरिस सुत कैकई माता।

लक्ष्मण— चौपाई

जो कछु सुख दुःख लिखा विधाता। अपने अपने कर्म फिराता।
अस बिचारि नहिं कीजै रोषू। व्यर्थ काहू कहँ दीजिये दोषू।

–पटाक्षेप

स्थान–गंगा तीर

(राम, लक्ष्मण, सीता, निषाद खड़े हैं–सुमन्त हाथ जोड़ विदा मांगता है।)

सुमन्त–(राम से) चौपाई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाथ कहेउ अस कौशल नाथा । लै रथ जाहु राम कै साथा ।
बन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई । आनेहु वेग फेरि दोउ भाई ।
तात कृपा करि कीजिये सोई । जाते अवध अनाथ न होई ।

राम–(सुमन्त से)

सुनहु सखा तुम सकल सुजाना । जग यश जाय होय अपमाना ।
शिव दधीचि हरिचन्द्र नरेशू । सहे धर्म हित कोटि कलेशू ।
रन्तिदेव बलि भूप सुजाना । धर्म हेतु सहे संकट नाना ।
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा । तजहुँ तो तिहुँपुर अपयश छावा ।
सब विधि सोइ करतव्य तुम्हारे । दुख न पाव नृप सोच हमारे ।

(प्रणाम करके सुमन्त का अयोध्या को विदा होना)

राम–(केवट से) हे सखा नौका ले आओ और हमको पार उतार दो ।

केवट– महाराज नाव तो हमार एकइ हीन दो चार ना हीन ।

लक्ष्मण–तो भाई हमको भी तो एक ही-नाव से पार जाना है दो चार का प्रयोजन नहीं है ।

केवट–याते तों हम आपन परिवार पालित हैं और हमार का व्योपार है ?

लक्ष्मण–तो क्या डर है पाला करो, हमें पार कर दो ।

केवट–महाराज ये तो है लकड़ी की नाव पाथर से नरम है । जो हमारी नाव महरूवा होइ कै उड़ गइ तौ हमार मिहरारू और परिबार लरि हैं ।

राम–सखा हम समझे नहीं, साफ साफ कहो ।

राम–(केवट से) चौपाई

लाऊँ नाव सुनो भय हारी । पर मोको यह संशय भारी ।
छुवत चरण उड़ि शिला गुसाईं । कहुँ मोरि नाव नाथ उड़िजाई ।
तरिणिउ मुनि धरणी हुइ जाई । फेर कहो का करौं उपाई ।
जो प्रभु अवशि पार गा चहहू । तो पद पद्म पखारन कहहू ।

राम–(केवट से हँसकर) जिस प्रकार नाव न उड़ पड़े सो उपाय करो । अच्छी बात है पाँव धोय लो ।

निषाद–(चरण धोकर चरणामृत लेता है और नाव पर चढ़ा) अरे गंगा दिनवाँ नैया नाहीं खिसकत है तनिक हाथ लगाय दे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(तीन चार केवट नाव को खिसकाते हैं)

सीता–[चन्दन अक्षत पुपार्ष्दि ले गंगा को पूजती हुई]

ग़ज़ल

नमो गंगे तरंगे पापहारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी।
अनेकों पापियों को तुमने तारा, पुराणों में लिखी महिमा अपारी।
तुमहीं आकाश गंगे वेद वाणी, तुमहीं धारा अनुपम रूपधारी।

हे देवी मैं यदि पति तथा देवर सहित कुशल पूर्वक लौट आऊँगी तो तुम्हारी पूजा करूँगी।

आकाशवाणी–तथास्तु–तथास्तु–तथास्तु (सब के सब पार होते हैं)

पटाक्षेप

–०००–

द्वितीय दृश्य

स्थान–गंगा पार का तट

(राम लक्ष्मण सीता तथा निषाद का प्रवेश)

राम–(मुद्रिका उतराई देते हुए) हे निषाद तुमको यह मुद्रिका उतराई में दी जाती है।

निषाद–(राम से) रागिनी

ना लेऊँ महाराज मुदरिया ना लेऊँगा जी।
तिहारे चरन पखारे ते तिहारे चरन पखारे ते।
दरिद्दर पारे ह्वैगौ जी दरिद्दर पारे ह्वै गयो जी।

चौपाई

अब कछु नाथ न चाहिय मोरे। दीनदयालु अनुग्रह तोरे।
फिरती बार नाथ मोहि देवा। सो प्रसाद मैं शिर धरि लेवा।
नाथ साथ रह पन्थ दिखाई। पर्ण कुटी रचि करब सहाई।

राम–हे निषादराज! तुम लोगों को साथ लेना मेरे नियम के विरुद्ध हैं। अब तुम अपने घर को जाओ मैं तुमसे प्रसन्न हूँ।

(निषाद का विदा होना) पटाक्षेप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तृतीय दृश्य

स्थान—बाल्मीकि आश्रम

[बाल्मीकि मुनि बैठे हैं। राम, लक्ष्मण, सीता का प्रवेश)

राम—(मुनि को प्रणाम करते हैं—हे मुनिनाथ ! कृपा कीजिये)

(लक्ष्मण सीता जी प्रणाम करते हैं)

बाल्मीकि—जय हो कल्याण हो, लोक लोक में सम्मान हो।

राम—(बाल्मीकि से) चौपाई

देखि पाँय मुनि नाथ तुम्हारे। भये सुकृत सब सुफल हमारे।
अब जहँ राउर आयसु होई। मुनि उद्योग न पावै कोई।
तहँ रचि रुचिर पर्ण तृणशाला। वास करौं कछु काल कृपाला।
अस जिय जानि कहेहु सोई ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित तहँ जाऊँ।

बाल्मीक—(राम से) छन्द

श्रुति सेतु पालक राम तुम जगदीश माया जानकी।
जो सृजति जग पालत करति रूखपाय कृपानिधान की।
जो सहस शीश अहीश महि धर लषन सचराचर धनी।
सुर काज हित नरराज तनु धर चलेउ मर्दन खलअनी।

सोरठा

राम स्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धिवर।
अविगति अकथ अपार, नेति-नेति नित निगम कह।

चौपाई

जग पेखन तुम देखन हारे। विधिहरि शम्भु नचावन हारे।
तेउ न जानहिं मर्म तुम्हारा। और तुमहिं को जानन हारा।
सो जाने जेहि देह जनाई। जानत तुमहिं तुमहिं ह्वैं जाई।
नर तन धरेउ सन्त सुर काजा। कहहु करहु जस प्राकृत राजा।
जिनके श्रवण समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरिनाना।
भरहिं निरन्तर होंहि न पूरे। तिनके हिये सदन तव रूरे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोचन चातक जिन करि राखे। रहहिं दरश जलधर अभिलाषे।
निदरहिं सिन्धु सरित सर वारी। रूपबिन्दु लहि होहिं सुखारी।
तुमहिं छांड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिनके उर माहीं।
जिनहिं राम तुम प्राण पियारे। तिनके उर शुभ सदन तुम्हारे।
सुनहु वचन मम रघुकुल नायक। आश्रम कहौं समय सुखदायक।
चित्रकूट गिरि करहू निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू।

राम–जो आज्ञा (कहकर विदा होते हैं और भरद्वाज मुनि को प्रणाम करते हैं)

पटाक्षेप

चतुर्थ अंक–अन्तर्दृश्य

स्थान—वन मार्ग

सुमन्त–(मार्ग में आप ही आप) रागिनी (गाता है)

अवध में कहा मुख ले जाऊँ। कहूँ क्या पूछें जब राजा। टेक।
बिगड़ गयी बनकर सभी, उलट गई सब बात।
क्या थी क्या क्षण में भई, विधि सों कहा बसात।
राम लखन बन को गये, मैं घर लौटा आय।
प्राण अभी निकसे नहीं, कीजे कौन उपाय।

पटाक्षेप

—०००—

चतुर्थ दृश्य–दशरथ स्वर्ग

स्थान—कोपभवन

(दशरथ मूर्छित पड़े हैं, कैकेयी बैठी हैं, सुमन्त का प्रवेश)

दशरथ–(सुमन्त से) राग भैरवी "तर्ज फिर मिलना"

कहाँ हैं मेरे प्राण पियारे, सखा कहाँ हैं राज दुलारे।
अंखियाँ तरस रहीं जिनके दरश को, देह प्राण ते जो मोहे प्यारे।
मेरे दुख को सुनकर मन्त्री, क्यों न पलटि आये रघुबर प्यारे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हा हत भाग्य जानि कर मुझको, क्या वे बनहिं सिधारे ।
चौथी अवस्था यह दुख पायो, प्राण होहिं किन तन से न्यारे ।
सिगरि अयोध्या उन बिन सूनी, उपवन लगैं उजारे ।
लगत चन्द्र बिन जिमि निशि सूनी, फीके निशि बिनु तारे ।
मम गति तैसी उन बिन मन्त्री, कहूँ मैं सत्य पुकारे ।
राम बिना सब प्राण बचै ना, विरह व्यथा मम तन को जारे ।

सुमन्त-(दशरथ से) भैरवी (ऊपर की तर्ज)

नाथ भानुकुल भानु सुनो, प्रभु कहूँ मैं शीश नबाये ।
तमसा वास कियो रघुनन्दन, सुरसरि तीर नहाये ।
केवट से तब नाव मंगाई, बैठे तब प्रभु हर्षाये ।
सिय चढ़ाय प्रभु बोले लषन से, बैठेउ चाप चढ़ाये ।
यह निज नैन देख्यो स्वामी, केवट नाव चलाये ।
रघुपति मोहे कहा बहु भाँति, कहो पितहिं समुझाये ।
तुमरी आज्ञा पूरण करि, मै आवहुँ मन हर्षाये ।

दशरथ-(आप ही आप) चौपाई

हा रघुनन्दन, प्राण पिरीते । तुम बिनु जियत बहुत दिन बीते ।
हा जानकी लषन हा रघुवर । हा पितु हित चित चातक जलधर ।

राग गौरी

हा सिय राम लषन मम प्यारे, तपसी होकर बन को सिधारे ।
राज देन को शुभ दिन साधा, ताहि समय सुत बन को सिधारे ।
राम गये वन प्राण न जाहीं, केहि विधि करूँ या तन ते न्यारे ।
हा रघुवर पितु आज्ञाकारी, वन किमि बिचरेहु होय सुखारे ।
हा शिवशङ्कर तन कैसे धारूँ, कैसे सहूँ ये दुसह दुख भारे ।
प्राण पयान करूँ या तन ते, पुत्र परम प्रिय बिरह तुम्हारे ।
हा जगदीश्वर अन्तर्यामी, वेगि हरहु अब प्राण हमारे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हे राम हे राम राम राम [प्राण त्यागते हैं] (रानियों का प्रवेश)

(रनवास में कोलाहल – रोदन होता है)

वशिष्ठ (प्रवेश) शोक त्यागो शोक त्यागो, यह जगत इसी तरह स्वप्नमय है (मन्त्री से) हे सुमन्त भरत को बुलाओ अन्त्येष्टि करवाओ, जो कुछ होनहार था हो चुका, दूत भेजो। हे परमात्मन् तेरी माया।

[दूत भरत को लेने जाते हैं]

परदा गिरता है।

–:o:–

पाँचवाँ दृश्य – "भरतागमन"

स्थान—कैकेयी भवन

(कैकेयी मन्थरा सहित बैठी है)

"भरत शत्रुघ्न का दूत सहित प्रवेश और माता को प्रणाम करना।"

कैकेयी–(भरत के मस्तक पर हाथ रखती है) हे मन्थरा मंगल गाने वालियों को शीघ्र बुला ला, देख तो देर न हो। मैं आरती सजवाती हूँ।

(मन्थरा जाती है)

(भरत की आरती उतारती हुई)

चौपाई

जियहु लाल युग युग जग माहीं। होहिं कृपालु ईश तुम पाहीं।
देखहुँ तुमहिं सशोच दुलारे। नैहर कर कहु कुशल हमारे।

भरत–(कैकेयी से)

नैहर तोर कुशल सब भाई। कहु अब मम कुल कुशल भलाई।
कहु कहँ तात कहाँ सब माता। कहँ सिय राम लषण प्रिय भ्राता।

भरत—(कैकेयी से)

तात बात मैं सकल सम्हारी। भइ मन्थरा सहाय विचारी।
कछुक काज विधि बीच बिगारेउ। पिता तोर सुरलोक सिधारेउ।

भरत–हा तात हा तात (मूर्छित होते हैं कैकेयी उठाती है)

हे आर्य! अन्त समय आपके दर्शन न हुये, चलते समय मुझे राम को न सौंपा (कैकेयी से) हे माता महाराज के स्वर्ग का क्या कारण हुआ! सुनाओ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कैकेयी-(भरत से) चौपाई

सुनहु भरत तज सोच गलानी । दीन्ह नृपति रामहिं रजधानी ।
यह उपाय मैं लै बर कीन्हा । तुमहिं राज रामहिं वन दीन्हा ।
सो सुनि नृपति भये दुख दीन्हा । तजे प्राण रहे राम अधीना ।

भरत-(फिर अचेत हो भूमि पर गिरते हैं । हे भ्राता! हे राम! हे लक्ष्मण! कहाँ हो ? (कैकेयी से) रागनी (माँड)

तेरे मन में ऐसी कुमति बसी क्यों राम को वन जो दीना ।
अवधपुरी को सूनी कर तुम जग में अपयश लीना ।

(१)

हंस वंश दशरथ जनक, राम लषन से भाई ।
जननी तू जननी भई, विधि से कहा बसाई ।

(२)

राम विरोधी हृदय ते, प्रकट कीन्ह विधि मोहि ।
मो समान को पातकी, बादि कहौं कछु तोहि ।

(३)

राम लषन बन बन फिरैं, धर मुनियों का वेश ।
तू माता माता भई, जरा न दुख का लेश ।

चौपाई

जोपैं कुरुचि रही जिय तोहि । जन्मत काहे न मारेसि मोहि ।
पेड़ काटि तै पल्लव सींचा । मीन जियन हित बारि उलीचा ।
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही । मरण काल विधि मति हर लीन्ही ।
बिधिहुं न नारि हृदय गति जानी।सकल कपट अघ अवगुण खानी ।
सरल सुशील धर्मरत राऊ । सो किमि जानहि तीय स्वभाउ ।

कैकेयी-(भरत से)

तात राऊ नहिं सोचन योगू । बड़े सुकृत यश कीन्हउ भोगू ।
अस अनुमानि शोक परिहरहू । सहित समाज राज्य पुर करहू ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भरत– कैकेयी से
कैहरुवा

यह बड़ा अनरथ कीना मेरी माता–
कहाँ गये राम कहाँ सिया लक्ष्मण। कहाँ गये रघुकुल मणि मम ताता।
पितु मम बिछुड़े और भ्राता भी बिछुड़। ऐसो दुहस दुख सह्यो नहिं जाता।
पितु सुर पुर बन रघुकुल केतू। ऐसो कठिन दुख दीन बिधाता।

कैकेयी– भरत से

यह सब कुछ बेटा तेरे लिए कीना–
रामहिं राज राऊ जो ठाना, राम लषन सिय तब बन दीना।
राज पाट सब तुमहिं दिलाके, मैं निज शिर यह अपयश लीना।

(मन्थरा का प्रवेश)

शत्रुघ्न–(मन्थरा से) थियेटर

अरी तू पापिन अरु चाण्डालिन है तू बड़ी बे पीर।
हट री यहाँ से आई कहाँ से, नहीं करूँ दो चीर।
कुल यह सारा तैंने उजारा, मीन बिना जिमि नीर।
तड़पत हैं हम सब पुरवासी, रटैं राम रघुवीर।
मम भ्राता को जग माता को, बनवाया फकीर।
जगत की जननी सीता माता, कहाँ लक्ष्मण रणधीर।

(लात मारते हैं और मन्थरा गिरती है)

मन्थरा–हाय दैया भलाई के बदले बुराई हुई लाला ने मारा (कहती हुई भागती है)

(भरत, शत्रुघ्न, कौशल्या भवन की ओर विदा होते हैं)

पर्दा गिरता है।

–०००–

छठा दृश्य–भरत कौशल्या सम्वाद

स्थान–कौशल्या भवन

(कौशल्या माता विधवा वेश में बैठी हैं। भरत शत्रुघ्न का प्रवेश)

भरत– (कौशल्या के चरणों में गिरकर)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मातु तात कहँ देहु दिखाई। कहाँ सिय राम लषन प्रिय भाई।
को त्रिभुवन मोहि सरस अभागी। गति असि तोर मातु जेहि लागी।
पितु सुरपुर बन रघुकुल हेतु। मैं केवल सब अनरथ हेतू।

कौशल्या (–भरत को गोद में बैठा हृदय से लगा ओढ़नी से आँसू पोंछते हुये)

चौपाई

अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू। कुसमय जानि शोक परिहरहू।
काहुहिं दोष देहु जनि ताता। भा मोहि सब विधि बाम विधाता।
राम लषन सिय बनहिं सिधारे। गई न संग न प्राण पठाये।
यह सब भा इन आँखिन आगे। तउ न तजा तन प्राण अभागे।
जियन मरन भल भूपति जाना। मोर हृदय शत कुलिश समाना।
मोहि न लाज निज नेह निहारी। राम सरिस सुत मैं महतारी।

भरत– (कौशल्या से)

जे-अघ मातु पिता गुरु मारे। गाइ गोंठ महि सुरपुर जारे।
जे अघ तिय बालक बध कीन्हे। मीत महीपति माहुर दीन्हे।
लोभी लम्पट लोलुप चारा। जे ताकहिं परधन परदारा।
पावौं मैं तिन की गति घोरा। जो जननि यह सम्मत मोरा।
जे न भजहिं हरि नर तनु पाई। जाहि न हरि हर सुयश सुहाई।
तिनकी गति मोहि शङ्कर देऊ। जो जननी यह जानौं भेऊ।

दोहा–जे परिहरि हरिहर चरण, भजहिं भूतगण घोर।
तिनकी गति मोहि देहु विधि, जो जननी मति मोर।

कौशल्या– भरत से चौपाई

राम प्राण ते प्राण तुम्हारे। तुम रघुपतिहि प्राण ते प्यारे।
विधु विष चुवै स्रवै हिम आगी। होहिं वारिचर वारि विरागी।
भये ज्ञान वरु मिटै न मोहू। तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू।
मत तुम्हार अस जो जग कहहीं। सो सपनेहु सुख सुगति न लहहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(वशिष्ठ जी का प्रवेश)

वशिष्ठ– (भरत से)

करहु तात पितु वचन प्रमाणा। नृपहि वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राणा।
परशुराम पितु आज्ञा राखी। मारी मातु लोक सब साखी।

भरत– (हे गुरु मुझे अपने प्यारों के कारण असह्य वेदना हो रही है। हाय मेरे ही हेतु महाराज का स्वर्गवास हुआ, राम का बनवास हुआ)

श्लोक–पितरि स्वर्गमापन्ने, रामे चारण्यमाश्रिते।
किम्मे जीवितसामर्थ्यं, प्रवेक्ष्यामि हुताशनम्।

वशिष्ठ–(भरत से)

दोहा–सुनहु भरत भावी प्रबल, दुख सुख जीवन साथ।
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ।

चौपाई

अस विचारि केहि दीजिय दोषू। वृथा काहि पर कीजिय रोषू।
तात विचार करहु मन माहीं। शोच योग दशरथ नृप नाहीं।
शोचिय विप्र जो वेद विहीना। तजि निज धर्म विषय लवलीना।
शोचिय नृपति जो नीति न जाना। जेहि न प्रजा प्रिय प्राण समाना।
शोचिय वैश्य कृपण धनवानू। जो न अतिथि शिव भक्त सुजानू।
शोचिय शूद्र विप्र अपमानी। मुखरमान प्रिय ज्ञान गुमानी।
शोचिय पुनि पतिवञ्चक नारी। कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी।
शोचिनीय नहिं कौशल राऊ। भुवन चारि दश प्रगट प्रभाऊ।

दोहा–शोचिय गृही जो मोह बस करै कर्म पथ त्याग।
शोचिय यती प्रपंच रत, विगत विवेक विराग।

भरत– (आप ही आप) ग़ज़ल

बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है।
हमारी मातु की करनी सकल दुनिया से न्यारी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगी रघुवंश में अगनी अवध सारी उजारी है।
विमुख जिन राम से कीना ऐसी जननी हमारी है।

वशिष्ठ–हे वत्स भरत ! धैर्य्य धर कर महाराज की अन्त्येष्टि क्रिया करो। तदन्तर तुम्हारी इच्छानुसार राम के पास वन में ही चलेंगे फिर जैसी तुम्हारी इच्छा होगी सो करना।

भरत–जो आज्ञा हो नाथ !

परदा गिरता है।

—०००—

सप्तम दृश्य–बन-भ्रमण

स्थान–रामगिर्याश्रम

(राम, लक्ष्मण, सीता वन में घूमते वृक्ष के तले बैठते हैं)

सीता– (पैर में चुभे हुए कांटों को निकालती हुई) (आप ही आप)

रागिनी–(तर्ज–भरने दे जल नीर)

जगदीश्वर तेरी महिमा क्या यह दिन भी दिखलाया।
हम घर को त्याग कर आये सुख सब अपने बिसराये।
अब बन-बन डोलन आये ऐसी है तेरी माया। जगदीश्वर०।
हम कन्द मूल फल खाये सो भी कभी कभी नहीं पाये।
तपसा हम कहलाए तो भी पार अभी नहीं पाया।

राम–(सीता से) (ऊपर की तर्ज)

सुन सुन री मेरी प्यारी तू काहे घबरावै।
मैं बहुत भांति समुझाया तेरे मन में जरा नहिं आया।
दुख बन का सभी दर्शाया, अब काहे को दुख गावै।
तू संग हमारे धाई बन बन में डोलन आई।
राज भवन तज आई अब काहे पछतावै।

सीता–हे आर्य पुत्र ! गत रात्रि में दासी ने ऐसा स्वप्न देखा है कि भरत सेना सहित यहाँ आये हैं और दुःखित सास भी साथ में आयी हैं।

पटाक्षेप

०–०–०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अष्टम दृश्य

स्थान—गंगा तट

(निषाद अनेक केवटों सहित खड़ा है, भरत जी का सेना सहित प्रवेश)

निषाद--(केवटों से, भरत की ओर हाथ उठाकर)

चौपाई

कारण कवन भरत बन जाहीं । है कछु भाव कपट मन माहीं ।
जानहिं सानुज रामहिं मारी । करौं अकंटक राज सुखारी ।
होहु सजग सब रोकहु घाटा । ठाटहु सकल मरण कर ठाटा -
तजौं प्राण रघुनाथ निहोरे - दुहुँ हाथ मुद मोदक मोरे -

केवट समूह—(शस्त्र मुग्दर लेते हुये) हुकुम होई, परागराज से अजुध्या तलक मैदान करिहन, हम सब लरिहन, मरिहन, भरत का गिनती ?

कोई—(बांये हाथ) अः छीं ।

एक केवट—अरे कोने छींकहि रे, नकुरा धैके काटिन लहों, राम धे ?

निषाद—कुछ चिन्ता नाहिन रे, समर जीतव भले सगुन भे

एक बुढ़वा—(शकुन विचार कर ऊँचे स्वर से) अरे का, इकलांधे उधियाई परेऊ पिरथी उठाई मूड़ पर धरेऊ । भरत राम को मनावन जात अहैं लरे भिरे नाहिन जात अहैं ।

निषाद—भले कहेऊ बाबा, अब हमहुँ न जाव, राउर बूढ़ हन सज्ञान हन हम कल्हि के लरिका, मूढ़ हन अज्ञान हन हम का जानि । (केवटों से) अरे पलटि आइयारे मोरे भैया । तुमको राम दुहाई, आगे न जैयो । भरत मनावन जात हैं लरे भिरे राम से कोऊ नाय जात हन ।

(सब केवट लौट आते हैं)

निषाद—(भरत जी को निकट आते देख) महाराज के चरण छुइत, मोर बखरी शृङ्गवेर गांव । मैं जाति के केवट मोर गुह नाम ।

भरत—(आशीर्वाद देते हैं) हे केवट राज ! सब शकुल से तो है । सब मिल कर चित्रकूट को विदा होते हैं)

(सर्वे निष्क्रान्ताः)

(परदा उठता है)

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवम दृश्य--भरत प्रबोध

स्थान–चित्रकूट

(राम लक्ष्मण सीता बैठे हुये हैं, एक किरात का प्रवेश)

किरात–(माथा टेक कर राम से) हे नाथ, भरत शत्रुघ्न बड़ी भीड़ भाड़ लै आवत हैं और साथ मा हाथी, घोड़ा, पीनस पालकी अनगिनती लावत हैं।

लक्ष्मण–हे आर्य ! मेरे विचार में भरत सेना सहित हमको जीतने के हेतु आता है। अहा ! राजमद बड़ा प्रबल है, जिसने भरत की बुद्धि विपरीत कर दी है।

(धनुष चढ़ा) रागिनी–(तर्ज–मूरख छोड़ वृथा अभिमान)

दीजे मोहि आज्ञा कृपानिधान।

देखि भरत कर कपट प्रीति तुम, आवत सजि सामान।
हमको जानि अकेले वन में, मारन पहुँच्यो आन।
पिछला क्रोध मैं आज प्रकट करूँ, हतूँ सब कह एक आन।
बधे पाप नहिं धर्म हीन कहूँ, सुनिये कृपा निधान।

राम–(लक्ष्मण से) चौपाई

कही तात तुम नीति सुहाई। सबते कठिन राजमद भाई।
मसक फूंक बरू मेरु उड़ाई। होइ न नृप मद भरतहिं भाई।
लषन तुम्हार शपथ पितु आना। शुचि सुबन्धु नहिं भरत समाना।

नेपथ्य से–(आकाश वाणी)

हे लक्ष्मण ! तुम्हारे बाहुबल को धन्य है पर भरत इस योग्य नहीं, उचित अनुचित को सोच समझ कर काम करना चाहिये।

(भरत शत्रुघ्न एवं सुमन्तादि के सहित वशिष्ठ तथा कौशल्यादि का प्रवेश। यथायोग्य मिल कर प्रणाम दण्डवत करते हैं)

राम–(वशिष्ठ से) हे मुनिगण! आपके दर्शनों से कृतार्थ हुआ, श्री पिता जी कुशल पूर्वक तो हैं ?

वशिष्ठ–(राम से) हे राघव ! तुम्हारे शोक में राजा का स्वर्गवास हो गया। दैवेच्छा प्रबल है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम–(मूर्छित होते हैं) रागिनी (सचेत हो, वशिष्ठ जी के उठाने पर)

करी क्या हाय कर्त्ता ने, विपत सब एक दम डारी।
पिता को स्वर्ग, बन हमको, अवध एक बार ऊजारी।

श्लोक–किन्तु तस्य मया कार्यं दूर्जातिन दुरात्मनः।
यो मृतो मम शोकेन स मया न च संस्कृतः।

दोहा–जो देखूँ भेष माता का, मेरी छाती फटै भ्राता।
था एक दिन हाय बनने का, बिगड़ने की है अब बारी।

श्लोक–सीते मृतस्ते श्वशुरः पितृहीनोऽसि लक्ष्मणः।
भरतो दुःखमाचष्टे, स्वर्गतिं पृथ्वीपते।

दोहा—हुई बरबाद रजधानी, ये आई एक दम बारी।
अवध तेरी हुई ख्वारी, ये उलटी पड़ गई सारी।

बशिष्ठ–वत्स ! तुम सब कुछ जानते हो, बहुत शोक न करो, धैर्य धरो।

राम–(आँसू पोंछते हुए) (राग सोरठ)

हा सुत वत्सल तात हमार।
मन्द भाग मुझ हित हां तनु तज, पायो दुःख अपार।
दशा हुई यह आज हमारी, कीनो काल प्रहार।
चलत तुमहिं नहिं देखन पायो, हा हा तात हमार।
मम वियोग हित तात हमारे, गये परलोक मंझार।

वशिष्ठ–(राम से) हे बेटा ! तुम्हें व्याकुल देख भरत की क्या दशा हो रही है, देखो सब धैर्य दो, संसार का ऐसा ही व्यवहार है। तुम शास्त्रज्ञ हो, पुत्र का यही धर्म है कि दोनों लोक में पिता की सेवा करें अर्थात आज्ञा पालन द्वारा यहाँ सेवा करें और श्राद्ध तर्पण जलाञ्जलि द्वारा परलोक सेवा करना, पितृ ऋण से मुक्त होना।

(राम लक्ष्मण सीता वशिष्ठ जी सहित नेपथ्य की ओर जाकर अन्त्येष्टि श्राद्धादि से निवृत्त हो आते हैं)

भरत–(राम से) हे आर्य ! अयोध्या में चल कर आप राज्य कीजिये और मैं आपके बदले चौदह वर्ष पर्यन्त बन में रहूँगा एवं पिता की आज्ञा पूर्ण करूँगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम–(भरत से) हे सौम्य ! पिता की आज्ञा मेरे लिये है और मेरी आज्ञा तुम्हारे लिये है। तुम अयोध्या में जाकर प्रजा की रक्षा करो। "प्रजानां रक्षणं दानं" यही हम क्षत्रियों का कर्म है और यही अपना मुख्य धर्म है।

रागिनी

भारत वीर पलटि जाओ घर को,
पलटि जाओ घर को लवटि जाओ घर को।
बैठे अयोध्या राज्य करो भइया निर्मल सरयू तीरं। पलटि०।
भूखन को भ्राता भोजन दीजो, नंगन को पहिराओ चीर।

भरत–(राम से) नाथ! मैं आपकी गद्दी पर नहीं बैठ सकता, अपने चरण कमल की पादुका दे दीजिये। आपके लौटने की अवधि तक इनकी पूजा करके धैर्य धरूँगा।

(राम भरत को पादुका देते हैं सब अयोध्यावासी प्रणामादि करके विदा होते हैं)

पटाक्षेप

दसवां दृश्य–वन स्त्री सम्वाद

स्थान–दण्डक वन

(राम लक्ष्मण खड़े हैं, एक ओर सीता खड़ी हैं, दो वनवासिनी स्त्रियों का हाथों में फल एवं लोटे में जल लिये हुये प्रवेश)

दो वन स्त्री–(सीता से) रागिनी

अरी तुम कौन हो री प्यारी-वन वन डोलन हारी।
चन्द्रमुखी पिक बयनी कामिनि गजगामिनि मतवारी।
खञ्जन मीन कमल मृगलोचनि नख सिख वदन संवारी।
श्यामल गौर किशोर मनोहर रहे वेष मुनिधारी।
ये दोउ तुमरे कहा लगत हैं कोटि काम छविहारी।

सीता–(वन स्त्रियों से) (२)

अरी हम कौन हैं री विपदा भोगन हारी।
सीता नाम धाम मिथिलापुर राजा जनक दुलारी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सास की सौत दिया वन हमको राज समय दुख भारी ।
श्याम स्वरूप भूप दशरथ सुत तिनकी हूँ मैं नारी ।
गोरा गात लषन लघु देवर धीर वीर बलकारी ।

(जल तथा फल देकर वन स्त्री बिदा होती हैं)

सीता -(फल हाथ में लेकर–राम से) रागिनी

महाराज इसका नाम क्या यह कौन सा फल है ।
छिक्कल व बीज हीन मधुर जिसका दल है ।
क्या हमको रोज ऐसे ही फल खाने को मिलेंगे ?
(जल दिखाती हुई) देखो यहाँ का कैसा अधिक शरद जल है ।

रामचन्द्र लेटे हुए हैं–काक रूप जयन्त का प्रवेश सीता के चरण में चोंच मार कर भागता है–रामचन्द्र सींक वाण से नेत्र भङ्ग करते हैं ।

सर्वे निष्क्रान्ताः ।

पटाक्षेप

ग्यारहवां दृश्य--मुनियों का दर्शन

स्थान–दण्डकारण्य

(एक ओर सुतीक्षण तथा अगस्त्यमुनि आसन लगाये बैठे हैं । दूसरी ओर अत्रि मुनि अनसूया एवं शिष्ट मण्डली सहित विराजमान हैं । राम लक्ष्मण सीता का प्रवेश)

राम–(सुतीक्ष्ण एवं अगस्त्य मुनि को प्रणाम करते हुये अत्रि मुनि को प्रणाम करते हैं ।)

अत्रिमुनि–(आशीर्वाद देते हुये आरती उतार कर स्तुति करते हैं)

छन्द–(तर्ज–प्रमाणिक सुर खम्माच)

(१)

नमामि भक्त वत्सलं कृपालुशीलकोमलम् ।
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनाँ स्वधामदम् ।
निकाम श्याम सुन्दरं भवाम्बु नाथ मन्दिरम् ।
प्रफुल्ल कञ्ज लोचनं मदादि दोष मोचनम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२)

प्रलम्ब बाहुविक्रमं प्रभो प्रमेय वैभवम् ।
निषङ्ग चाप शायकं धरं त्रिलोक नायकम् ।
दिनेशवंशमण्डनं महेशचापखण्डनम् ।
मुनीन्द्रसन्तरञ्जनं सुरारिवृन्दभञ्जनम् ।

(३)

मनोज वैरि वन्दितं अजादि देव सेवितम् ।
विशुद्ध बोध विग्रहं समस्तदुःखतापहम् ।
नमामि इन्दिरापतिं सुखाकरं सतांगतिम् ।
भजे सशक्ति सानुजं शचीपतिं प्रियानुजम् ।

(४)

त्वदंघ्रि मूल ये नरा भजन्ति हीन मत्सरा ।
पतन्ति नो भवार्णवे वितर्कवीचि संकुलम् ।
विविक्त वासिन सदा भजन्ति मुक्तिदं मुदा ।
निरस्य इन्द्रियादिकं प्रयान्ति ते गतिं स्वकम् ।

(५)

त्वमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुम् ।
जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलम् ।
भजामि भावबल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभम् ।
स्वभक्तकल्पपादपं समस्तसेव्यम न्वहम् ।

(६)

अनूपरूपभूपतिं नतोऽहमुर्विजापतिम् ।
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहि मे ।
पठन्ति ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदम् ।
व्रजन्ति नात्र संशयं त्वदीयभक्तिसंयुतम् ।

(सीता अनुसूया के चरण छूती हैं और अनुसूया आशीर्वाद देती हैं)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुसूया–(सीता से) चौपाई

मातु पिता भ्राता हितकारी। अमित सुखप्रद सुनु राजकुमारी।
अमित दान भर्ता वैदेही। अधम सो नारि जो सेव न तेही।
धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपत काल परखिये चारी।
वृद्ध रोग वश जड़ धनहीना। अन्ध बधिर क्रोधी अति दीना।
ऐसेहु पति कर किये अपमाना। नारि पाव यमपुर दुख नाना।
एकै धर्म एक व्रत नेमा। काय वचन मन पति पद प्रेमा।
जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं। वेद पुराण सन्त अस कहहीं।

दोहा–उत्तम मध्यम नीच लघु सकल कहौं समुझाय।
आगे सुनहिं ते भवतरहिं, सुनहु सीय चित लाय।

चौपाई

उत्तम के अस बस मन माहीं। सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं।
मध्यम परपति देखहि कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे।
धर्म विचारि समुझि कुल रहहीं। सो निकृष्ट तिय श्रुति अस कहहीं।
बिन अवसर भय ते रह जोई। जानेहुँ अधम नारि जग सोई।
पति वञ्चक पर पति रति करई। रौरव नर्क कल्प शत परई।
क्षण सुख लागि जन्म शत कोटी। दुख न समझ तेहि सम को खोटी।
बिनु श्रम नारि परम गति लहई। पतिव्रत धर्म छाँड़ि छल गहई।
पति प्रतिकूल जन्म जहँ जाई। विधवा होई पाय तरुणाई।

सोरठा

सहज अपावनि नारि, पति सेवत शुभ गति लहहिं।
यश गावहिं श्रुति चारि, अजहू तुलसी हरिहि प्रिय।
सुन सीता तव नाम, सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं।
तोहि प्राण प्रिय राम, कहेऊँ कथा संसार हित।

[सीता प्रसन्न होकर प्रणाम करती हैं]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम–(अत्रिमुनि से) चौपाई

मुनि तव परम सुयश हम माना। आयसु होइ जाऊँ बन आना।
सन्तत मो पर कृपा करेहु। सेवक जानि तजेहू जनि नेहू।

अत्रिमुनि–(राम से) चौपाई

जासु कृपा अज शिव सनकादी। चहत सकल परमारथ वादी।
ते तुम राम अकाम पियारे। दीनबन्धु मृदु वचन उचारे।
अब जाना मैं श्री चतुराई। भजिय तुमहिं सब देव विहाई।
जेहि समान अतिशय नहिं कोई। ताकर शील कस न अस होई।
केहि विधि कहौं जाहू वन स्वामी। कहहू नाथ तुम अन्तर्यामी।

(रामचन्द्र मुनि को प्रणाम करके विदा होते हैं)

पटाक्षेप

इति चतुर्थ चरित्र दशरथ मरण, वन भ्रमण नाम समाप्तम्।

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंचम दिवस

प्रथम दृश्य--शूर्पणखा नासिका छेदन

स्थान–पंचवटी

(रामचन्द्र, लक्ष्मण, सीता कुटी में बैठे हैं–शूर्पणखा का प्रवेश)

शूर्पणखा–(ठठा मार कर हँसती कूदती नाचती एवं स्तनों पर हाथ रखती हुई राम से) चौपाई

तुम सम पुरुष न मो सम नारी। यह संयोग विधि रचा विचारी।
मम अनुरूप पुरुष जग नाहीं। देखेउँ खोजि लोक तिहुँ माहीं।
ताते अब लगि रहिउँ कुमारी। मनमाना कछु तुमहिं निहारी।

(दर्शकों की ओर मुँह करके) अरे धिक्कार है मेरे भय्या रावण को जो ऐसे ऐसे किशोरों के होते हुए मुझे कुंवारी रहने दिया। अब तो मैं (हँसती-कूदती हुई) ब्याह भी न हो सका तो, नियोग ही कर डालूँगी। हा हा! हा हा हा!!

राम–(शूर्पणखा से, सीता को देख) चौपाई

सुन सुन्दरि मोरी यह बाता। अहै कुमार मोर लघु भ्राता।
देखि तुमहिं अति सुन्दर नारी। अवसि लखन वर लेहिं कुमारी।

शूर्पणखा–(लक्ष्मण के पास जाकर) हा हा हा हा धन्य मोर भाग, सुन्दरता इहाँ लाग। (कहरुवा गाती है)

प्रभु जी हमें वर लेवो,हमें वर लेवो,हमें वर लेवो,मैं हूँ नीकी नारि।
एक तों मैं बाली, मैं बाली, मैं भोली, दूजे भाई दसशीश।
एक तों मैं लम्बी, मैं लम्बी, मैं पतली, दूजे हूँ मस्त जवान।

लक्ष्मण–(शूर्पणखा से) चौपाई

सुन्दरि सुनु मैं उन कर दासा। पराधीन नहीं तोर सुपासा।
प्रभु समरथ कौशल पुर राजा। जो कछु करहिं उन्हें सब छाजा।
सेवक सुख चह मान भिखारी। व्यसनी धन शुभगति व्यभिचारी।
लोभी यश चह चार गुमानी। नभ दुहि दूध चहत कोई प्रानी।

शूर्पणखा–(मुंह मरोड़) ऐं जाउँ तुम्हारे करम माँ नाँहीं सुख लिखा। (राम के निकट जा) (राम से) राग सोहनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरे रूप देख के चन्द्रमा शरमा गया और छिप गया।
मोपै इन्द्र मोहित हो गया, मुझे देखि ऋषियन तप गया।
पर क्या करूँ अब रामचन्द्र, तुम पर मेरा दिल आ गया।
मुझे वेग पत्नी कीजिये, विरहिन का जी घबरा गया।

हे राम ! तुम्हारे भ्राता तो मुझे नहीं वरते अब तुम्हारे पल्ले पड़ती हूँ।

राम–हे शूर्पणखे ! तुम फिर लक्ष्मण ही के निकट जाओ, मेरे साथ तो जनक नन्दिनी हैं।

शूर्पणखा–(लक्ष्मण के निकट जाकर) मोहि को विवाह लेउ नाहिं पछिताई हो।

लक्ष्मण–(नाक कान काटते हैं) अरे निर्लज्ज तुझे वही ब्याहेगा जिसने तृण के समान लज्जा को तोड़ कर फेंक दिया हो।

शूर्पणखा-अरे दैया, अरे मैया, कल्हि के छोकरा मोहि को निर्लज्ज कर डारिस।

रोती हुई भागती है।

पटाक्षेप

:✲:

द्वितीय दृश्य–खरदूषण सम्वाद

स्थान–खरदूषण गृह

(खरदूषण त्रिशिरा मन्त्रियों सहित बैठे हैं शूर्पणखा का रोते हुये प्रवेश)

शूर्पणखा–(खरदूषण से) धिक्कार है तुम्हारे पुरुषार्थ को, जीते जी तुम्हारे जो मेरी यह दशा हुई।

खर–अरी भगिनी ! जल्दी बता तेरी यह दशा किसने की ? किसके सिर पर काल नाच रहा है ?

शूर्पणखा–अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र राम लक्ष्मण पंचवटी में ठहरे हुए हैं। लक्ष्मण ने मेरी यह दशा की है।

दूषण–(मन्त्री से) मन्त्री अभी सेना सजाओ, डंका बजाओ मैं भी आता हूँ।

मन्त्री–जो आज्ञा। (विदा होते हैं)

पटाक्षेप

—०००—

तृतीय दृश्य–खरदूषण वध

स्थान–पञ्चवटी

(एक ओर राम, लक्ष्मण, सीता बैठे हैं दूसरी तरफ से शूर्पणखा को आगे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किये हुए सेना सहित खरदूषण एवं त्रिशिरा का प्रवेश)

राम–हे लक्ष्मण ! राक्षसों का भयंकर कटक आता है, सीता को पहाड़ की गुफा में ले जाओ कोई चिन्ता नहीं इन दुष्टों का संहार करता हूँ।

लक्ष्मण–जो आज्ञा हो (कह कर सीता सहित नेपथ्य की ओर जाते हैं)

खरदूषण–(दूर से दोनों भाइयों को देख मोहित हो मन्त्री से) ये तो अदभुत बालक हैं वाह वाह !

दूषण–(मन्त्री से) अरे भ्रष्ट मति इधर आ, फिर उधर जा आ हा हा !!

चौपाई

सुर नर नाग असुर मुनि जेते। देखे सुने हते हम केते।
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई। देखि नहीं असि सुन्दरताई।
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा। बध लायक नहीं पुरुष अनूपा।
देहिं तुरत निज नारी दुराई। जीवत भवन जाहिं दोउ भाई।
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु। तासु वचन सुनि आतुर आवहु।

मन्त्री–बहुत अच्छा राक्षसराज (जाता है राम के सम्मुख जाकर) अजी राम जी सुनते हो महाराज की ये आज्ञा है कि तुमको छोड़ देंगे, अपनी पत्नी हमें दे दो, दोनों भाई भागो। नहीं तो तुम्हारा मङ्गल न होगा।

राम–(राक्षस से)

आजु भयो बड़ भाग हमारा। तुम्हरे प्रभु अस कीन्ह विचारा।
हम क्षत्री मृगया वन करहीं। तुमसे खल मृग खोजत फिरहीं।
यद्यपि मनुज दनुज कुल घातक। मुनि पालक खल शालक बालक।
जो न होइ बल घर फिर जाहू। समर विमुख मैं हतहुँ न काहू।
रण चढ़ि करिय कपट चतुराई। रिपु पर कृपा परम कदराई।

मन्त्री–(वापिस होकर, खरदूषण से) महाराज ! बिना कटे मरे वे तो नहीं मानेंगे, राक्षस उछल-कूद करते चिल्लाते हुए लड़ते हैं।

खरदूषण त्रिशरा सहित राम के हाथ से मारे जाते हैं।

पर्दा गिरता है।

–०००–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चतुर्थ दृश्य

स्थान–लंका, रावण भवन

(रावण दरबारियों सहित बैठा है। शूर्पणखा का प्रवेश)

रावण–(शूर्प० से) रागिनी तर्ज–मेरे अलबेले से साजन

(१)

अरी मेरी सुनि बहिना री रोती धोती क्यों कर आई।
अभी तू गाती बजाती थी, इठलाती आती थी।
वीरों को लजाती थी, अब अकुलाती क्यों कर आई।

शूर्पणखा–

(२)

अरे सुन मेरे भय्या रे मैं तो नाक कटा कर आई।
भइया मेरि सुनो तुम बातें, वन गई थी करने घातें।
दो बाल मिले वहाँ ताते, संग में सुन्दर नारि सुहाई।

रावण–

(३)

कहे जा हाल अपना सारा, हा तुझे है किसने मारा।
क्या मैं उलट दूं यह जग सारा, जग में किसकी शामत आई।

शूर्पणखा–

(४)

हैं दशरथ के दो छोरा, उन चित्त चुरायो मोरा।
मैं करती रही निहोरा, उनके मन में नहीं समाई।

रावण–

(५)

क्या कोई वैसी सुन्दर नारी, है उसकी क्या पियारी।
उसने जिसका गर्व किया री, जो तू खून बहा कर आई।

शूर्पणखा–

(६)

वो है ऐसी सुन्दर नारी, जो तुम पृथ्वी खोजो सारी।
मिलै न जग वैसी मतवारी, कामिनि कोटि चाँद छविकारी।

रावण–

(७)

तू मुझको यह जतला, नासा कैसे कटी बतला।
ले लूँ झटपट चट बदला, उनके आश्रम में घुस जाई।

शूर्पणखा–

(८)

लक्ष्मण मेरी यह गत कीनी। बड़े भय्या ने सिख दीनी।
देखो लाज शरम सब छीनी, अब क्या बदला लेगा भाई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रावण–(क्रोध पूर्वक झपट कर) (६)

चुप चुप मेरी बातें सुन, तू अपना सिर मत धुन।
सुन लिये हैं सब अवगुन, लाऊँ उनकी नारी चुराई।

शूर्पणखा–(रावण से) चौपाई

अवध नृपति दशरथ के जाये। पुरुष सिंह वन खेलन आये।
जिनकर भुज बल पाई दशानन। अभय भये विचरहिं मुनि कानन।
समुझि परी मोहि उनकी करणी। रहित निशाचर करिहैं धरणी।
देखत बालक काल समाना। परम धीर धन्वी गुण नाना।
तासु अनुज काटी श्रुति नासा। सुनि सब भगिनी करि उपहासा।
बिन अपराध अस हाल हमारी। अपराधी किमि बचहिं सुरारी।
खरदूषण सुनि लाग गुहारा। क्षण मँह सकल कटक उन मारा।
शोभा धाम राम अस नामा। तिनके संग एक नारि ललामा।
रूप राशि विधि नारि सँवारी। रति शति कोटि तासु बलिहारी।

दोहा–चार चतुष्पद चार खग, चार फूल फल चारि।
भ्राता पूरब पुण्य बिन, मिलहिं न ऐसी नार।

सोरठा

अति सुकुमारि पियारि, पटतर योग न आन तेहि।
मैं मन दीख विचारि, अस सुन्दरि जेहि के सदन।

रावण–[शूर्पणखा से] अच्छा सुन चुका अब जा तू चिन्ता न कर मैं इसका उपाय अव शीघ्र करूँगा। [शूर्पणखा जाती है]

(आप ही आप] श्लोक [नेपाली भाषा में]

राग द्वेष का भेल छलछन भवरि सरिई युग् घुम्द छन बीच माहां।
पुत्रा दि मस्त झेछन रिसियन बड़वानल सरीखो छ ताहां।
कामै को जाल्छ ठूलो छत पनि चलियो ताई जालू लाइ फारी।
संसार सागर सहज मां तरिकन, हरिथै बस्न जान्यान्छु पारी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौपाई

सुर नर असुर नाग जग माहीं । मोरे अनुचर सम कोउ नाहीं ।
खरदूषण मो सम बलवन्ता । तिनहिं को मारै बिनु भगवन्ता ।
जन रंजन भंजन महि भारा । जो जगदीश लीन्ह अवतारा ।
तो मैं जाइ बैर हठि करिहौं । प्रभु शरतें भव सागर तरिहौं ।
होय भजन नहिं तामस देहा । मन क्रम वचन मंत्र दृढ़ येहा ।
जो नर रूप भूप सुत कोऊ । हरिहौं नारि जीति रण दोऊ ।

(मारीच के पास जाता है)

पटाक्षेप

—०००—

पांचवा दृश्य--रावण मारीच सम्वाद

स्थान—समुद्र तट

(मारीच बैठा है— रावण का प्रवेश)

मारीच—(रावण को प्रणाम करता है) हे राक्षसराज ! आज अकेले यहाँ कैसे आये ? क्या आज्ञा है ?

रावण—(मारीच से) चौपाई

सुन मारीच निशाचर भाई । चलहु मोर संग जहँ रघुराई ।
होहु कपट मृग तुम छलकारी । जेहि विधि हरि आनों नृपनारी ।

मारीच—(रावण से)

मोर वचन सुनो दशशीशा । ते नर रूप चराचर ईशा ।
तासों तात बैर नहीं कीजे । मारे मरिय जियाये जी जे ।
मुनि मख राखन गयउ कुमारा । बिनु फर शर रघुपति मोहि मारा ।
शत योजन आयेउँ क्षण माहीं । तिन सन बैर किये भल नाहीं ।
रा-अस नाम सुनत दशकंधर । रहत प्राण नहिं मम उर अन्तर ।
जो नर तात तदपि अति शूरा । तिनहिं विरोध न पाइय पूरा ।

रावण—(मारीच से)

वेगि मरसि तैं किन चण्डाले । जन्मत मातु पिता कुलघाले ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा। कहु जग मोहिं समान को योधा।

मारोच–जो आज्ञा चलो-चलो मैं कपट-मृग होता हूँ जीवन से हाथ धोता हूँ।

(दोनों जाते हैं)

पर्दा उठता है।

-०००-

छठा दृश्य–सीता हरण

स्थान–पञ्चवटी

(राम, लक्ष्मण एवं सीता बैठे हैं। कपट मृग मारीच का प्रवेश)

सीता–(मृग देखकर राम से) चौपाई

सुनहु देव रघुवीर कृपाला। यह मृग कर अति सुन्दर छाला।
सत्य संध प्रभु वध कर तेही। आनहु चर्म कृपा कर येही।

(गद्य) हे आर्य्य ! कैसा विचित्र यह मनोहर मृग है, इसका चर्म अवश्य ही उत्तम होगा।

राम–(लक्ष्मण से) हे भ्राता लक्ष्मण ! मैं इस मृग को मार कर आता हूँ तुम सीता की बुद्धि बल से समय बिचार कर रक्षा करना।

लक्ष्मण–(जो आज्ञा) रामचन्द्र मृग के पीछे दूर तक जाते हैं (नेपथ्य से) हा लक्ष्मण ! हा लक्ष्मण ! ! शब्द होता है, सीता जी कपट मृग के इस शब्द को सुन चकित होती हैं।

सीता–हे लक्ष्मण ! तुम्हारे भ्राता संकट में पड़ हुए हैं शीघ्र ही जाकर सहायता करो।

लक्ष्मण–(सीता से) चौपाई

सौंपि गये मोंहिं रघुवर थाती। जो तजि जाऊँ तोष नहिं छाती।
भृकुटि विलास सृष्टि लय होई। सपनेहु संकट परई कि सोई।
अस जियजानि सुनहु मम माता। पूछत कहा कहब मैं बाता।

सीता–हे लक्ष्मण ! तुम्हारा अभिप्राय समझ गई, तुम अपने भ्राता का अनिष्ट चाहते हो। अवश्य तुम्हारी मेरे लिये कुवासना है। क्यों भाई की सहायता को नहीं जाते हो ?

लक्ष्मण–हे माता अवश्य ही कुछ न कुछ अनर्थ होने वाला है, जो तुम ऐसे अकथनीय शब्द कहती हो। अस्तु मैं अभी जाता हूँ। इस रेखा को लाँघकर बाहर न आना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[कुटी के चारों ओर रेखा खींच, प्रणाम करके विदा होते हैं]

[अति रूपधारी रावण का प्रवेश]

रावण–[चारों ओर देखता हुआ गाते हुए]

प्रभाती 'राग'

भिक्षा देवो कुटी से माता, जोगी द्वारे आया है।
देर भई मोहे द्वारेहि ठाड़े, कोई देन नहीं आया है।
बहुत दिनन का भूखा प्यासा, आश्रम यहाँ एक पाया है।
बिना भिक्षा मैं जाने का नाहीं, आसन यहाँ रमाया है।
शापूं जो भिक्षा नहिं पावों, मन में यही ठहराया है।

सीता–[रेखा के अन्दर से भिक्षा देती हैं] भो अतिथे! भिक्षा ग्रहण कीजिये।

रावण–अरी माई मैं बन्द भिक्षा नहीं लेता, बाहर आ, भिक्षा ला, दीक्षा ले, भिक्षा दे [सीता रेखा लाँघकर बाहर आती हैं। रावण अँचल पकड़ झोली में डालता है।]

सीता–[रावण से] रागिनी

[१]

वृथा अभिमान करता है अरे मतिमन्द तू बल का।
अकेली जानकर मुझको वचन बोला है तू छल का।
अरे हट दूर जा पापी न पकड़े पल्ला अँचल का।

रावण–[सीता से] [२]

नहीं जग में कोई मुझसा ठिकाना क्या मेरे बल का।
तू बोले और के भोरे पता नहिं तुझको मम बल का।
तेरे पति को करूं भक्षण न पीऊँ घूंट एक जल का।

[रावण सीता को नेपथ्य की ओर ले जाता है]

पर्दा उठता है

—०००—

सप्तम दृश्य—सीता विलाप

स्थान—वन मार्ग

[रावण रथ में बैठाये सीता को ले जाता है]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीता–(आप ही आप) चौपाई

हा जगदीश देव रघुराया । केहि अपराध बिसारेहु दाया ।
आरत-हरण-शरण सुखदायक । हा रघुकुल सरोज दिन नायक ।
हा ! लक्ष्मण तुम्हार नहिं दोषा । सो फल पायेउँ कीन्हेउँ रोषा ।
कैकेयी मन जो कछु रहेऊ । सो विधि मोहि आज फल दयेऊ ।
विपति मोरि को प्रभुहिं सुनावा । पुरोडाश चह रासभ खावा ।

जटायु का प्रवेश ।

जटायु–(रावण से) अरे दुष्ट खड़ा रह, कहाँ भागता है ?

चौपाई

सीता पुत्री करसि जनि त्रासा । करिहौं यातुधान कुल नासा ।
अहह प्रथम बल मम तनु नाहीं । तदपि ज्ग्ग देखों मैं ताहीं ।
रे रे दुष्ट ठाड़ किन होई । निर्भय चलसि न जानसि मोही ।
तजि जानकिहि कुशल गृह जाहू । ना हित सत्य सुनहु बहु बाहू ।
राम रोष पावक अति घोरा । होइहिं सकल शलभ कुल तोरा ।

रावण–अरे बूढ़ा गृद्ध है कोई योद्धा नहीं, बूढ़े जटायु की आयु आ गई ।

(दोनों लड़ते हैं जटायु को घायल कर सीता को ले रावण लंका को जाता है)

पटाक्षेप

–०००–

अष्टम दृश्य

स्थान—मार्ग

(रामचन्द्र मार्ग में खड़े हैं । लक्ष्मण का प्रवेश)

राम–(लक्ष्मण से) चौपाई

जनक सुता परिहरेउ अकेली । आयहु तात वचन मम पेली ।
निशिचर निकर फिरहिं वन माहीं । मम मन सीता आश्रम नाहीं ।

हे भ्राता जनक नन्दिनी को छोड़ कर कैसे चले आये? अब उसका आश्रम में मिलना कठिन है, मेरा चित्त यही कहता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लक्ष्मण-(राम से) हे नाथ ! मेरा कोई दोष नहीं है श्री जानकी जी ने मारीच के शब्दों से सशंकित हो मुझे दुर्वचन कहकर आपकी सहायता के हेतु भेजा है, कटु शब्द सुन कर ही मैं चला आया अन्यथा न आता।

(दोनों जाते हैं)

पटाक्षेप

-०००-

नवम दृश्य-राम विरह

स्थान-पञ्चवटी

राम-(लक्ष्मण से-सूनी कुटी देख) राग-माँड

तुम काहे डुलावो मोहे ना बताओ बीर मेरी सिया प्राण प्यारी।
पञ्चवटी देखि लीन्ही कुटी सारी पायो न प्यारी का वास।
क्या तोहे ले गयो कोई निशाचर क्या तू उड़ी आकाश।
उड़ि उड़ि काग मन्दिर पर बैठे सूनी मढ़इया पड़ी।
तब बिछुरन की है यह विपता मोसे न जात सही।
हा जगदीश्वर यह क्या बिपता तुम मोहे रूठ के दीन।
हा लक्ष्मण तुम यह क्या कीन्हा छांड़ सिया जो दीन। तुम०।

हे प्रिये! तू मुझको भ्रमाने के निमित्त कहीं छिपी तो नहीं है, तेरे बिना यह आश्रम सूना पड़ा है।

लक्ष्मण-(राम से) नाथ! धैर्य रखिये अब खोज करने को चलना उचित है।

(दोनों जाते हैं)

पर्दा उठता है।

-०००-

दसवां दृश्य-जटायु सम्वाद

स्थान-वन मार्ग

(जटायु मूर्छित पड़ा है, राम लक्ष्मण का प्रवेश)

जटायु-(आप ही आप) हे राम हे राम, राम राम राम—

(राम से) चौपाई

नाथ दशानन यह गति कीन्ही। तेइ बल जनक सुता हर लीन्ही।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ले दक्षिण दिशि गयेउ गोसाईं । विलपति अति कुररी की नाइं ।
दरश लागि प्रभु राखेउँ प्राना । चलन चहत अब कृपा निधाना ।

हे राम आपके दर्शनों का अभिलाषी प्राणों को धारण किये हुये हूँ । दुष्ट रावण सीता जी को हर ले गया है ।

राम–(जटायु से) हे सखा ! यदि प्राण धारण करने की इच्छा हो तो तुम को अमर कर दूँ ।

जटायु–(राम से) (तर्ज–ऋषिकुल है हरिद्वार)

है अपरम्पार स्वामी तुम्हारी महिमा ।

है अद्भुत तुम्हारी माया, नहिं पार किसी ने पाया,
गयो यह सब जग हार । स्वामी० ।
ये जीव चराचर सारें, तब निशिदिन नाम उचारे,
सब रहे तुमहिं पुकार । स्वामी० ।
नाथ दया तुम कीन्हां, मोहिं परम गति दीन्हीं,
तुम हो जगदाधार । स्वामी० ।
अन्त समय जो ध्यावे, सो जग में जन्म न पावे,
कहूँ मैं बार हजार । स्वामी० ।

जाकर नाम मरत मुख आवा । अधमहु मुक्त होइ श्रुति गावा ।
सो मम लोचन गोचर आगे । राखौं देह नाथ केहिं लागे ।

(जटायु प्राण त्याग करता है)

पटाक्षेप

—०००—

ग्यारहवां दृश्य–राम विलाप

स्थान– वन

राम–(इधर उधर देख चकित होकर विलाप करते हैं)

रागिनी (तर्ज–है बहारे बाग दुनियां)

कोमलांगी सीया प्यारी तू कहाँ ।
ढूंढता फिरता हूँ तुझको मैं यहाँ ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मृग विपिन में जो विचरते हो यहाँ ।
वैदेही मेरी तुमने देखी हो जहाँ ।
विनती ये मेरी तुमसे हैं अब हे खगो ।
सिया बता दो तुमने देखी हो जहाँ ।
बिरही मैं व्याकुल प्यारी बिन अब हो गया ।
त्याग मुझको क्यों गई हो तुम सिया ।
कैसे तन में जी रहेगा तुम बिना ।
मीन इव व्याकुल हूँ मैं अब निशि दिना ।

लक्षमण–(राम से) हे नाथ धर्य धारण करना चाहिये । आप से धीर वीर पुरुषों को ऐसे व्याकुल होना शोभा नहीं देता ।

राम–(आप ही आप) चौपाई

हा गुणखानी जानकी सीता । रूप शील व्रत नेम पुनीता ।
हे खग मृग, हे मधुकर श्रेनी । तुम देखी सीता मृगनयनी ।
खंजन शुक कपोत मृग मीना । मधुप निकर कोकिला प्रवीना ।
कुन्द कली दाड़िम सुदामिनी । शरद कमल शशि उरग भामिनी ।
वरुण पाश मनोज धनु हंसा । गज केहरि नित करत प्रशंसा ।
श्रीफल कमल कदलि हरषाहीं । नेकु न शंक सकुच मन माहीं ।
सुन जानकी तोहि बिनु आजू । हर्षे सकल पाई जनु राजू ।
किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं । प्रिया वेगि प्रगटत कस नाहीं ।

(गाते हुए विदा होते हैं)

पटाक्षेप

—०००—

द्वादश दृश्य–सेवा भक्ति

स्थान–शवरी आश्रम

शवरी कन्द मूल फल फूल बेर इत्यादि दोनों में भरे हुए बैठी है ।

(राम लक्षमण का प्रवेश)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शवरी–(हाथ जोड़ फल फूल आगे रख)

चौपाई

केहि विधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी।
अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन महँ मैं अति मन्द गँवारी।

राम–(शवरी से)

दे मनचित सुन भामिनि बाता। मानों एक भक्ति कर नाता।
भक्ति हीन नर सोइहिं कैसे। बिनु घन वारिद देखिय जैसे।
नवधा भक्ति कहों तोहि पाहीं। सावधान सुन धरु मन माहीं।
प्रथम भक्ति संतन कर संगा। दूसरि रत मम कथा प्रसंगा।

दोहा–गुरु पद पङ्कज सेवा, तीसरी भक्ति अमान।
चौथि भक्ति मम गुणगण, करै कपट तजि गान।

चौपाई

मन्त्र जाप मम दृढ़ विश्वासा। पञ्चम भजन सो वेद प्रकाशा।
षट दम शील बिरति बहुकर्मा। निरत निरन्तर सज्जन धर्मा।
सप्तम सब मोहिं मय जग देखे। मोते सन्त अधिक करि लेखे।
अष्टम यथा-लाभ सन्तोषा। सपनेहु नहिं देखैं पर दोषा।
नवम सरल सबसों छल हीना। मम भरोस हिय हर्ष न दीना।
सोई अतिशय प्रिय भामिनी मोरे। सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे।
योगि वृन्द दुर्लभ गति जोई। तो कहँ आज सुलभ भई सोई।
मम दर्शन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज स्वरूपा।

हे शवरी! यदि जनकनन्दिनी की कुछ सुधि जानती हो तो कहो।

शवरी–(राम से) रागिनी तर्ज–"ना छेड़ो गारी दूँगी।"

विनती है तुमसे मेरी, ये सुनिये हो रघुवीर।
पम्पापुर जाहु गुसाईं, सुग्रीव से करहु मिताई।
सीता की खोज लगाई, कपियों को पठावैं वीर।

चौपाई

पम्पापुरहिं जाहु रघुराई। तहाँ होइ सुग्रीव मिताई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सो सीता कर खोज कराइहि । जहँ तहँ मर्कट कोटि पठाइहिं ।
सो सब करिहिं देव रघुवीरा । जानतहु पूछहु मत धीरा ।

(शवरी प्रणाम करती है–रामचन्द्र एवं लक्ष्मण वन की शोभा देखते हुये आगे बढ़ते हैं ।)

राम–(लक्ष्मण से) हे भ्राता ! कैसा परम रमणीय यह वन है । वृक्षों की कतार रूपी सेना को लेकर कोयल इत्यादि पक्षियों का कलरव ही रण का बाजा बजा रहा है । अपने मित्र बसन्त को साथ लेकर मदन आज सामने सेना सहित खड़ा है । चौपाई

देखहु तात बसन्त सुहावा । प्रिया हीन मोहिं भय उपजावा ।
चतुरंगिनी सेन सब लीन्हें । विचरत सबहिं चुनौती दीन्हें ।
लक्ष्मण देखहु कानन शोभा । देखत केहिकर मन नहिं क्षोभा ।

(आप ही आप) भैरवी (तर्ज–अँखियाँ प्रेम रस)

फिर मिलना है हम दोनों का, हे प्रिय कठिन दिखलाता है ।
चिरंजीवि तुम रहो पियारी, मन मुझसे कहलाता है ।
तुमने मुझको मंजु मृगनयनी, हाय! हाय ! बिसराय दिया ।
अच्छा नहीं किया ये तुमने, जो मुझे प्यारी त्याग दिया ।
पर इसमें क्या दोष किसी का, प्यारी जब मेरा ही मन ।
बन बैठा अपना ही बैरी, कर मुझको दुख के अर्पन ।
अब वह विकल हुआ मन मेरा, बेबस होकर रोता है ।
निज कर ही से घाव लगाकर, निज कर ही से धोता है ।

पटाक्षेप

इति श्री–पंचम चरित्र-सीता हरण नाम समाप्तम् ।

पं० रामदत् ज्योतिर्विद् कृत

श्री रामलीला नाटक पूर्वार्द्ध समाप्त हुआ । शुभमस्तु ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

दोहा–लवनिमेष परमाण युग, वर्ष कल्प शरचन्ड ।
भजसि न मन तेहि राम कहँ, काल जासु को दण्ड ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

षष्ठ दिवस

प्रथम—सुग्रीव से मैत्री

स्थान—ऋष्यमूक पर्वत

(सुग्रीव हनुमानादि यथा क्रम बैठे हैं । राम लक्ष्मण का प्रवेश)

सुग्रीव-(हनुमान से राम लक्ष्मण को देख) चौपाई

मोहि शोच अति सुन हनुमाना । पुरुष युगल बल रूप निधाना ।
धरि बटु रूप देखु तैं जाई । कहेंसि मोहिं जिय सैन बुझाई ।
पठवा बालि होइ मन मैला । भागों तुरत तजौं यह शैला ।

हनुमान—(सुग्रीव से) जो आज्ञा (कहकर राम के पास जाते हैं । सुग्रीव भी दूसरी ओर को जाते हैं)

हनुमान—(राम के पास जा चरण वन्दना करके) चौपाई

को तुम श्यामल गौर शरीरा । क्षत्रिय रूप फिरहु बनवीरा ।
कठिन भूमि कोमल पद गामी । कवन काज बन विचरहु स्वामी ।
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता । सहत दुसह वन आतप बाता ।
की तुम तीन देव महँ कोऊ । नर नारायण कै तुम दोऊ ।

दोहा—जग कारण तारण भवहिं, भञ्जन धरणी भार ।
की तुम अखिल भुवनपति, लीन्ह मनुज अवतार ।

राम—(हनुमान से) चौपाई

कौशलेश दशरथ के जाये । हम पितु वचन मानि वन आये ।
नाम राम लक्ष्मण दोऊ भाई । संग नारि सुकुमारि सुहाई ।
यहाँ हरी निशिचर वैदेही । खोजत विप्र फिरहिं हम तेही ।
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु विप्र निज कथा बुझाई ।

हनुमान—

मोर न्याव मैं पूंछा साँई । तुम कस पूछहू नर की नाईं ।
तव माया बस फिरूँ भुलाना । ताते प्रभु नहिं पहिचाना ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोहा--एक मन्द मैं मोहवश, कीस हृदय अज्ञान ।
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेउ, दीन बन्धु भगवान ।

हे नाथ ! मैं वायु पुत्र हनुमान हूँ, सुग्रीव ने आपके निकट भेजा है । अब कृपया सुग्रीव के समीप चलिये । कपीश्वर से मित्रता कीजिये ।

(राम, लक्ष्मण दोनों को पीठ पर चढ़ा ले जाते हैं)

पर्दा उठता है ।

दूसरा दृश्य

स्थान—ऋष्यमूक

(सुग्रीव बन्दरों सहित बैठा है । हनुमान का कन्धे पर राम लक्ष्मण को लिये हुए प्रवेश) ।

हनुमान-(सुग्रीव से) हे कपिराज! आपका भय दूर हुआ । तीनों लोक के हर्ता-कर्त्ता से मित्रता कीजिये, उठिये (कन्धे से राम लक्ष्मण को उतारते हैं)

सुग्रीव-(प्रणाम करता हुआ) हे प्रभो ! कृपा कीजिये, शरण दीजिये, दास हूँ ।

राम—हे सुग्रीव ! कुशल से तो हो, यहाँ कब से रहते हो ? क्या कभी इस मार्ग से जाते जानकी को भी देखा है ?

सुग्रीव-(राम से) चौपाई

हे रघुवीर न होहु दुखारी । मिलिहिं नाथ मिथिलेश कुमारी ।
मंत्रिन सहित यहाँ एक बारा । बैठि रहेऊँ कछु करत विचारा ।
गगन पंथ मैं देखेऊँ जाता । परवश परी बहुत बिलखाता ।
राम राम हा राम पुकारी । मम दिशि देखि दीन्ह पट डारी ।

(पट भूषण देता है)

राम--(लक्ष्मण से) हे भ्राता ! क्या यह जानकी के वस्त्र और आभूषण हैं देखो तो !

लक्ष्मण-(राम से) ठुमरी

जानकी को मुख ना बिलोक्यो ताते कुण्डल न,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जानत हूँ नाथ पाँव परूँ नित जायके।
पाँव परिवे को दास नित्य नित्य जाने रह्यो,
जाने पहचानत हूँ भूषण ये पाँय के।
बिछुआ हैं यही तात, झाँझन हैं यही नाथ,
नूपुर हैं यही बोल कहूँ सत्य भाय के।
जानकी को मुख न विलोक्यो०।

राम-(सुग्रीव से) चौपाई

सकल चरित निज कहहु कपीसा। केहि कारण बन बसहु हरीशा।
कारण कवन तजेउ गृह भाई। रहेउ यहाँ केहि कारण आई।

सुग्रीव-(राम से)

नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई। प्रीति रही कछु वरणि न जाई।
मय सुत मायावी तेहि नाऊँ। आवा सो प्रभु हमरे गाऊँ।
अर्द्ध रात्रि पुर द्वार पुकारा। बालि महा बल सहै न पारा।
धावा बालि देखि सो भागा। मैं पुनि गयेउँ बन्धु संग लागा।
गिरिवर गुहा पैठ सो जाई। बालि मोहि तब कहा बुझाई।
परखेउ मोहि एक पखवारा। नहिं आवउँ तो जानेहु मारा।
मास दिवस तहँ रहेउ खरारी। निकसी रुधिर धार तहँ भारी।
मैं तब निज मन कीन्ह विचारा। जाना असुर बन्धु कहँ मारा।
बालि हतेसि मोहिं मारहिं आई। शिला द्वार ते चलेउँ पराई।
मंत्रिन पुर देखा बिनु साँई। दीन्हेउ राज्य मोहिं बरि आई।
बालि ताहि जीति गृह आवा। देखि मोहि जिय भेद बढ़ावा।
रिपु समान मोहिं मारेसि भारी। हरि लीन्हेसि सर्बस अरु नारी।
ताके भय रघुबीर कृपाला। सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला।
यहाँ शाप वश आवत नाहीं। तदपि सभीत रहौं मन माहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम–(सुग्रीव से) चौपाई

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिनहिं बिलोकत पातक भारी।
निज दुख गिरि सम रज के जाना। मित्र के दुख रज मेरु समाना।
जिनके असमति सहज न आई। ते शठ हठकत करत मिताई।
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा। गुण प्रगटै अवगुणहिं दुरावा।
देत लेत मन शङ्क न धरहीं। बल अनुमान सदा हित करहीं।
आगे कह मृदु वचन बनाई। पाछे अनहित मन कुटिलाई।
जाकर चित अहिगति सम भाई। अस कुमित्र परिहरे भलाई।
सेवक शठ नृप कृपण कुमारी। कपटी मित्र शूल सम चारी।
सखा सोच त्यागहु बल मोरे। सब विधि करब काज मैं तोरे।

दोहा–सुन सुग्रीव मैं मारिहौं, बालिहिं एक ही बान।
ब्रह्म रुद्र शरणागत, गये न उबरहिं प्रान।

हे सुग्रीव! तुम लड़ने को जाओ, मैं एक ही बाण से उस दुष्ट को हनूँगा।

सुग्रीव–जो आज्ञा (कहकर जाता है)

पर्दा गिरता है।

—०००—

तृतीय दृश्य

स्थान–पम्पापुर बालि गृह

(बालि, तारा एवं अङ्गद सहित बैठा है, वानर अगल-बगल बैठे हैं। नेपथ्य से शब्द)

सुग्रीव–(नेपथ्य से) अरे दुष्ट बालि ! संग्राम कर, बाहर आ, अरे दुष्ट बाहर निकल।

(बालि क्रोध में गदा लेकर उठता है, तारा चरण पकड़ लेती है)

तारा–(बालि से)

सुन पति जिन्हिं मिला सुग्रीवा। ते दोउ बन्धु तेज बल सीवा।
कौशलेश सुत लक्ष्मण रामा। कालहु जीति सकहिं संग्रामा।
सोई रघुबीर हृदय महँ आनहु। छाँड़हु मोह कहा मम मानहु।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालि (तारा से)

दोहा–मोर वचन सुनु भीरु प्रिय, समदरशी रघुनाथ।
जो कदापि मोहि मारि हैं, तो पुनि होव सनाथ।

(गदा लेकर, अरे निर्लज्ज सुग्रीव ! आ मेरे सामने)

सुग्रीव–(प्रकट) अरे वानराधम ! तेरा काल आ गया है (दोनों गदा युद्ध करते हैं, बालि जोर से गदा मारता है और सुग्रीव भागता है)

पटाक्षेप

—०००—

चतुर्थ दृश्य

स्थान–किष्किन्धा

(राम लक्ष्मण बैठे हैं, सुग्रीव का प्रवेश)

सुग्रीव–(राम से) चौपाई

मैं जो कहा रघुवीर कृपाला। बन्धु न होय मोर यह काला।
मुष्टि लगत प्रभु विकल शरीरा। भएऊ मोर सुनिए रघुवीरा।

राम–हे सुग्रीव ! तुम दोनों भ्राताओं का एक रूप होने के हेतु भ्रम हुआ। अतएव इस माला को पहन कर फिर युद्ध को जाओ। (माला गले में डालते हैं सुग्रीव जाता है)

पटाक्षेप

—०००—

पांचवा दृश्य–बालि बध

बालि सुग्रीव परस्पर लड़ रहे हैं। रामचन्द्र बाण मारते हैं, बालि गिरता है।

(राम लक्ष्मण का प्रवेश)

बालि–(राम से) चौपाई

धर्म हेतु अवतरेउ गोसाईं। मारेउ मोहिं ब्याध की नाईं।
मैं बैरी सुग्रीव पियारा। कारण कवन नाथ मोहिं मारा।

राम–(बालि से)

अनुज वधू भगिनी सुत नारी। सुन शठ ये कन्या सम चारी।
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकै जोई। ताहि बधे कछु पाप न होई।
मूढ़ तोहि अतिशय अभिमाना। नारि सिखावन करेसि न काना।
मम भुज बल आश्रित तेहि जानी। मारा चहसि अधम अभिमानी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बालि-(राम से)

दोहा-सुनहु राम स्वामी सुभग, चल न चातुरी मोर।
प्रभु अजहूँ मैं पातकी, अन्त काल गति तोर।

राम-(बालि से) हे कपिराज ! यदि तुम्हारी इच्छा होय तो अजर एवं अमर बना दूं।

बालि-(राम से) चौपाई

जन्म जन्म मुनि यतन कराहीं। अन्त राम कहि आवत नाहीं।
जासु नाम बल शंकर काशी। देत सबहिं समगति अविनाशी।
मम लोचन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि अस प्रभु बनहिं बनावा।

स्तुति तर्ज-"नन्द के लाला कृष्ण मुरारे"

तुम हो दीनबन्धु रघुनाथ, दीनानाथ कहाने वाले।
मैं अति पापों में हूँ लीन, पशुवत विषयों से हूँ दीन।
हूँ मैं भक्ति ज्ञान बिनु हीन, हो प्रभु तुम ही तारन वाले।
दुष्टों को देते दण्ड, सन्तों को भक्ति अखण्ड।
है प्रभु तुम्हारा ज्ञान प्रचण्ड, जग का न्याय चुकाने वाले।
अँगद मेरी है सन्तान, कीजे करुणा दयानिधान।
सुत को समझो मोहिं समान, अब तुम इसके हो रखवाले।
(अङ्गद को राम के चरणों में डाल कर)

छन्द

अब नाथ करि करुणा विलोकहु, देहु यह वर माँगहूँ।
जेहि योनि जन्मौं कर्म वश, तहँ राम पद अनुरागहूँ।
यह तनय मम सम विनय बल, कल्याण पद प्रभु दीजिये।
गहि बाँह सुर नर नाह अंगद, दास आपन कीजिये।

राम-(अङ्गद के सिर पर हाथ धर कर) तथास्तु।

(बालि राम राम कहता हुआ प्राण त्यागता है। रोती हुई तारा का प्रवेश)

तारा-(बालि के मृतक शरीर के पास बैठकर)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौपाई

मैं पति तुम्हहिं बहुत समझावा । काल विवश पिय मनहिं न भावा ।

अँगद सौं कछु कहन न पाएउ । बीचहिं सुरपुर प्राण उठाएउ ।

(राम से--हे नाथ! जिस बाण से मेरे प्रियतम को आपने मारा है, उसी से मुझे मार डालिये । हे प्राणनाथ ! मुझ अनाथ अर्द्धांगिनी को छोड़कर आप कहाँ गये ।

राम–(तारा से) चौपाई

क्षिति जल पावक गगन समीरा । पंच रहित यह अधम शरीरा ।

प्रगट सो तनु तब आगे सेवा । जीव नित्य तुम केहि लगि रोवा ।

ॐनजायते म्रियतेवा विपश्चित्, नायं कुतश्चित् न वभूव कश्चित् ।

अजो नित्य: शाश्वतोयंपुराणो । न हन्यते हन्यमाने शरीरे । मु०उ०

हे तारा ! यह पंचतत्व का अधम शरीर तुम्हारे सामने स्थित ही है जीव न जन्मता, न मरता है, नित्य अज, शाश्वत है । शोक त्यागो, संसार चक्र की यही गति है, जो आया है सो जायेगा ।

(लक्ष्मण से) हे भ्राता ! तुम तारा अङ्गद एवं सुग्रीव को राजधानी में ले जाओ । सुग्रीव को राज्य का, अङ्गद को यौवराज्य का टीका देकर चले आओ ।

लक्ष्मण–जो आज्ञा हो । (रामचन्द्र प्रवर्षण पर्वत को जाते हैं)

पटाक्षेप

०००

छठा दृश्य

स्थान–पम्पापुर

सुग्रीव का लक्ष्मण टीका करते हैं । अङ्गद, हनुमान इत्यादि बानर यथाक्रम से खड़े हैं

"नेपथ्य से शंख ध्वनि मंत्र पाठ इत्यादि"

लक्ष्मण–हे सुग्रीव ! तुमको पम्पापुर का राजा और अङ्गद को युवराज बनाया है । (बन्दर समूह-श्री रामचन्द्र की जय कहते हुये समर्थन करते हैं)

–पर्दा उठता है–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सप्तम दृश्य--वर्षाकाल वर्णन

स्थान--प्रवर्षण पर्वत

(रामचन्द्र एक शिला पर मृग-चर्म बिछाये हुए बैठे हैं, लक्ष्मण का प्रवेश)

लक्ष्मण--(प्रणाम करते हुए) हे आर्य ! आपकी आज्ञानुसार सुग्रीव का राज्याभिषेक कर आया हूँ। (दोनों भ्राता बैठते हैं)

राम--हे भ्राता ! वर्षाकाल का दृश्य देखो क्या ही मनोहर हरियाली दिखाई देती है ! चारों ओर आकाश मण्डल मेघों से घिरा हुआ है। बिजली की चमक ही से कुछ काल अन्धकार का नाश हो रहा है, पर क्षण भर में फिर वही अन्धकार हो जाता है। अहा ! यह मूसलाधार जल बरसने लगा, मेघ गड़गड़ाते हैं, जनकनन्दिनी डरती होगी !

चौपाई

घन घमण्ड नभ गरजत घोरा। प्रियाहीन डरपत मन मोरा।
दामिनि दमक रही घन माहीं। खल की प्रीति यथा थिर नाहीं।
वर्षहिं जलद भूमि नियराये। यथा नवहिं बुध विद्या पाये।
बूंद अघात सहैं गिर कैसे। खल के वचन सन्त सहैं जैसे।
क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई। जस थोरे धन खल इतराई।
भूमि परत भा डाबर पानी। जिमि जीवहिं माया लिपटानी।
सिमटि २ जल भरहिं तलावा। जिमि सद्गुण सज्जन पहँ आवा।
महा वृष्टि चलि फूट कियारी। जिमि स्वतन्त्र होई बिगरेहिं नारी।
जहँ तहँ पथिक रहे थकि नाना। जिमि इन्द्रिय गण उपजे ज्ञाना।

दोहा--हरित भूमि तृण संकुलित, समुझि परें नहिं पन्थ।
जिमि पाखण्ड विवादते, लुप्त भये सदग्रन्थ।
कबहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ-तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कपूत कुल ऊपजे, सम्पत्ति धर्म नसाहिं।
कबहुँ दिवस महँ निविड़ तम, कबहुँक प्रगट पतंग।
उपजे विनसहि ज्ञान जिमि, पाइ सुसंग कुसंग।

(आप ही आप) राग खम्माच

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कैसे कटत कारी रैन तुम बिना सिया प्यारी।
कारी कारी घटा छाई जिया मेरो तरसाई।
मोहे चैन परत नाहिं बिनु देखे तोहे प्यारी।
मोहनि मूरत याद करूँ नित उठि तेरो ध्यान धरूँ।
भामिनि नीर नयन भरूँ रोवत रैन सारी।
तड़फत जल बिनु मीन जैसे व्याकुल हूँ दिन रैन तैसे।
धीरज देऊँ मन को कैसे बिनु देखे सिया प्यारी।

हे भ्राता ! अब जनकनन्दिनी का असह्य विरह नहीं सहा जाता। हे लक्ष्मण मैं शौच से निवृत हो आता हूँ, तुम आश्रम में बैठे रहना। (नेपथ्य को जाते हैं)

लक्ष्मण-(आप ही आप) ठुमरी (तर्ज-अपने शहजादे आलम के लिये)

जा दिन ते सिया बिछुरी, मम भ्रात को चित्त मलीन भयो रे।
अब देखे बिना कल नाहिं तिन्हैं,
परि काहू के फन्दे में जाने सिया रे।
नैनन नीर बहै निशिवासर,
यह दुख हाय सह्यो नहिं जा रे।
बान विछोह लगे तन में,
अरु विरह की आग में जीह जरो रे।
वह नीच निशाचर दुष्ट महा,
लेकर सीतहिं कहां जाय छिप्यो रे।

(राम का प्रवेश--दोनों भाई बैठते हैं)

— पटाक्षेप —

अष्टम दृश्य—शरद वर्णन

स्थान—प्रवर्षण पर्वत

राम--(लक्ष्मण से) चौपाई

वर्षा विगत शरद ऋतु आई। देखहु लक्ष्मण परम सुहाई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फूले कास सकल महि छाई। जनु वर्षा ऋतु प्रगट बुढ़ाई।
उदित अगस्त पन्थ जल शोषा। जिमि लोभहि शोषे सन्तोषा।
गत वर्षा निर्मल ऋतु आई। सुधि न तात सीता कीं पाई।
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी। पावा राज कोष पुर नारी।
जेहि साधक मैं मारा बाली। तेहि शर हतों मूढ़ महँ काली।

लक्ष्मण-(राम से) रागिनी (तर्ज-भरने दे जल नीर)

कर जोरे कहूँ भइया हो सुनियो श्री रघुवीर।
मैं पम्पापुर को जाऊँ, तब चरण कमल शिर नाऊँ।
सुग्रीव को जा समझाऊँ, क्षण माहि चढ़ाऊँ तीर।
तुम सकल जगत के त्राता, सुर गावें यश विख्याता।
कर जोर कहूँ सुनो भ्राता, सुग्रीवहिं डारों चीर।

राम-हे भ्राता! भय दिखाकर सुग्रीव को ले आओ, मारना उचित नहीं है।

लक्ष्मण-जो आज्ञा (कह कर विदा होते हैं)

पटाक्षेप

:●:

नवम दृश्य--सुग्रीवागमन

स्थान-पम्पापुर

(सुग्रीव बन्दरों सहित बैठा है)

हनुमान-(सुग्रीव से) चौपाई

तुम कपीश प्रभु काज बिसारा। कहि नहिं सकेऊँ सकुच के मारा।
साम दाम कीन्हे रघुराई। दण्ड भेद करि हैं अब आई।

सुग्रीव-(हनुमान से)

निश्चय करि मैं वचन भुलाना। विषय मोर हरि लीन्हेसि ज्ञाना।
अब मारुत सुत दूत समूहा। जहँ तहँ पठवहू बानर यूथा।
कहहु पक्ष मँह आव न जोई। मोरे कर ताकर बध होई।

हनुमान-बहुत अच्छा राजन्, दूतों को भेज सब वनचरों को एकत्र करता हूँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(लक्ष्मण जी का प्रवेश)

लक्ष्मण–अरे बानरो ! कहाँ भागते हो ? कृतघ्न सुग्रीव कहाँ है ? इस नगर को जलाकर क्षार करता हूँ। (अंगद हनुमानादि बानर हाथ जोड़कर सुग्रीव के पास आते हैं)

सुग्रीव–(चरण पकड़कर) हे नाथ! क्षमा कीजिये दास हूँ। मुझे श्री रघुनाथ जी के पास ले जाकर अभय कराइये। सब बन्दर अभी क्षण भर में आते हैं।

(सर्वे निष्क्रान्ताः) पर्दा उठता है–

दसवाँ दृश्य

स्थान–रामाश्रम

(रामचन्द्र जी बैठे हैं, लक्ष्मण जी का सुग्रीवादि सहित प्रवेश)

सुग्रीव (राम के चरण पकड़ कर) चौपाई

नाथ विषय सम मद कछु नाहीं। मुनि मन मोह करै क्षण माहीं।
अतिशय प्रबल देव तव माया। छूटहिं तबहिं करहु जब दाया।
विषय विवश सुरनर मुनि स्वामी। मैं बानर पशुमति अति कामी।

राम–हे कपीश ! निर्भय रहो कोई डर नहीं। अब सीता की खोज का उद्योग करो, जहां जिसे भेजना हो शीघ्र भेजो।

सुग्रीव–(राम से) जो आज्ञा (बानरों से) हे बानरो! तुम सब चारों दिशाओं में जाओ, एक मास के अन्दर समाचार लाओ।

चौपाई

जनक सुता कहं खोजहु जाई। मास दिवस महँ आयेउ भाई।
अवधि मेटि जो बिनु सुध पाये। अवशि मरिहिं सो मम कर आये।
सुनहु नील अंगद हनुमाना। जामवन्त मतिधीर सुजाना।
सकल सुभट मिलि दक्षिण जाहू। सीता सुधि पूछेहु सब काहू।

राम (हनुमान को मुद्रिका देते हुये)-

गजल–(तर्ज उमरिया आरजू दारम)

संदेशा ये पवनसुत तू सिया प्यारी से कह देना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विरह में उसके व्याकुल हूँ दशा मेरी सुना देना।
सुना है जब से मैंने यह कि बन्दी हो निशाचर की।
विकल मन मेरा निश दिन है व्यथा मेरी जता देना।
प्रिया तेरा और मेरा मन विदित है तुझको है एकी।
सदा जो रहता संग तेरे, यही उसको बता देना।
मन में तुम धरो धीरज करूँ विनती मेरी प्यारी।
छुटाऊँ तुझको कुछ दिन में यह प्रण मेरा सुना देना।

हे वायुपुत्र ! यह मुद्रिका जानकी को देकर अपना परिचय देना अधिक क्या कहूँ ?

हनुमान–"प्रणाम करता है" (सब बन्दर प्रणाम करते हुए विदा होते हैं)

पटाक्षेप

ग्यारहवां दृश्य–समुद्र लंघन

स्थान–सिन्धुतट

"सम्पाती एक खोह में बैठा है। बानरों का प्रवेश"

सम्पाती–आह! हा!! हा!!! आज तो विधाता ने रेल पेल आहार पठाया। भालू बानरों का दल आया। खाऊँगा, उड़ाऊँगा, सड़ाऊँगा, तुम्हारी वनचरों की जय रहे ! कहाँ भागोगे ?

जामवन्त–(बानरों से) चौपाई

सुनहु वचन सब कपि दै काना। अब भा मरण सत्य हम जाना।
हमहु विचारि दीख मन माहीं। धन्य जटायु सरिस कोउ नाहीं।
राम काज कारण तनु त्यागी। हरिपुर गएउ परम बड़भागी।

सम्पाती–अरे तुम कौन हो जो मेरे भाई जटायु की चर्चा करते हो ?

बानरगण–हम श्री रामचन्द्र जी के दूत हैं, सीता जी की खोज में आये हैं।

सम्पाती–(बानरों से) अरे मैं उसी का भाई हूँ। हरे! हरे!! धिक्कार मुझे जो उन्हें आज दुखदायी हूँ। मैं बूढ़ा हो चुका हूँ। पंख पहले ही खो चुका हूँ। लंका समुद्र पार है। गीध दृष्टि अपार है। मैं देखता हूँ। देखो वह चित्रकूट गिरी पर लंका है। जहाँ बजता रावण का डंका है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थियेटर-(तर्ज-बहादुर जंगी)

अरे कपि भइयो उतैं को जइयो, गिरी ऊपर बस लंका।
जाओ वहाँ पर करो न कुछ डर, रावण सहज अशंका।
तुम हो सब वीरों धरु मन धीरा, धन्य न तुम सम आजू।
आए यहाँ अब धाओ वहाँ, सब रामचन्द्र कर काजू।
पापी मरते जिसको भजते, भवसागर से तरते।
ताके तुम पायक हो सब लायक, डर काहे का करते।

चौपाई

मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा। राम कृपा कस भयउ शरीरा।
पापिहु जाकर सुमिरण करहीं। अति अगाध भव सागर तरहीं।
तासु दूत तुम तजि कदराई। राम हृदय धरि करहु उपाई।

(सम्पाती विदा होता है)

जामवन्त-है कोई वीर बानर जो शतयोजन सागर को पार कर लंका में जावे ?

विकट-हे ऋच्छराज! हम तो बीस योजन से अधिक नहीं जा सकते। तुम कहते हो सौ योजन ?

नल-हम तो भाई साठ योजन तक लाँघते हैं। अधिक नहीं।

नील-मैं तो चालीस योजन से तिल भर अधिक न जा सकूँगा।

दधिमुख-अरे वीरो! मैं सतासी योजन कूदता हूँ। कहो तो अभी उछाल मारूँ?

जामवन्त-(वानरों से)

वृद्ध भयउ तन यहै कलेशा। नहिं बल रहा प्रथम लवलेशा।
जबहिं त्रिविक्रम भएउ खरारी। तब मैं तरुण रहा बल भारी।

अङ्गद-(जामवन्त से)

सुनहु ऋच्छपति जाऊँ पारा। जिय संशय कछु फिरती बारा।

जामवन्त-(अङ्गद से)

सुनु अँगद तुम हो सब लायक। किमि पठऊँ सबही कर नायक।

(हनुमान से)

सुनहु पवन सुत कहि हनुमाना। का चुप साधि रहा बलवाना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिज्ञान निधाना।
कौन सो काज कठिन जगमाहीं। जो न तात होइहिं तुम पाहीं।

हनुमान—

ऋछराज सुनु वचन हमारा। लीलहिं लाँघों जलनिधि खारा।
सहित सहाय रावणहिं मारी। आनो यहाँ त्रिकूट उपारी।
जामवन्त मैं पूछौ तोही। उचित सिखावन दीजे मोही।

जामवन्त—

इतना करहु तात तुम जाई। सीतहिं देखि कहो सुधि आई।
तब निज भुजबल राजिवनयना। कौतुक लागि संग कपि सयना।

(हनुमान समुद्र लांघ कर पार जाते हैं)

पटाक्षेप

—०००—

बारहवां दृश्य—लंका प्रवेश

स्थान—विभीषण गृह

(विभीषण राम-राम जप रहा है। चारों ओर राम-राम भवन में लिखा हुआ है)

हनुमान—(प्रवेश) अहा ! यह राम नाम से अंकित गृह किसका है ? तुलसी के वृक्ष यहाँ कहां से आये ?

चौपाई

लंका निशिचर निकर निवासा। यहां कहां सज्जन कर वासा।

विभीषण—

करि प्रणाम पूछौं कुशलाई। विप्र कहहु निज कथा बुझाई।
की तुम हरिदासन मँह कोई। मोरे हृदय प्रीति अस होई।
की तुम राम चरण अनुरागी। आए मोहिं करन बड़ भागी।

हनुमान—

दोहा—राम दूत हनुमान सब, मोर पुकारत नाम।
देखि तुमहिं अचरज भयहु, बसहु जो निशिचर ग्राम।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निभीषण— चौपाई

सुनहु पवन सुत रहनि हमारी। जिमि दशनन महँ जीभ बिचारी।
तात कबहुं मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा।
तामस तनु कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मन माहीं।

हे कपिश्रेष्ठ ! अशोक वाटिका में जाओ। सीता माता वहीं मिलेंगी।

(हनुमान जाते हैं) पर्दा गिरता है।

—०००—

त्रयोदश दृश्य—सीता दर्शन

स्थान—अशोक वाटिका

(सीता—त्रिजटा, प्रभृति राक्षसियों के पहरे में बैठी हैं। रावण का प्रवेश)

रावण—(सीता से) रागिनी तर्ज—'आओ नगर मोरे हरी'

समुझ समुझ तू राजकुमारी, तेरे दरश को आयो यहाँ री।
बीस भुजा मम हूँ दशकंधर, देखि डरैं मोहे सगरे धुरंधर।
देव दनुज वश सबको किया री, तेरे दरश को आयो यहाँ री।
तेरे पति ने सुध बिसराई, अब लौं न तेरी खोज लगाई।
रोवत रोवत क्यों तू हारी, तेरे दरश को आयो यहाँ री।

चौपाई

सीता सुमुखि सुनो मम बानी। मन्दोदरि आदिक सब रानी।
तव अनुचरी करौं प्रण मोरा। एक बार विलोकि मम ओरा।

सीता—(रावण से)

सुन दशमुख खद्योत प्रकाशा। कबहुं कि नलिनी करहिं विकाशा।
शठ सूने हरि आनेसि मोही। अधम निर्लज्ज लाज नहिं तोही।

रावण—(सीता से)

सीता तैं मम कृत अपमाना। काटौं तव शिर कठिन कृपाना।
नाहित सपदि मानु मम बानी। सुमुखि होहु नतु जीवन हानी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीता–(रावण से)

श्याम सरोज दाम सम सुन्दर। प्रभु भुज करिकर सम दशकंधर।
सो भुज कण्ठ कि तव असिघोरा। सुनु शठ अस प्रमाण प्रण मोरा।

रावण–(सीता से)

मास दिवस महँ कहा न माना। तौ मैं मारब कठिन कृपाना।
सुनो सकल निशिचर मनलाई। सीतहिं त्रास दिखावहु जाई।

(घर को चला जाता है। राक्षसियाँ सीता को अनेक प्रकार से भय दिखाती हैं)

त्रिजटा–(राक्षसियों से) चौपाई

सपनें बानर लङ्का जारी। यातुधान सेना सब मारी।
खर आरुढ़ नगन दशशीशा। मुण्डित शिर खण्डित भुज बीशा।
इहि विधि सो दक्षिण दिशि जाई। लङ्का राज्य विभीषण पाई।
नगर फिरी रघुवीर दुहाई। तब प्रभु सीतहिं बोलि पठाई।
यह सपना मैं कहौं विचारी। होइहिं सत्य गए दिन चारी।

सीता–(त्रिजटा से) चौपाई

त्रिजटा तोहिं कहौं कर जोरी। मातु विपति संगिनी तैं मोरी।
तजों देह करु वेगि उपाई। दुसह विरह अब सहा न जाई।

रागिनी तर्ज–"बेटा जुम्मा रे जुम्मा"

मेरी बहिना री बहिना थोड़ी आग लादे।
आग लादे लकड़ी लादे और बना दे चीता।
वा अग्नी में तन को जारूँ जग में नहिं कोई जीता।

त्रिजटा– चौपाई

निशि न अनल मिलु राजकुमारी। कवन यतन मैं करौं पियारी।

हे सीते ! इस रात्रि के समय में अग्नि नहीं मिलती है। मैं भी घर को जाती हूँ।

(त्रिजटा जाती है)

सीता–(आप ही आप) लावनी (तर्ज–दुख हरो द्वारिकानाथ)

दुख हरो अयोध्यानाथ शरण मैं तेरी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुम धरो लाज रघुराज आज प्रभु मेरी ।
दीन्ह अहिल्यहिं स्वर्ग तुमहिं रघुराई ।
गुह केवट कीन्हों सखा लियो उर लाई ।
भक्तन के संकट दूर कीन्ह प्रभु जाई ।
जो गए शरण में नाथ लिए अपनाई ।
तुम सब घट जाननहार कहूँ क्या फेरी ।
दुःख हरो अयोध्यानाथ शरण मैं तेरी ।
हा! कहाँ हो तुम रघुनाथ सकल उरवासी ।
हा! कब से रुदन मचाय रही है दासी ।
अवधेश तनय तुम सुनो टेर अबिनाशी ।
हा! दुष्ट निशाचर लिये खड़े हैं फाँसी ।
हा! प्राणनाथ मम नाथ करी क्यों देरी ।
दुख हरो अयोध्यानाथ शरण मैं तेरी ।

रागदेश

मिटावै कौन विरह की पीर ।
इत उत हेर गिरूँ धरणी पर, मन को होत न धीर ।
कहा करूँ किसको दिखलाऊँ अपनो कलेजा चीर ।
रघुपति बिनु अब प्राण न राखूँ, हृदयहिं बेधत तीर ।
दुष्ट निशाचर यों डरपावें, काँपत मोर शरीर ।

(हनुमान नैपथ्य से मुद्रिका डालते हैं)

सीता-(चकित हो) आहा! ! क्या माया है! प्राणनाथ की अँगूठी कहाँ से आ गयी ?

हनुमान--(प्रकट हो प्रणाम करके) चौपाई

राम दूत मैं मातु जानकी । सत्य शपथ करुणानिधान की ।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी । दीन्ह राम तुम कहँ सहदानी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीता–(हनुमान से)

बूडत विरह जलधि हनुमाना । भयउ तात मो कहँ जलयाना ।
अब कहु कुशल जाउँ बलिहारी । अनुज सहित सुख भवन खरारी ।
कोमल चित कृपालु रघुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ।
सहज स्वामि सेवक सुख दायक । कबहुँक मोहि सुमिरत रघुनायक ।
कबहुं नयन मम शीतल ताता । होइहिं निरखि श्याम मृदुगाता ।

हनुमान–(सीता से)

मातु कुशल प्रभु अनुज समेता । तब दुख दुखित सो कृपा निकेता ।
जननी जनि मानहू मन ऊना । तुमते प्रेम राम कर दूना ।
कहे ते दुख कछु घटि नहिं होई । काहि कहूँ यह जान न कोई ।
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एक मन मोरा ।
सो मन रहत सदा तोहि पाहीं । जानु प्रीति रस इतनेहि माहीं ।
जो रघुवीर होत सुधि पाई । करते नहीं विलम्ब रघुराई ।
कछुक दिवस जननी धरु धीरा । कपिन सहित एहैं रघुवीरा ।

सीता–

चौपाई

हैं सुत कपि सब तुमहिं समाना । यातुधान भट अति बलवाना ।
मोरे हृदय परम सन्देहा । है तुम्हार कपि अति लघु देहा ।

हनुमान–

दोहा–सुनु माता शाखा मृगहिं, नहिं बल बुद्धि बिशाल ।
प्रभु प्रताप ते गरुड़ कहँ, खाय परम लघु ब्याल ।

सीता–(हनुमान से)

चौपाई

कपि तव तेज सकल मैं जाना । होहु तात बल शील निधाना ।
अजर अमर गुणनिधि सुत होहू । करहिं सदा रघुनायक छोहू ।

हनुमान– (हाथ जोड़े)

अब कृतकृत्य भयउ मैं माता । आशिष तब अमोघ बिख्याता ।
सुनिय मातु मोहिं अतिशय भूखा । देखि लागि सुन्दर फल रूखा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीता–हे सौम्य ! यहाँ बड़े-बड़े योद्धा राक्षस पहरे पर रहते हैं, फल खाने में तुम्हें भय नहीं।

हनुमान–हे माता ! मैं राक्षसों का भय नहीं करता हूँ। राम का भरोसा धरता हूँ (कह कर जाते हैं। फल खाते वृक्ष तोड़ते हुये, राक्षसों को मारते एवं भगाते हैं)

अक्षयकुमार–(प्रवेश) अरे पकड़ो-पकड़ो ! कहां का बन्दर है ?

(हनुमान अक्षयकुमार को भी सेना सहित मार डालते हैं) कुछ राक्षस भागते हैं।

(नैपथ्य से शब्द)—पकड़ो-पकड़ो भागने न दो (मेघनाथ का प्रवेश)

मेघनाथ–अरे नीच बानर ! मेरे बल को नहीं जानता है ! अभी तुझे बाँधता हूँ।

(नागफाँस से बाँध कर रावण के पास ले जाता है)

पटाक्षेप

—०००—

चतुर्दश दृश्य–लंका दहन

स्थान–रावण सभा

(रावण दरबार में बैठा है। चारों ओर राक्षस खड़े हैं)

(हनुमान को बाँधे हुये मेघनाथ आता है)

रावण–(हनुमान से) "राक्षसी तर्ज"

रे शठ नीच कवनतें कीशा। केहि के बल घालेसि वन खीशा।
कीधौं श्रवण सुनेसि नहिं मोहीं। देखौं अति अशंक शठ तोहीं।
मारेसि निशिचर केहि अपराधा। कहु शठ तोहि न प्राण की बाधा।

हनुमान–(रावण से)

सुनु रावण ब्रह्माण्ड निकाया। पाई जासु बल विरचति माया।
जाके बल विरंचि हरि ईशा। पालत हरत सृजत दशशीशा।

दोहा–जाके बल लवलेश ते, जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत हूँ जासु की, हरि आनेउ प्रिय नारि।

चौपाई

खायेउँ फल मोहे लागी भूखा। कपि स्वभाव ते तोरेउँ रूखा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिन मोहि मारा तेहि मैं मारा । तेहि पर बाँधेउ तनय तुम्हारा ।

रावण—अरे राक्षस वीरो! इस बन्दर का अङ्ग भङ्ग कर दो । इसकी पूँछ में तेल वस्त्र लपेट कर आग लगा दो, झगड़ा गया ।

एक राक्षस—जो आज्ञा राक्षसराज! (हनुमान की पूँछ में आग लगाता है, क्षण भर में सारी लंका जल उठती है)

पटाक्षेप

पन्द्रहवां दृश्य—हनुमान सीता सम्वाद

स्थान—अशोक-वाटिका

(सीता जी को राक्षस घेरे हुए हैं । हनुमान का प्रवेश)

हनुमान-(सीता से) चौपाई

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा ।
राम कृपा तव चरण सहाई । क्षण महँ निशिचर पुरी जराई ।

सीता—(चूड़ामणि उतार कर देती हैं)

तुम हनुमान बुद्धि बल धामा । कहेऊ प्रभु सन मोर प्रणामा ।
दीनदयालु विरद सम्भारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ।
मास दिवस महँ नाथ न आवहिं । तो मोहि तात जीवत नहिं पावहिं ।
तोहि देखि शीतल भइ छाती । पुनि मोकहँ सोइ दिन सोइ राती ।

(हनुमान प्रणाम करके विदा होते हैं)

पटाक्षेप

—ooo—

सोलहवां दृश्य—हनुमान निर्वतन

स्थान—प्रवर्षण गिरि

(रामचन्द्र, लक्ष्मण एवं सुग्रीवादि बैठे हैं । हनुमान का जामवन्त अङ्गदादि के साथ प्रवेश)

हनुमान-(प्रणाम करते हैं) हे नाथ! यह चूड़ामणि, चिन्ह के लिये लाया हूँ ।

राम-हे वायु पुत्र ! जनकनन्दिनी की कुशल कहो । क्या दशा है ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हनुमान--(राम से) चौपाई

अनुज समेत गहेउ प्रभु चरणा । दीन बन्धु प्रणतारति हरणा ।
मम क्रम बचन चरण अनुरागी । केहि अपराध नाथ मोहि त्यागी ।

दोहा--निमिष निमिष करुणायतन, जाहिं कल्प सम बीति ।
वेगि चलिय प्रभु आनिए, भुजबल खलदल जीति ।

राम--(हनुमान से) चौपाई

सुन कपि तेहि समान उपकारी । नहिं कोउ सुरनर मुनि तनु धारी ।
प्रति उपकार करौं का तोरा । सनमुख होय न सकत मन मोरा ।

(सुग्रीव से) हे कपिराज ! शुभ विजय मुहूर्त आ गया है ।
शीघ्र समुद्र तट पर चलो (सब जाते हैं)

पर्दा गिरता है ।

षष्ठ चरित्र लंका दहन समाप्तम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सप्तम दिवस

प्रथम दृश्य – मन्दोदरी रावण सम्वाद

(मन्दोदरी सहित रावण बैठा है। पहरे पर राक्षस खड़े हैं)

मन्दोदरी–(रावण से)

रागिनी (तर्ज–बालम जी परदेश तुम्हें मैं जाने न दूंगी)

पति कर जोर विनय यह तुमसे, सीता दे दीजे।
नारि पराय छिपाय नाथ जग, अपयश क्यों लीजे।
रघुनाथ अनाथ के नाथ हैं जो, प्रभु उनको भज लीजे।
गरलहलाहल त्याग पिया, तुम अमृत को पीजे।
जगमान तिहारो अपार बढ़े, कछु अपनी ना छीजे।

चौपाई

कन्त कर्ष हरि सन परिहरहू। मोर कहा अतिहित चित धरहू।
समुझत जासु दूत की करणी। स्रवहिं गर्भ रजनीचर धरणी।
तासु नारि निज सचिव बुलाई। पठवहु कन्त जो चहहु भलाई।
सुनहु नाथ सीता बिन दीन्हें। हित न तुम्हार शम्भु अज कीन्हें।

दोहा–राम बाण अहि गण सरिस, निकर निशाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तबहिं लगि, यत्न करहु तजि टेक।

रावण–(मन्दोदरी से) चौपाई

सभय स्वभाव नारि कर साँचा। मंगल माँहि अमंगल राँचा।
जो आवे मर्कट कटिकाई। जियहिं बिचारे निशिचर खाई।
कम्पहिं लोकप ज़ाके त्रासा। तासु नारि भय कर बड़ी हासा।

हे प्राण प्यारी ! कोई चिन्ता नहीं, चन्द्रमुखी क्यों दुखी होती हो ?

(विभीषण एवं अन्य सभासदों का प्रवेश)

मन्त्री–(रावण से) महाराज समुद्र पार राम की सेना आ गई है, क्या आज्ञा है ?

रावण–अरे सभासदो ! कहो भाई क्या करना चाहिये ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राक्षस–हे राक्षसराज ! बड़े-बड़े असुर और देवता आपने जीते हैं तो इन नर बन्दरों की क्या गिनती ?

रावण–(उठकर हँसता है) अहा ! हह ! हहह ! बात तो भाई ठीक है। कहो विभीषण तुम्हारी सम्मति क्या है ?

विभीषण–(रावण से) रागिनी (तर्ज–भरने दे०)

मेरी मानो कहुं भइया वे तो हैं रघुवीर।
मैं तुमसे कहूँ समझाई चित धर के सुनो मम भाई।
पर नारि न लाओ चुराई, तुम तो हो रणधीर।
उर कुमति बसी विपरीती, ताते तुम करहु अनीति।
हित अनहित मानत प्रीति, सुनिये हो अति धीर।

चौपाई

जो कृपालु पूछहु मोहि बाता। मति अनुरूप कहब मैं ताता।
जो आपन चाहहु कल्याना। सुयश सुमति शुभगति सुख नाना।
तो पर नारि लिलार गुसाई। तजहु चौथ चन्दा की नाईं।
सुमति कुमति सबके उर रहई। नाथ पुराण निगम अस कहई।
जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना। जहाँ कुमति तहाँ विपति निदाना।

दोहा—तात चरण गहि माँगौं, राखहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहँ, अति हित होय तुम्हार।

रावण–(विभीषण से) चौपाई

मम सन्मुख शठ अरि प्रभुताई। खल तब मृत्यु निकट चलि आई।
जियसि सदा शठ मोर जियावा। रिपु कर पक्ष सदा तोहि भावा।
व हसिन खल अस को जगमाहीं। भुजबल जेहि जीतेहु हम नाहीं।
ममपुर बसि तपसिन सन प्रीति। शठ मिलु जाइ उनहिं कहु नीति।

(लात मारता है) अरे मूढ़ जा मुँह मत दिखा, यह नीति उन्हीं को सुनाना।

विभीषण–(रावण से) श्लोक नैपाली

भक्ती मुख्यछ सर्बे साधन महाँ, भक्तीछ सब ज्ञान दिन्यां।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भक्ती लै सब मुक्त हुन्छ दुनियां, यो निस्य जानी लिन्यां।
भक्तिहीन भइ कर्म गर्दनुभन्यां, यो निष्फलै होभनी।
जाना श्री रघुनाथ का चरणमा, भक्ती लगाऊँ पानी।

ग़ज़ल

तेरा अभिमान सब जाता रहेगा।
बहुत तू मन में पछताता रहेगा।

न पछताने से फिर निकलेगा कुछ काम।
समय जब हाथ से जाता रहेगा।

कभी इसमें न मीठा फल मिलेगा।
नए दुख रोज तू पाता रहेगा।

हमें था काम समझाने से तुझको।
किये की तू सजा पाता रहेगा।

तेरा बन जायेगा सब काम रावन।
जो उसका नाम तू गाता रहेगा।

वही दुनियाँ में पावेगा भलाई।
जिसे रघुनाथ से नाता रहेगा।

(जाता है) पटाक्षेप

द्वितीय दृश्य--विभीषण गमन

स्थान—समुद्र तट

(राम लक्ष्मण वानरी सेना सहित विराजमान हैं। विभीषण का प्रवेश)

सुग्रीव-(विभीषण को आते देखकर) हे नाथ ! रावण का भाई आता है राक्षसों की माया जानी नहीं जाती। हे आर्य्य ! मेरी सम्मति से इसे बाँध कर पीटना चाहिये।

राम-(सुग्रीव से) चौपाई

भेद लेन पठवा दशशीशा। तबहुँ न कछु भय हानि कपीशा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो सभीत आवा शरणाई । रखिहौं ताहि प्राण की नाईं ।

विभीषण–(दूर से प्रणाम करके) रागनी तर्ज–(बटहवासँ चन्द्रस्व)

दोउ कर जोर कहूँ रघुनाथ, तुमसे अपनी व्यथा मैं सारी ।
हूँ निशिचर अधम सुभाऊ, शुभ कर्म कियो नहिं काऊ ।
अब दीपक ज्योति जलाऊँ, मम छाई हृदय अँधियारी ।
भ्राता अभिमानी रावन, जाको वेद विरुद्ध सब तन मन ।
दुखित भये सुर मुनि गन, मैं भी आया शरण तिहारी ।

चौपाई

निशिचर वंश जन्म सुरत्राता । नाथ दशानन कर मैं भ्राता ।
सहज पाप प्रिय तामस देहा । यथा उलूकहिं तम पर नेहा ।

दोहा–श्रवण सुयश सुनि आयेसु, प्रभु भञ्जन भव भीर ।
त्राहि त्राहि आरत हरण, शरण सुखद रघुवीर ।

(चरणों पर गिरता है)

राम–(विभीषण से) चौपाई

सुन लंकेश सकल गुण तोरे । ताते तुम अतिशय प्रिय मोरे ।
खल मण्डली बसहु दिन राती । सखा धर्म निबहै केहि भाँति ।
वरु भल वास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ विधाता ।
कुशल कुठाहर वास तुम्हारा । कहु लंकेश सहित परिवारा ।

(समुद्र के जल से तिलक करते हैं)

हे सखा ! यद्यपि तुमको इच्छा नहीं है तथापि लंका के राज्य का तुमको आज तिलक किया जाता है । इसे मेरे दर्शन का फल जानो ।

(लक्ष्मण से)

दोहा–विनय न मानत जलधि जड़, गये तीन दिन बीति ।
नीति न होय विवेक बिनु, भय बिनु होय न प्रीति ।

(धनुष ले) चौपाई

लक्ष्मण बाण शरासन आनू । शोषों जलनिधि विशिष कृषानु ।
शठ सन विनय कुटिल सन प्रीति । सहज कृपण सन सुन्दर नीति ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समुद्र–(कनक थाल में मणि मुक्ता भेंट धर कर)

चौपाई

करहुं विनय गहि प्रभु पद तोरे। क्षमहुँ नाथ सब अवगुण मोरे।
गगन समीर अगन जल धरणी। इनकी नाथ सहज जड़ करणी।
तब प्रेरित माया उपजाये। सृष्टि हेतु सब ग्रन्थन गाये।
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्हीं। मर्य्यादा सब तुम्हरी कीन्हीं।
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी।
प्रभु प्रताप मैं जाव सुखाई। उतरहिं कटक न मोरि बड़ाई।

राम–(सागर से) जिस प्रकार से सेना पार हो वैसा उपाय बताओ।

समुद्र–(राम से) चौपाई

नाथ नील नल कपि दोउ भाई। लरिकाई ऋषि आशिष पाई।
तिनके परस किये गिरी भारे। तरिहैं जलधि प्रताप तुम्हारे।
मैं पुनि उरधरि तब प्रभुताई। करिहौं बल अनुमान सहाई।

(समुद्र हाथ जोड़ कर विदा होता है)

(नैपथ्य में–नल नील पुल बाँधते हैं)

पटाक्षेप

तृतीय दृश्य--सेतु बन्धन

स्थान—सेतुबन्ध रामेश्वर

(सेतु के समीप सेना है! रामचन्द्र बैदिक रीति से शिवजी की पूजा करते हैं)

राम–(शिव के निकट)

दोहा–शङ्कर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास।
ते नर करिहहिं कल्प भरि, घोर नरक महँ बास।

चौपाई

शिव द्रोही मम दास कहावे। ते नर मोहिं सपनेहुँ नहिं भावे।
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी। सो मतिमन्द बुद्धि अति थोरी।
जो रामेश्वर दर्शन करिहैं। सो तनुतजि मम धाम सिधरिहैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो गंगाजल आनि चढ़ाई। सो सायुज्य मुक्ति नर पाई।
मम कृत सेतु जो दर्शन करिहैं। सो बिनु श्रम भव सागर तरिहैं।

(कटक सहित पुल के मार्ग से पार जाते हैं)

पटाक्षेप

—०००—

चतुर्थ दृश्य--मन्दोदरी प्रबोध

स्थान—लंका राज महल

(रावण मन्दोदरी सहित सभा में बैठा है। एक राक्षस का प्रवेश)

राक्षस—वानरों का कटक सुबेलगिरी पर आ गया है। समुद्र में बड़ा भारी सेतु बाँध दिया है।

रावण—

दोहा—बांधेउ जलनिधि नीरनिधि, जलधि सिन्धु वारीश।
सत्य तोयनिधि पंकनिधि, उदधि पयोधि नदीश।

मन्दोदरी—(रावण से) चौपाई

नाथ वैर कीजै ताहीं सौं। बुद्धि बल जीत सकिय जाही सों।
तुम रघुपति मँह अन्तर कैसा। खल खद्योत दिवाकर जैसा।
अतिबल मधु कैटभ जिन मारे। महाबली दिति सुत संहारे।
तासु विरोध न कीजिए नाथा। काल कर्म गुण जिनके हाथा।
चहिय करन सो सब करि बीते। तुम सुर असुर चराचर जीते।
वेद कहहिं अस नीति दशानन। चौथेपन जावहिं नृप कानन।
तासु भजन कीजै तहं भर्ता। जो कर्त्ता पालक संहर्ता।
सोई रघुवीर प्रणत अनुरागी। भजहु नाथ ममता मद त्यागी।

रावण—(मन्दोदरी से)

सुन तैं प्रिया मृषा भय माना। जग योधा को मोहि समाना।
वरुण कुबेर पवन यम काला। भुजबल जीतऊँ सकल दिगपाला।
देव दनुज नर सब बस मोरे। कवन हेतु उपजा भय तोरे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रावण–(मन्त्री से) अरे मन्त्री किसी गाने वाली अप्सरा को बुलाओ।

मन्त्री–जो आज्ञा (जाता है)

(अप्सरा सहित प्रवेश)

अप्सरा (सर नवा कर) गाती है-

अब रखियो लाज हमारी नाथ।
दीनानाथ गणपति नाथ। टैक।

हरियो संकट दीनानाथ, दोउ कर जोर नवावें माथ।
मन भावे यही, वर पावें यही, सुख पावें यही, हम चाहें यही।
हरना, भरना, सरना, तरना, सारी तोरी माया है कि जै जै जै।

(२)

जय जय जय जय जग जननी।
सुफल कामना करो हमारी जय संकट हरनी।
हम तुम से बार बार माता करें पुकार।
दया करोगी लाज धरोगी तब होगा निस्तार।

पटाक्षेप

—०००—

पंचम दृश्य--मन्त्र विचार

स्थान—सुबेल पर्वत

चारों ओर वानरों का दल है, बीच में रामचन्द्र, लक्ष्मण, विभीषण सहित विराजमान हैं।

रामचन्द्र–(वानरों से) चौपाई

शशि महं कहूँ कपि में चतकाई। कहहु सकल निज निज मति भाई।

सुग्रीव–(राम से)

मोरे वचन सुनहु रघुराया। शशि महँ प्रकठ भूमि की छाया।

अङ्गद–(राम से) चौपाई

सुन प्रभु जब विधि रति मुख कीना। सार भाग शशि कर हर लीना।
प्रकट सो बिन्दु इन्दु उप माहीं। तेहि मग देखिय नभ परछाहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हनुमान—[राम से]

दोहा-मोर वचन अब सुनहु प्रभु, शशि तुम्हार प्रिय दास।
तव मूरत तेहि उर बसत, सोहि श्यामता भास।

राम (विभीषण से) चौपाई

देखु विभीषण दक्षिण आशा। घन घमण्ड दामिनि विलासा।
मधुर मधुर गरजत घनघोरा। होहिं वृष्टि जनु उपल कठोरा।

विभीषण-(राम से) चौपाई

विनय मोर यह सुनहु कृपाला। होहिं न तड़ित न वारिद माला।
लङ्का रुचिर शिखिर आगारा। तँह दशकन्धर केर अखारा।
छत्र मेघ डम्बर शिर धारी। सोई प्रभु जलद घटा जनुकारी।
मन्दोदरी श्रवण ताटङ्का। सोऊ प्रभु जनु दामिनि दमङ्का।
बाजत ताल मृदङ्ग अनूपा। सोई रव सरस सुनहु सुर भूपा।

(राम-रावण के क्षत्र मुकुट गिराने के हेतु दक्षिण दिशा को नैपथ्य की ओर वाण मारते हैं)

राम—सभासद गण! अब क्या करना उपयोगी है? सम्मति दो।

जामवन्त-कृपानिधान मेरी अल्प बुद्धि के अनुसार प्रथम अंगद को दूत बनाकर भेजना उचित होगा।

सुग्रीव-ऋच्छराज ने सत्य कहा है। क्यों नहीं बड़े बूढ़े भी तो हैं न!

रामचन्द्र-युवराज! तुम राजदूत बनकर रावण के पास जाओ। जिस प्रकार स्वकार्य साधन हो ऐसी चर्चा करना। अधिक क्या कहूं तुम स्वयं ही चतुर हो।

अङ्गद—(प्रणाम करके) जो आज्ञा [जाता है]

पटाक्षेप

—०००—

षष्ठ दृश्य--अँगद सम्वाद

स्थान-रावण सभा

(रावण, मन्दोदरी एवं वीर राक्षस बैठे हैं)

मंदोदरी—(रावण से) चौपाई

राम बिरोध कन्त परिहरहू। जानि मनुज हठ उर जनि धरहू।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पद पाताल शीश अज धामा॥अपर लोक अंगन विश्रामा।
भृकुटि विलास भयंकर काला॥नयन दिवाकर कच धन माला।
श्रवण दिशा दश वेद बखानी॥मारुत स्वांस निगम निज वानी।
दोहा-अहंकार शिव बुद्धि अज, मन शशि चित्त महान।
मनुजवास चर अचर मय, रूप शशि भगवान्।

रावण-(ठठाका मारकर हंसता है) अहा ! हा ! हा !

चौपाई

नारि स्वभाव सत्य कवि कहहीं॥अवगुण आठ सदा उर रहहीं।
साहस अनृत चपलता माया॥भय अविवेक अशौच अदाया।
रिपु कर रूप सकल तैं गावा॥अति विशाल भय मोहि सुनावा।
सो सब प्रिया सहज बस मोरे॥समुझि परा प्रभाव अब तोरे।

(जाती है) (दौड़ता चिल्लाता हुआ एक राक्षस)

राक्षस-बानर आ गया ! लङ्का जलाने वाला वानर आ गया।

अतिकाय-(उस राक्षस के चपत मारता है) अरे वह नहीं है यह और कोई है। अङ्गद का प्रवेश। सब राक्षस उठकर खड़े होते हैं।)

रावण-अरे तू बन्दर ! तू कौन है ?

अङ्गद-हे दशकंधर ! मैं श्री रामचन्द्र जी का दूत हूँ !

चौपाई

मम जनकहि तोहि रही मिताई॥तव हित कारण आयेऊँ भाई।
उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती। शिव विरंचि पूजेउ बहु भांति।
वर पायेउ कीन्हेउ सब काजा॥जीतेउ लोकपाल सुर राजा।
नृप अभिमान मोह बस किम्बा॥हरि आनेउ सीता जगदम्बा।
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा॥सब अपराध क्षमहि प्रभु तोरा।
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी॥पुरजन संग सहित निज नारी।
सादर जनक सुता करि आगे॥यही विधि चलहु सकल भय त्यागे।
दोहा—प्रणतपाल रघुवंश मणि, त्राहि त्राहि अब मोहि।
सुनतहि आरत वचन प्रभु, अभय करेंगे तोहि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रावण-(कुपित हो अंगद से) चौपाई

रे कपि पोच न बोल सँभारी ❀ मूढ़ न जानेसि मोहि सुरारी ।
कहु निज नाम जनक कर भाई ❀ केहि नाते मानिए मिताई ।

अङ्गद-

अंगद नाम बालि कर बेटा । तोसों कबहूँ भई होय भेटा ।

रावण-

फिर का गरजसि सिंह समाना । रहा बालि वानर मैं जाना ।
अंगद तूहि बालि कर बालक । उपजेउ वंश अनल कुल घालक ।
गर्भ न गिरेउ वृथा तुम जाये । निज मुख तापस दूत कहाये ।
अब कहुँ कुशल बालि कहँ अहई । प्रेम विवश मद हृदय दहई ।

अंगद- चौपाई

दिन दश गये बालि पहँ जाई । पूछेउ कुशल सखा उर लाई ।
राम विरोध कुशल जस होई । सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई ।
सुन शठ भेद होई मन ताके । श्री रघुवीर हृदय नहिं जाके ।
शिव विरंचि सुर मुनि समुदाई । चाहत जासु चरण सेवकाई ।
तासु दूत होई हम कुल बोरा । ऐसी मति उर विहरु न तोरा ।

दोहा—हम कुल घालक सत्य तुम, कुल पालक दशशीश ।
अन्धे बधिर न कहहिं अस, श्रवण नयन तव बीश ।

रावण- चौपाई

खल तब कठिन वचन मैं सहऊँ । नीति धर्म सब जानत अहऊँ ।

अंगद-

दशशिर धर्मशीलता तोरी । हमहुँ सुनी कृति परतिय चोरी ।
देखेउ नयन दूत रखवारी । बूड़ि न मरेउ धर्म व्रतधारी ।
नाक कान बिनु भगिनी निहारी । क्षमा कीन तुम धर्म विचारी ।
धर्मशीलता तव जग जागी । पावा दरश हमहुँ बड़ भागी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रावण–

दोहा—जनि जल्पसि जड़ जन्तु कपि, शठ विलोकु मम बाहु।
लोक पाल बल विपुल शशि, ग्रसन हेतु जिमि राहु।
पुनि नभ सर मम कर निकर, कर कमलन पर वास।
शोभित भयो मराल इव, शम्भु सहित कैलास।

चौपाई

तुमरे कटक माहिं सुनु अङ्गद। मोसन लरहिं कवन योधा वद।
तव प्रभु नारि विरह बलहीना। अनुज तासु दुख दुखित मलीना।
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ। बन्धु हमार भीरु अति सोऊ।
जामवन्त मन्त्री अति बूढ़ा। सो किमि होय समर आरूढ़ा।
शिल्प कर्म जानहिं नल नीला। है कपि एक महा बल शीला।
आवा नगर प्रथम जेहिं जारा। मारेउ लघु सुत अक्ष कुमारा।

अङ्गद–(रावण से)

सत्य वचन कह निशिचर नाहा। साँचेउँ कीश कीन्ह पुरदाहा।
रावण नगर अल्प कपि दहई। को अस झूठ कहै को सुनई।
जो अति सुभठ सराहेउ रावन। सो सुग्रीव केरि लघु धावन।
चले बहुत सो शूर न होई। पठवा खबर लेन हम सोई।

दोहा—अब जाना पुर दहेउ कपि, बिनु प्रभु आयसु पाय।
गयेउ न सो फिर नाथ पँह, तेहि भय रहेउ लुकाय।
सत्य कहसि दशकण्ठ तै, मोहि न कछु सुनि कोई।
कोउ न हमरे कटक अस, तुम सन लरत जो सोई।
प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति अस आहि।
यों मृगपति बध मेंडिकहि, भली कहै को ताहि।
यद्यपि लघुता राम कहँ, तोहि बधे बड़ दोष।
तदपि कठिन दशकण्ठ सुनु, क्षत्रि जाति कर रोष।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रावण–

धन्य कीश जो निज प्रभु काजा। जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा।
नाच कूद कर लोक रिझाई। पति हित करत कर्म निपुणाई।
अंगद स्वामि भक्त तव जाती। प्रभु गुण कस न कहत यहि भाँति।
मैं गुण ग्राहक परम सुजाना। तव कटु वचन करौं नहिं काना।

अङ्गद–(रावण से) चौपाई

सुन शठ तव गुण ग्राहकताई। सत्य पवन सुत मोहि सुनाई।
वन विध्वंसि सुत बधि पुर जारा। तदपि न तेहि कछु कृत उपकारा।
देखेऊँ आइ जो कछु कपि भाषा। तुम्हरे लाज न रोष न भाखा।
सोई विचारि तब प्रकृति सुहाई। दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई।

रावण–अरे मूढ़ वानर! इसी बुद्धि से तो वाप को खा गया, धिक्कार है तुझे!

अङ्गद–पिता को खाकर तुझे भी खा जाता, पर एक वात याद आ गई तू पिताजी के यश का कारण है इसी हेतु तुझे छोड़ता हूँ। अरे रावण तू कौन रावण है? सहस्रवाहु एवं राजा बलि से लड़ने वाला तू ही है क्या? तव तो धन्य है शाबास! और वो कौन रावण था जिसे पिताजी ने बगल में दबाकर मुद्दतों में छोड़ा था?

रावण– चौपाई

सुन शठ सोई रावण बलशीला। हरगिरि जानु जासु भुज लीला।
जानु उमापति जासु सुराई। पूजे जेहि शिर सुमन चढ़ाई।
शिर सरोज निज करन उतारी। पूजेउ अमित बार त्रिपुरारी।

दोहा–तेहि रावण कहँ लघु कहेसि, नर कर करेसि बखान।
रे कपि बरबर खर्ब खल, अब जाना तब ज्ञान।

अंगद– चौपाई

मूढ़ मृषा जनि मारेसि गाला। राम बैर होइहिं अस हाला।
तब शिर निकर कपिन के आगे। परि हैं धरणि राम शर लागें।
ते तब शिर कन्दुक इव नाना। खेलहिं भालु कीश चौगाना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तब कि चलहिं अस गाल तुम्हारा। अस विचारि भजु राम उदारा।

रावण–

दोहा–कुम्भकरण मम बन्धु सम, सुत प्रसिद्ध साकार।
मोर पराक्रम सुनेसि नहिं, जितेउँ चराचर झारि।

चौपाई

शठ शाखा मृग जोरि सहाई। बाँध्यो सिन्धु यहै प्रभुताई।
लाँघहिं खग अनेक वारीशा। शूर न होहिं सुनहु जड़ कीशा।
बीश पयोधि अगाध अपारा। को अस वीर जो पावहिं पारा।
दिगपालन मैं नीर भरावा। भूप सुयश खल मोहिं सुनावा।
जो पै समर सुभट तव नाथा। पुनि-पुनि कहसि जासु गुण गाथा।
तौ बसीठ पठवहु केहि काजा। रिपुसन प्रीति करत नहिं लाजा।

अंगद–

दोहा–जरहिं पतंग विमोह वश, मार वहहिं खगवृन्द।
ते नहिं शूर कहावहिं, समुझि देखु मतिमन्द।

चौपाई

दशमुख मैं न बसीठीं आयउ। अस विचारि रघुवीर पठाएऊ।
बार-बार इमि कहेउ कृपाला। नहिं गजारि यश बधे शृगाला।
मन महँ समुझि वचन प्रभु केरे। सहेउँ कठोर वचन शठ तेरे।
नाहित करि मुख भञ्जन तोरा। ले जातेउँ सीतहिं वर जोरा।
दोहा–तोहि पटकि महि सेन हति, चौपट करि तव गाउँ।
मन्दोदरी समेत शठ, जनक सुतहिं ले जाउँ।

रावण–

चौपाई

रे कपि पोच मरण अब चहसि। छोटे बदन बात बड़ि कहसि।
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाके। बुधि बल तेज प्रताप न ताके।
दोहा–अगुण अमान विचारि तेहि, दीन पिता बनवास।
सो दुख अरु युवती विरह, पुनि निसिदिन मम त्रास।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिनके बल को गर्व तोहिं, ऐसे मनुज अनेक।
खाहिं निशाचर दिवस निशि, मूढ़ समुझि तज टेक।

अङ्गद–(भूमि पर हाथ पटकता है, रावण गिरता हुआ सँभल बैठता है। चार मुकुट रावण के गिरे हुये अङ्गद रामचन्द्र के पास फेंकता है)।

रावण–(राक्षसों से) चौपाई

महा अनर्थ कीन्ह यह भाई। धरि मारहु कपि भाग न जाई।
महि अकीश करि फेरि दुहाई। जियत धरहु तापस दोउ भाई।

अङ्गद–

रे तिय चोर कुमारग गामी। खल मल राशि मन्दमति कामी।
राम मनुज बोलत असवानी। गिरिहि न तब रसना अभिमानी।
गिरि हैं रसना सँशय नाहीं। शिरन समेत समर महि माहीं।
सो०–सो नर क्यों दशकन्ध बालि बधेउ जेहि एक शर।
बीसहु लोचन अन्ध, धिक तव जन्म कुजाति जड़।
तव शोणित की प्यास, तृषित राम शायक निकर।
तजेउ तोहिं तेहि आश, कटु जल्पसि निशिचर अधम।

रावण– चौपाई

आयउ शठ तै गाल बजाई। मूढ़ सिखेसि कहां अधिक झुठाई।
बालि कबहुँ अस गाल न मारा। मिलि तपसिन तू भयसि लबारा।

अङ्गद–(रावण से) (ठुमरी)

भाषे न लबार बार बार रे लबार शठ,
तेरी शील वीरता को नेक बतलाऊँ मैं।
तोहे सह जेते यातुधान हैं विराजे इत,
सबहिं सुनाय पाँव रोपि हठ ठाऊँ मैं।
कोउ बलधारी याहि टारे जा पछारे भट,
तिनहिं बताऊँ निज प्राण जोपै ठानूँ मैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जानकी शपथ जानकीश की शपथ,
मातु जानकी शपथ जानकीश को हार जाऊँ मैं।

रावण–अरे राक्षस वीरो ! इस बन्दर का पैर उठाकर इसे पटक दो।

(सब राक्षस उठते हैं। पाँव को नहीं उठा सकते, रावण तब स्वयं ही पैर उठाने की चेष्टा करता है।)

अङ्गद–अरे नीच ! मेरे पग पकड़ता है ? भगवान रामचन्द्र के चरण पकड़ने से उद्धार होगा।

(अङ्गद जाता है)

पटाक्षेप

–००–

सातवाँ दृश्य--कटक विभाग

स्थान—सुबेल शैल

रामचन्द्र सेना सहित बैठे हैं। अङ्गद का प्रवेश।

अङ्गद–(राम को प्रणाम करते हुए) हे नाथ ! रावण के चार मुकुट जो आपके निकट आये हैं– साम, दाम, दण्ड, भेद चार गुण राजाओं के इनमें विद्यमान हैं। रावण समझाने से किसी भाँति नहीं मानता, उसे कालवश जानकर इन चार किरीटों ने आपकी शरण ली है।

रामचन्द्र–युवराज ! मैं तुमको बहुत धन्यवाद देता हूँ। बड़े राजनीतिज्ञ हो इसमें संशय नहीं है। अब क्या करना उचित है ? तुम सुग्रीव और ऋच्छराज एवं विभीषण सब एक सम्मति करो।

सुग्रीव–नाथ ! चार विभाग सेना के बनाकर लक्ष्मण जी महाराज सेनापति इत्यादि स्थिर करें।

लक्ष्मण–भजन (तर्ज–कदाचित धरम शास्त्र कोई सुनाता)

उठो वीर रणधीर सेना सजाओ, अटल मारु रण में मचाओ मचाओ।
आगे महावीर जी को पठाकर, पीछे से कीशों की सेना उठाओ।
ऋच्छों को पूरब दिशा में हटाकर, युवराज अंगद को पीछे पठाओ।
नलनील अरु वीर जितने हैं सारे, जावें ये सब कीश दक्खिन दुआरे।
सभी वीर रघुवीर की जय मनाकर, सभी राक्षसों को कटाओ हटाओ।

वानर गण–आर्य कुल की जय, सनातन धर्म की जय, महाराजा रामचन्द्र की जय (कहते हुये जाते हैं)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आठवां दृश्य—लंका पर आक्रमण

स्थान—रावण गृह

(रावण एवं राक्षसगण बैठे हैं—चारों ओर से वानरों का आक्रमण होता है)

रावण—(राक्षसों से) चौपाई

देखेउ कीशन केरि ढिठाई। निशिचर तुमहि चलहु अब धाई।
आये कीश काल के प्रेरे। क्षुधावन्त रचनीचर मेरे।
सुभट सकल चारिहुँ दिशि जाहू। धरि धरि भालु कीश सब खाहू।

(सेनाओं को सजाकर) थियेटर

उठो उठो मेरे निशिचर वीरों कमर कटारा कस कस के।
उठो शीश कीशों के काटो समर भूमि में डट-डट के।
उठो बहा दो रक्त नदी, बह चलेंगे शत्रु कट कट के।
बरछी भाले तोमर सारे, तीर को मारो तक तक के।
ॠण असुरों का जल्द चुका दो, समर मध्य में धंस धंस के।

(रावण जाता है) दोनों ओर से घोर युद्ध होता है, राक्षस भागते हैं।

पर्दा गिरता है।

—०००—

नवम दृश्य--मेघनाद प्रस्थान

स्थान—अन्तःपुर

(रावण मन्त्रियों सहित बैठा है। युद्ध से लौटे हुये राक्षसों का प्रवेश)

राक्षसगण-हे नाथ! दुर्मुख,सुररिपु और मनुज आहारी, अतिकाय, अकम्पन सब वीर मारे गये, आधा कटक वानरों ने साफ कर दिया है, हम लोग भाग आये।

रावण—अरे नीचों! धिक्कार है तुम्हारे जीवन को, असुर कुल में जन्म लेकर बानरों के भय से भाग रहे हो।

चौपाई

जो रणबिमुख सुना मैं काना। तेहि मारब फिर कठिन कृपाना।
सर्वस खाई भोग करि नाना। समर भूमि भा दुर्लभ प्राना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(राक्षस फिर रणभूमि को जाते हैं, माल्यवन्त का प्रवेश)

रावण–(माल्यवन्त से) चौपाई

आधा कटक कपिन संहारा। कहहु वेगि का करिय विचारा।
दुर्मुख सुररिपु सब भट भारी। परेउ समर महँ मनुज अहारी।

माल्यवन्त–(रावण से)

जबते तुम सीता हरि आनी। असगुन होहिं न जाय बखानी।
वेद पुराण जासु यश गावा। तासु विमुख सुख काहु न पावा।

(श्लोक–नेपाली भाषा में)

रामहुंत परात्मा ति कहाँ विकारी, यस्लोक पाच्छन् नर रूपधारी।
काम गर्न लागा तिनरै सरीखा, लीला अपार छन भगवान हरीका।

दोहा–हिरण्याक्ष भ्राता सहित, मधु कैटभ बलवान्।
जेहिं मारेउ सोइ अवतरेउ, कृपा सिन्धु भगवान्।
काल रूप खल बल दहन, गुणागार घन बोध।
जेहि सेवहिं शिव कमल भव, तेहि सन कौन विरोध।

रावण–[मन्त्री से] चौपाई

गुरु सम बोध करसि मम आगे। करिया मुख करि जाहु अभागे।
बूढ़ भयेसि नतु मरतेउँ तोही। अब जनि बदन दिखावसि मोही।

[माल्यवन्त जाता है] मेघनाद का प्रवेश—रावण को प्रणाम करता है]

रावण—हे पुत्र ! क्या करना चाहिए। अब तो बड़ा उपद्रव होने लगा है !

मेघनाद—[रावण से] चौपाई

लरिय युद्ध का करिय विचारा। नर कपि भालु अहार हमारा।
कौतुक प्रात देखिहहु मोरा। करिहौं बहुत कहत हौं थोरा।
इष्टदेव सन जो वर पायउँ। अब लगि तात न तुमहिं दिखायउँ।

[सेना सहित विदा होता है]

पटाक्षेप

इति सप्तम चरित्र समाप्तम् :

—०००—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अष्टम दिवस

प्रथम दृश्य--मेघनाद लक्ष्मण युद्ध

स्थान--रणभूमि

(वानरों की सेना सहित रामचन्द्र बैठे हैं मेघनाद का प्रवेश)

मेघनाद-(आप ही आप)

कहँ कौशलाधीश दोउ भ्राता । धन्वी सकल लोक विख्याता ।
कहँ नल नील द्विविद सुग्रीवा । कहँ अंगद हनुमत बलसीवा ।
कहां विभीषण भ्राता द्रोही । आजु शठहिं हठि मारहुँ वोही ।

(वाण मारता हुआ वानरी सेना को व्यथित करता है)

(राम से)–अरे क्षत्रियाधम ! आज इन्द्रजीत के हाथ से प्राण बचाओ। धन्य है इस शूरता को व्याध की भाँति बालि वानर को मारा । रे रे तपस्वी ! आज ताड़िका, सुबाहु, खरदूषण, त्रिशिरा सब का पलटा लेता हूं, तिष्ट तिष्ट ।

(अनेक प्रकार की माया करता हुआ कभी गुप्त कभी प्रगट होता है, वानरों को मूर्छित करके फिर अन्तर्ध्यान होता है)

लक्ष्मण–आर्य ! मुझे आज्ञा दीजिए (धनुष चढ़ा अङ्गद, हनुमानादि वीर वानरों को साथ ले विदा होते हैं)

पटाक्षेप

द्वितीय दृश्य--लक्ष्मण मूर्छा

स्थान--रणक्षेत्र

(मेघनाद राक्षसों सहित खड़ा है, वानरों सहित लक्ष्मण का प्रवेश)

लक्ष्मण–आ दुरात्मन ! ऋषि मुनियों को दुःख देने वाले रावण पुत्र ! सामने आ ।

मेघनाद–रे रे वाचाल तपस्वी ! तिष्ट तिष्ट तेरी ही खोज में तो मैं था, अरे क्षुद्र पुरुष ! आजा सन्मुख (दोनों योद्धा वड़े जोश के साथ लड़ते हैं)

लक्ष्मण–(सारी राक्षसों की सेना को मार देते हैं) अरे मेघनाद शावाश !

मेघनाद–रे रे राजपुत्र ! तेरा काम तमाम हुआ (वीर घातनी शक्ति छाती में मारता है, लक्ष्मण जी मूर्छित हो गिर पड़ते हैं)

मेघनाद–(निकट जाकर उठाने की चेष्टा करता है) यह बड़ा भारी है। आहा-हा-हा ! [हंसता है और लंका को जाता है]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हनुमान–हे रघुवर ! हे राम ? तुम्हारी लीला !

[लक्ष्मण जी को उठाकर राम जी के निकट जाते हैं]

[परदा उठता है]

–०००–

(अन्तर्गत) तृतीय दृश्य

स्थान—रामाश्रम

[रामचन्द्र, सुग्रीव, विभीषणादि सहित बैठे हैं। लक्ष्मण जी को पीठ पर लिये हुये हनुमान जी आते हैं।

रामचन्द्र–हा लक्ष्मण ! २ (कहते हुये गोद में लिटा लेते हैं) हाय मेरे प्यारे ! हाय मेरे जीवनाधार ! हाय भ्राता ! अब जय से क्या प्रयोजन है ? हा ! अपने प्रिय भाई को तड़फते छोड़कर कहाँ चले गये ? एक बार तो बोलो प्यारे लक्ष्मण ! मेरे नेत्रों को सुख देने वाले ! तेरी मीठी-मीठी बाणी सुनकर मैं अयोध्या को भूला हुआ था।

(अश्रु पात पोंछते हुए) रागिनी

ऐसाहि कोई उग्र पाप हमने है किया।
ना जानूं काको परम दुःख हमने है दिया।
देखो पिता ने तज दिया सीता हरी गई।
एक आसरा था तुम से सो ईश्वर ने ले लिया।

हनुमान–(राम से) चौपाई

करूँ विनय प्रभु नावउं माथा। लखन सोच जनि कीजिय नाथा।
कहिय ब्रह्म हरिहर कहँ आनी। अमर अमर बुलवावों बानी।
कहिय पताल जाय हति नागा। आनौं अमिय कुण्डकर भागा।

जामवन्त–

मोरे वचन सुनो हनुमाना। लंका जाहु वेगि बलवाना।
तहाँ सुषेन वैद्य एक भाई। रहै ताहि लावहु तुम धाई।

हनुमान–जो आज्ञा हो (लंका में जा क्षण भर में सुषेन को ले आते हैं)

सुषेन वैद्य–(लक्ष्मण जी की नाड़ी परीक्षा देख)

राग पीलू

है कोउ योद्धा या कपिदल में, लावै संजीवन क्षण माँही रे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्रोणाचल में है वो संजीवन जोत जरे उस माँही रे।
उसको पाय लछीमन जीयें सुध आवे तन माँही रे।

राम—वायुपुत्र ! तुम्हारे अतिरिक्त ऐसा कौन है जो द्रोणाचल में जाये, हे कपिश्रेष्ठ ! शीघ्र जाओ। रात ही रात में औषध ले जाओ।

हनुमान—जो आज्ञा नाथ की। (जाते हैं)

पटाक्षेप

—००—

चतुर्थ दृश्य-भरत हनुमान सम्वाद

स्थान—अयोध्या

(भरत जी खड़े हैं, द्रोणाचल पर्वत लिये हुये हनुमान का प्रवेश और भरत जी का वाण मारना)

हनुमान (उच्च स्वर से) हे राम ! ३ (मूर्छित होते हैं)

भरत—(आप ही आप) चौपाई

जेहि विधि राम विमुख मोहिकीन्हा। तेहि पुनि यह दारुण दुखदीन्हा।
जो मोरे मन बच अरु काया। प्रीति रामपद कमल अमाया।
तौ कपि होउ विगत श्रम शूला। जो मोपर रघुपति अनुकूला।

हनुमान—(मूर्छा से जागता है) रामचन्द्र की जय !

भरत—(हनुमान से) हे सखा ! रामचन्द्र जी, जानकी जी तथा लक्ष्मण सहित कुशल पूर्वक हैं क्या ?

हनुमान—(भरत से) हे महाराज ? रावण ने जानकी जी को हर लिया है। अब लङ्का में राक्षसों से युद्ध हो रहा है और रणक्षेत्र में लक्ष्मण जी मूर्छित हैं, बूटी ले जाकर इसी रात्रि में मुझे वहाँ जाना है।

भरत—(हनुमान से) चौपाई

तात गहरु होइ हैं तोहिं जाता। काज नशाइहिं होत प्रभाता।
चढ़ मम शायक शैल समेता। पठवौं तोहि जहं कृपा निकेता।

हनुमान—हे नाथ ! आपके प्रताप से मैं वाण के ही तुल्य जाऊँगा।

प्रणाम करके जाते हैं

पटाक्षेप

—०००—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंचम दृश्य--राम विलाप

स्थान—रणभूमि

(लक्ष्मण जी अचेत पड़े हैं और रामचन्द्र जी सेना सहित बैठे हैं।)

राम–[आप ही आप] चौपाई

अर्द्ध रात्रि गई कपि नहिं आवा। अवसि अनुज मैं आज गँवावा।
सकहु न दुखित देखि मोहिं काऊ। वन्धु सदा तव मृदुल सुभाऊ।
मम हित लागि तजेउ पितु माता। सहेउ विपन हिम आतप बाता।
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु विलोकि मोरि विकलाई।

राग देश

जैसे अब दुख दीन, विधि मैं कबहुं न अस दुख पायो।
सीता हरण मरण मम पितु को, तपसी नाम धरायो।
तजकर अवध को बन बन डोलूँ, कन्द मूल फल खायो।
होत राज अभिषेक एक दिन, तेहि दिन बन में आयो।
राजपाट छूटा एक क्षण में, शिर में जटा बँधायो ॥विधि०॥

सुग्रीव–नाथ! धैर्य करिये।

राम– (आप ही आप) चौपाई

जो जनतेउँ बन बन्धु विछोहू। पिता वचन नहिं मनतेउँ बोहू।
सुत वित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।
अस विचार जिय जागहु ताता। मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता।
यथा पंखबिन खगपति दीना। मणि बिन फणि करिवर कर हीना।

रागिनी

मैं रण में अकेला तड़पूँ, भइया बोल बोल बोल।
तोहे कैसी निद्रा आई, लख नेक मोर विकलाई।
दो बात करो अब भइया, अँखियाँ खोल खोल खोल।
तुम पड़े धरणि पर भ्राता, भा सब विधि वाम विधाता।
हनुमान था एक सहारा, रहा कहाँ डोल डोल डोल।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौपाई

अब अवलोकि शोक यह तोरा। सहै कठोर निठुर उर मोरा।
जैहौं अवध कवन मुँह लाई। नारि हेतु प्रिय बन्धु गंवाई।
बरु अपयश सहतेउं जग माँहीं। नारि हानि विशेष क्षति नाहीं।
निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम प्राण अधारा।
सौंपेउ मोहिं तुमहिं गहि पानी। सब विधि सुखद परम हित जानी।
उत्तर ताहि देहौं का जाई। उठि किन मोहिं समुझावहु भाई।

(द्रोणाचल पर्वत लिये हुए हनुमान का प्रवेश)

सुखेन—(बूंटी खोजकर सुंघाता है) हे लक्ष्मण उठो।

लक्ष्मण—(सचेत होकर) रागिनी

मुझको कौन उठाकर लाया।
मैं रण बीच गया लड़ने को, यहाँ मैं कैसे आया।
भ्राता मैं पूछौं कर जोरी दीजे मुझे बताया। मुझको०।

❀ पटाक्षेप ❀

छठा दृश्य-कुम्भकर्ण निद्रा भंग

स्थान—कुम्भकर्ण महल

(निद्रा में अचेत कुम्भकर्ण को, रावण एवं अन्य राक्षसगण जगा रहे हैं)

कुम्भकर्ण—माँस २ मदिरा २ (कहता हुआ जागता है)

(रावण से) चौपाई

मैं तोहे पूछौं सुन प्रिय भाई। काहे तव मुख रहा सुखाई।
केहि कारण तुम मोहि जगावा। कहा भीर अब तोहि पर आवा।

रावण—(कुम्भकर्ण से)

कौशलेश दशरथ सुत आये। तिन सब निशिचर मार गिराये।
तात कपिन निशिचर सब मारे। बड़े बड़े योद्धा संहारे।
दुरमुख सुररिपु मनुज अहारी। भट अतिकाय अकम्पन भारी।
अपर महोदर आदिक वीरा। परे समर महं सब रणधीरा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुम्भकर्ण–(रावण से)

भल न कीन तैं निशिचर नाहा। अब मोहि आय जगायेउ काहा।
अजहुँ तात त्यागहु अभिमाना। भजहु राम होइहिं कल्याना।
हैं दशशीश मनुज रघुनायक। जाके हनुमान से पायक।
अहह बन्धु तै कीन्ह खुटाई। प्रथम न मोहि जगायहु आई।
कीन्हेउ प्रभु विरोध तेहि देवक। शिव विरंचि सुर जाके सेवक।
नारद मुनि मोहे ज्ञान जो कहेऊ। कहतेउं तोहि समय नहिं रहेऊ।
अब भरि अंग भेंट मोहि भाई। लोचन सफल करौं मैं जाई।
श्याम गात सरसीरुह लोचन। देखौं जाय ताप त्रयमोचन।

(भरे हुये अनेक घट मदिरा को पीकर तथा मांस खाकर युद्धक्षेत्र को जाता है)

पटाक्षेप

–०००–

सातवां दृश्य-भ्राता सम्मेलन

स्थान—मार्ग

(एक ओर कुम्भकर्ण खड़ा है दूसरी ओर से विभीषण आता है)

विभीषण—(प्रणाम करके) चौपाई

तात लात मोहि रावण मारा। कहत परम हित मन्त्र विचारा।
तेहि गलानि रघुपति पहँ आएऊँ। दीन जानि प्रभु के मन भाएऊँ।

कुम्भकर्ण–(विभीषण से)

सुनु सुत भयेऊ कालवश रावन। सो किमि माने परम सिखावन।
धन्य धन्य तें धन्य विभीषण। तात भयउ निशिचर कुल भूषण।
बन्धु वंश तै कीन्ह उजागर। भजहु राम शोभा सुख सागर।
दोहा—मन क्रम वचन कपट तजि, भजहु तात रघुवीर।
जाहु न निज पर सूझ मोहि, जाहुँ राम के तीर।

(दोनों पृथक २ हो जाते हैं)

पर्दा उठता है।

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आठवां दृश्य—कुम्भकर्ण वध

स्थान—रणभूमि

(रामचन्द्र सेना सहित बैठे हैं, विभीषण आता है)

विभीषण—(राम से) चौपाई

नाथ भूधराकार शरीरा। कुम्भकर्ण आवत रणधीरा।

नाक कान गिरि खोह समाना। रोमावली लता तरु नाना।

(नैपथ्य से शब्द)

(कुम्भकर्ण का प्रवेश)

कुम्भकर्ण—(बेहोश हो) रागिनी

राम को खाऊँ लखन को खाऊँ सीता को लूँ कच्ची खा।

हनुमान अंगद को खाऊँ और खाऊँ सुग्रीव भला।

(किल-किल शब्द करते हुये बन्दर लड़ते हैं! राक्षसी सेना का प्रवेश)

कुम्भकर्ण—(वानरों को मारता खाता हुआ) अरे दशरथ नन्दन! सम्मुख आ।

रामचन्द्र—(धनुष चढ़ाते हैं दोनों का युद्ध होता है कुम्भकर्ण वाण लगते ही प्राण त्यागता है। रावण के सम्मुख सिर कटकर गिरता है।)

पटाक्षेप

—०—

अष्टम दृश्य-रावण विलाप

स्थान—रावण गृह

(रावण कुम्भकर्ण का सिर आगे रख रो रहा है। राक्षस खड़े हैं)

रावण—हे भ्राता कुम्भकर्ण ! आज लंका को सूनी कर गये। (वस्त्र से अश्रु पोंछता है) हाय ! आज देवलोक में आनन्द होगा। जो तेरी षटमास की निद्रा से प्रसन्न एवं एक दिन जागने से दुःखी होते थे वे आज तेरी दीर्घ निद्रा का समाचार सुनकर कितने प्रसन्न होंगे। हाय-हाय मेरा हृदय फटा जाता है ! हाँ भाई ! हे देव दानवों को रुलाने वाले कहाँ गये ? अब तुम्हारे भवन में छः महीने तक कौन सोवेगा। हा ! हा !! (मूर्छित होता है)

(फिर सचेत हो)

कुम्भकर्ण मम बन्धु पियारे। मोहिं त्यागि तुम कहाँ सिधारे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुर मुनि असुर वीर तुम जीते। दैव योग तापस सन बीते।

(मेघनाद आता है)

मेघनाद–(रावण से) शोक त्याग धैर्य धरिये, आप सरीखे शूर पुरुषों को शोक से व्याकुल होना शोभा नहीं देता है। संसार की यही गति है। अब शत्रुओं का नाश करना हमारा धर्म है। हे तात ! मैं अभी जाकर सब वीर राक्षसों का बदला लेता हूँ। भालू वानरों का ग्रास करता हूँ। लक्ष्मण का काम एक बार तो हो ही चुका था। अब दोनों भाइयों को यमपुर भेजता हूँ। (जोर का शब्द) आ हा हा ! (जाता है) ० पटाक्षेप ०

नवम दृश्य-मेघनाद युद्ध

स्थान—रणभूमि

(रामचन्द्र, लक्ष्मण वानरों सहित बैठे हैं, मेघनाद खड्ग लिये आता है)

मेघनाद–(गर्जता हुआ) रे-रे तापस ! तेरा तापस देखता हूँ। सामने रहो!

क्षुद्राः सन्त्रासमेते निजहतु हरयः क्षीणशक्रेभकुम्भ।
युष्मद्देहेषु लज्जां दधति परममी सायका निष्पतन्तः।
सौमित्रे तिष्ठ पात्रं त्वमसि नहिरूषां नन्वहं मेघनादः।
किञ्चिद्भ्रू भंग लीला नियमित जलधि राममन्वेषयामि।

लक्ष्मण–अरे राक्षस ! क्यों वृथा बकवास करता है ?

मेघनाद–(अन्तर्ध्यान होकर बाणों की वृष्टि एव अनेक प्रकार की माया करता है।)

(नैपथ्य से) अरे तपस्वी! मेरे चाचा कुम्भकर्ण को मारने वाले तेरा वध करता हूँ।

(नाग फाँस लेकर प्रकट होता है। सेना सहित राम लक्ष्मण को बाँधता है)

जामवन्त–रे-रे नीच राक्षस ! अरे खल खड़ा रह भागता कहाँ है ?

मेघनाद–(त्रिशूल लेकर झपटता है)

वृद्धि जानि छांड़ेउँ शठ तोहि। लागेसि अधम प्रचारन मोही।
रे खल अधम वधौं अब तोही। कीन्हेसि कोप ऋच्छ शठ मोही।

(दोनों का युद्ध)

जामवन्त–(लात मारता है। मेघनाद मूर्छित हो, नैपथ्य की ओर गिरता है गरुण प्रवेश कर नागफाँस काटता है।)

पटाक्षेप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथम दृश्य--लक्षमण प्रण

स्थान—रणाँगण

(नैपथ्य में) राम कहा हैं ? लक्ष्मण कहाँ हैं ? अरे तापस तेरा घातक आ गया ! (इत्यादि शब्द जोर से होते हैं)

रामचन्द्र–(लक्ष्मण) हे भ्राता ! नीच राक्षस फिर आया, अब शीघ्र इस दुष्ट का प्राण हरो।

चौपाई

तुम लक्ष्मण रण मारेहु ओही। देखि सभय सुर बढ़ दुख मोही।
मारेहु तेहि बल बुधि उपाई। जेहि छीजें निशिचर सन भाई।

लक्ष्मण–(कटि बाँधकर)

चौपाई

जो तेहि आज बधे बिन आऊँ। तो रघुपति सेवक न कहाऊँ।
यमपुर करि नीचहि क्षण माँहि। प्रभु पग कृपा न संशय याही।
जो शत शंकर करहिं सहाई। तदपि हतौं रण राम दुहाई।

रामचन्द्र सेना सहित बैठे हैं, लक्ष्मण जी खड़े हैं,
(प्रणाम करके विदा होते हैं)

पटाक्षेप

—०००—

अन्तर्गत मेघनाद यज्ञ प्रहसन

स्थान—लंका

(मेघनाद माला धारण किये हुए यज्ञ की सामग्री सहित अग्नि-कुण्ड के समीप बैठा है। मद्य और रुधिर (१) लेकर दूत का प्रवेश)

मेघनाद–(दूत से) अरे सेवक सामग्री तो आ गई भट्टाचार्य शास्त्री नहीं आये, शीघ्र बुला।

दूत–(मेघनाद से) जो आज्ञा।

(लम्बा धोता, बड़ा पोथा वाले एक वृद्ध लालची पण्डित का प्रवेश)

दूत–पण्डित जी पांय लागूँ।

---

(१) नोट–रामायण में इस आसुरी यज्ञ के स्वरूप का ऐसा वर्णन है। यथा–जाइ कपिन देखा सो वैसा। आहुति देत रुधिर अरु भैंसा॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पण्डित–(सेवक से) अरे भाई झूठ-मूठ को पाँय लगते हो ? कुछ हाथ लगाओ जिसमें हमारा काम और तुम्हारा नाम हो।

दूत–(पण्डित से हाथ पकड़कर) चलो यज्ञ पूरा करावो हाथ वहाँ लगेगा (कान में कुछ काना-फूसी करते हुए चार अँगुली दिखाता है।)

पण्डित–(प्रसन्न होकर मेघनाद के समीप जाते हुए) जय हो कल्याण हो।

मेघनाद–(प्रणाम करते हुए आसन देता है) ब्रह्मन अत्रोपविश्यताम्।

पण्डित–(बैठता है) आचम्यन-आचमन कर लेउ-पुष्यं गृहीत्वा यं ब्रह्मवे० इष्ट देवता को फूल चढ़ाई देऊ। श्वासं नियम्य-प्राणायाम करि लेऊ। अर्घ पात्रं तू सम्पन्न, चार दिशा में अक्षतादि फैंको तिला रक्षन्तु दितिजा, दुर्भाक्षन्तु, राक्षसः अस्त्राय फट मद्य पात्रं संप्रोक्ष्यः अत्र जो है सो वारुणी पात्र और रुधिर मांस आदि सामग्री धरो हवन सामग्री सम्प्रोक्ष्य कर्मोपयोगी दिक्षणापीतामुद्रान्की दक्षिणा धरो।

संकल्प ले लो–विष्णुर्विष्णुर्विष्णु लंका द्वीपे त्रेता युगे षष्ठव्दानमिध्ये अमुक सम्वत्सरे दक्षिणायने शरद ऋतौ आश्विन मासे कन्या गते सवितरि आश्विनमासेऽतिथौ मेघनाद शर्माऽहं दीर्घायुरारोग्या वाप्तये शत्रु भयनिवृत्ति पूर्वक हर्ष विजय प्राप्त्यर्थं हवनमहं करिष्ये अक्षत जमीन पर छोड़ो-दक्षिणा यहाँ लाओ। भू स्वाहा इदमग्नये भुवः स्वाहा० वायवे० स्वः स्वाहा इदं सूर्यायः। अब अपने इष्ट मन्त्र से होम करो मैं स्वाहा० बोलता हूँ।

[रुधिरादि से हवन करते हैं]

अंगद हनुमानादिक वानरों का प्रवेश।

पण्डित भागता है--प्राण के ग्राहक आ गये। प्राण के ग्राहक आये। चिल्लाता है। वानर अग्नि कुण्ड ले जाते हैं।

यज्ञ-भंग देखकर मेघनाद क्रुद्ध हो त्रिशूल लेकर लड़ने को दौड़ता है।

पटाक्षेप

—०००—

द्वितीय दृश्य-मेघनाद बध

स्थान—रणक्षेत्र

(एक ओर राक्षसों की और दूसरी ओर बानरों की सेना खड़ी है। लक्ष्मण, मेघनाद दोनों मध्य में लड़ रहे हैं)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लक्ष्मण—रे-रे मेघनाद ! आज तेरे प्राण जाते हैं (बाण छोड़ते हैं)

मेघनाद—(भूमि पर गिरता है) राम राम ! लक्ष्मण राम !

(हाथ सुलोचना भवन में सिर रामचन्द्र के समीप गिर रहा है)

पटाक्षेप

तृतीय दृश्य-रावण शोक

स्थान—लंका राज गृह

(रावण बैठा है, द्वारपाल खड़े हैं। एक राक्षस आता है)

राक्षस—आज की लड़ाई में इन्द्रजीत भी मारे गये हैं। लक्ष्मण ने मारा है।

रावण—(मूर्छित होकर गिरता है) हा पुत्र इन्द्रजीत ! मेरे आज्ञाकारी ! आज तू भी मुझे छोड़ चला ! (अश्रु पात करता हुआ) हाय ! आज वीर इन्द्र को बाँधने वाला कहाँ गया ? पुत्र मेघनाद ! आज तेरा नाम ही शेष रहा। (आँसू पोंछते हुए)

राग सोरठ

मेरो सुत ऐसो बली कहाँ तू गयो।
ऐरावत जिन पूँछ ईंच के इन्द्रहि जीत लियो।
तेरे शरन सों दिग्गज डोले देवन बाँधि गयो।
भुजबल तेरो कहाँ लौं वरणों सुरपति काँपि रह्यो।
नागफाँस ते बांध्यो पवनसुत, लक्ष्मण धरणि परयो।

चौपाई

हा सुत सन्तत आज्ञाकारी। गये कहाँ तुम मोहि बिसारी।
शक्र आदि जीतेउ सब देवा। सुर नर वृन्द करायेउ सेवा।
दूसर रहा न भुजबल दापा। स्वर्ग भूमि तल रचेउ प्रतापा।

(मन्दोदरी तथा सुलोचना का रोते हुए प्रवेश)

सुलोचना—(रावण से) चौपाई

तुमहिं अछत अस दशा हमारी। सुख तजि भयउँ शोक अधिकारी।
मुनी पुलस्त्य कर भा कुल नाशा। अब रवि शशि सुख करहिं प्रकाशा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सलिल गंग निर्मल बह आजू । सुबस बसहिं सुरनायक राजू ।
करहु सो यतन मिलैं मोहि शीशा । तुम सामर्थ्य निशाचर ईशा ।

रावण–(सुलोचना से)

अब लगि रहा भरोसा भारी । कुम्भकरण घननाद सुरारी ।
हमहुँ आज लगि कौन न जूझा । इन सब कर पुरुषारथ बूझा ।
मरे ते नर बानर के मारे । बात सुनत अति लाज हमारे ।
गिनती कवन वीर मँह तिनकी । अस दुर्दशा कीन्ह कपि जिनकी ।
तजहु शोक कुल वधू पतोहू । उन समान जनि जानेसि मोहू ।
पुत्रि विलम्ब करौं घटि चारी । देखो मोर भयङ्कर भारी ।
आनि शीश तब शत्रु न केरा । बिन प्रयास नहिं लाबहुं बेरा ।
भोगत जन्तु पुराकृत भोगा । नतुकिमि निश्चिर वनचर योगा ।

दोहा—राम लषण सुग्रीव नल, नील द्विविद हनुमन्त ।
माथ विभीषण ऋषभ कर, आनौं मारि तुरन्त ।

सुलोचना–(रावण से) चौपाई

नर वानर पुरषारथ देखत । वड़ो प्रभाव छोट करि लेखत ।
कूदि सिन्धु कपि लंका जारी । लघु कर मानत ताहि सुरारी ।
ते रिपु चहत दशानन जीती । देखहु महा मोह कर नीती ।
उत्तर देउँ तो पातक होई । का विवाद अब सर्वस खोई ।
फिरहिं राज तो मोहिं न काजू । पिय विहीन सब शोक समाजू ।

(रावण उठकर अन्दर चला जाता है)

मन्दोदरी–(सुलोचना से) चौपाई

सुनी जो नारद मुनि की वानी । भई सत्य सुन सुमुखि सयानी ।
सुरमणि भूषण वसन विमाना । भोग करहिं वनचर कुल नाना ।
जाहूँ राम पँह पति शिर लागी । तनु संकोच आनु किनु माँगी ।
है पुनि ससुर विभीषण तोरा । बालि तनय बालक सम मोरा ।
एक नारिव्रत रघुवर केरा । लषण सुयश तुम सुनेय घनेरा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जामवन्त मन्त्री सुग्रीवा । द्विविद मयन्द महाबल सीवा ।
जानहु ब्रह्मचर्य हनुमन्ता । शिव स्वरूप भव हर भगवन्ता ।
सदा नीति रत राम नरेशा । तहाँ जात कहु कवन कलेशा ।

हे पुत्री अपने पति का शीश माँगने के हेतु रामचन्द्र के समीप जाओ। कुछ संकोच न करो। (सुलोचना जाती है)

पटाक्षेप

—०००—

चतुर्थ दृश्य--सुलोचना गमन

स्थान–रणभूमि

(रामचन्द्र लक्ष्मण सेना सहित बैठे हैं। सुलोचना का प्रवेश)

विभीषण–(सुलोचना को करुणामय रुदन करती हुई आती देखकर राम से)

चौपाई

पुत्र वधू दशकन्धर केरी । आई नाथ शरण तव हेरी ।
मेघनाद की नारि सुशीला । असगति प्रभु विरोध कर लीला ।

सुलोचना--(हाथ जोड़ स्तुति करती है) छन्द मात्रा त्रिभंगी

गहि कर वाणी सारंग पाणी सब गुणखानी रामबली ।
सुर सुर भी रक्षक राक्षस भक्षक भक्तहिं रक्षक मानबली ।
मैं रिपु सुत नारी जान अघारी अधिकारी नहीं दुःख भारी ।
हरि विरह दवारी अति भयकारी, सहि बहुवारी दुःखहारी ।
तव शरणहिं आई जन सुखदाई, रघुराई करुणा सागर ।
पति मस्तक पाऊँ जरि संग जाऊँ शिर पाऊँ शोभा आगर ।
तुम पति तनु त्यागी अति बड़भागी अनुरागी जिन मुक्ति लही ।
ममता किमि तासू वरणौं आसू जासु अचल जग भक्ति रही ।

चौपाई

मम अन्तर्यामी भगवाना । नहिं आदि मध्य अवसाना ।
देहु वेगि मोहिं पति शिर स्वामी । करुणामय प्रभु अन्तर्यामी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम–[सुलोचना से] चौपाई

देहुँ जिआइ तोर पति आजू । भोगहु लंक कल्प शत राजू ।
छाँड़ि शोच अब मन हरषाहू । तुरत भवन अपने फिर जाहू ।

सुलोचना–(राम से)

तुम उदार देव सब लायक । करुणामय देखउ रघुनायक ।
हमहुँ विचार दीख मन माहीं । जीवन तें अस मरण सराहीं ।
भुजबल जीति लोकबस कीन्हें । चौदह भुवन भोग करि लीन्हें ।
हमहु जाय मरव सत साधी । मिलव तुमहि जस मिलत समाधी ।

दोहा–निर्मल गति अवसर भई सुनिय सत्य रघुवीर ।
तुमहिं मिलत नहिं होय भय, यथा सिन्धु गत नीर ।

राम–(सुग्रीव से) कपिराज ! मेघनाद का शीश इस सती को दे देना उचित है ।

सुग्रीव–(राम से) हे नाथ ! मुझे तो इसमें सन्देह होता है । कटी हुई भुजा नहीं लिख सकती, बड़ा आश्चर्य होता है ।

चौपाई

हँसहि शीश तो तव तिय साची । नातर निश्चर माया राँची ।
कित अस ग्यान मृतक भुज गावे । जो मुनिवर साधे नहि पावे ।

राम–(सुग्रीव से)

सुन सुग्रीव हँसहि यह शीशा । यह कुतर्क नहिं उचित कपीशा ।
जो पतिव्रता नारि जग होई । कोटि सुकृत फल पावे सोई ।

सुलोचना–हे नाथ ! यदि मनसा वाचा कर्मणा मेरा प्रेम पति के चरण कमल में है, यदि मैंने स्वप्न में भी पर पुरुष का स्मरण न किया होय तो यह शीश अवश्य हँसे । स्वामिन हँसो !

"कटा हुआ सिर खिलखिला कर हँसता है" हा हा आहा हा हा हा !

राम–हे लक्ष्मण ! शीश दे दो (लक्ष्मण देते हैं)

(गाती हुई सुलोचना जाती है)

अब रहूँ मैं किसके ऊपर मन को थाम थाम थाम ।

परदा गिरता है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंचम दृश्य--सती दर्शन

स्थान—श्मशान भूमि

राख व कोयलों के ढेर लगे हैं, चिता जल रही है।

(सुलोचना का प्रवेश)

सुलोचना—(शीश लेकर चिता की परिक्रमा करती हुई)

रागिनी

अब रहूँ मैं किसके ऊपर मन को थाम थाम थाम।
पति स्वर्ग हमारे सिधारे, धिक उन बिनु जीवन हमारे।
पति हीन जगत में नारी का क्या काम काम काम।
रघुनाथ दया अब कीजे, पद मोक्ष हमें प्रभु दीजे।
राम राम रटि तनु को जारुँ, भज श्री राम राम राम।

(चिता में कूदती है)

पटाक्षेप

छठा दृश्य--अहिरावण गमन

स्थान—रावण का गृह

(रावण शिव मन्दिर के समीप बैठकर आकर्षण मन्त्र जप रहा है)

अहिरावण—(आकर) प्रणाम करता है।

(रावण से) चौपाई

कह लंकेश कवन दुख तोही। सुमरेसि तुम केहि कारन मोही।
कहहु कुशल आपन परि जन की। लोक बाग घर घन पुरवन की।

रावण—(अहिरावण से)

तात कुशल अब आई खुटानी। निशिचर कुल कर दशासिरानी।
सकल निशाचर कीशन मारे। रणविच वहै रुधिर के धारे।
राम लषण दुई मनुज न सारे। बड़े बड़े योधा संहारे।
दुर्मुख सुर रिपु अरु अतिकाया। परे समर में सुन अहिराया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुम्भकर्ण कहँ क्षण महँ माही॥अरु घननाद हतेउ भट भारी।
आनेहुँ तोहि बोलि निज पासा॥करहु सो यतन होय रिपु नाशा।

अहिरावण-(रावण से)

सुन रावण जग नीति पियारी॥करे अनीति होय भय भारी।
बिना विचारी रारि तुम ठानी॥कीन्ह सेन कुल सर्वस हानी।
यदपि न योग मोहिं अस बाता॥तदपि हरों तवलगि दोऊ भ्राता।
लै पताल देविहिं बलि दैहौं॥यश पूरण निशिचर कुल लैहौं।

हे तात ! धैर्य धरिये, सबका बदला लेकर आपके सम्मुख जाऊँगा।

विदा होता है।

पटाक्षेप

—०००—

सातवाँ दृश्य--राम हरण

स्थान—राम निवेश

(रामचन्द्र, लक्ष्मण सेना सहित सोये हुये हैं। हनुमान पहरे पर खड़े हैं, विभीषण के वेश में अहिरावण आता है।)

हनुमान—लंकेश्वर ! इस रात्रि के समय कहाँ से आते हो ?

अहिरावण—हे वायु पुत्र ! सन्ध्या-वन्दन करने जलाशय के निकट गया था, आते हुए कुछ विलम्ब हो गया।

(सोये हुये रामचन्द्र लक्ष्मण दोनों भाइयों को ले भागता है। प्रातःकाल उठकर राम लक्ष्मण को न देख बानर दुःखी होते हैं और परस्पर पूछते हैं— कहाँ गये रामचन्द्र ? क्या हुआ ?)

अङ्गद—(विभीषण से) चौपाई

कहँ रघुनायक कहहु विभीषण॥गये कहाँ त्रैलोक्य विभीषण।
केहि विधि आजु धरि उर धीरा॥कहाँ गये लक्ष्मण रघुवीरा।

हनुमान—(अङ्गद से)

सुन युवराज कहुँ तुम पाहीं॥विस्मय होत एक मन माहीं।
कोउ एक आव विभीषण भेषा॥प्रभु के निकट जात हम देखा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विभीषण— चौपाई

सुन कपीश अङ्गद ऋच्छेशा ॐ अहिरावण लैगा अवधेशा।
पन्नग लोक निवासी सोई ॐ मम तनु वेश अपर नहिं कोई।
महाबली जाने सब माया ॐ निश्चय तेहि दशशीश पठाया।
जेहि बल होय तहाँ सो जाई ॐ ताहि जीति आने दोउ भाई।

जामवन्त-

अब मम वचन सुनहु हनुमाना ॐ तब बल तात सकल जग जाना।
वेगि सु यत्न विचारहु ताता। कृपासिन्धु आतहु दोउ भ्राता।
जिमि सीता सुधि भेषज आनी। तेहि प्रकार आनहु सुखखानी।

हनुमान—हे वीरो ! तुम सब सजग रहो, मैं चतुर्दश भुवन तीन लोक सप्त द्वीप में जहाँ होंगे वहाँ से रघुनाथ को लाऊँगा। (जाते हैं)

卐 पटाक्षेप 卐

—०००—

आठवाँ दृश्य--गृद्ध मिलन

स्थान—मार्ग

(गृद्ध और गृद्धिणी एक वृक्ष के नीचे बैठे हैं। हनुमान इनकी वार्ता नेपथ्य से सुन रहे हैं)

गृद्धिणी—हे प्यारे रुधिरप्रिय ! आज मेरी तृष्णा मनुष्य के रुधिर पान करने की हो रही है। मेरे सात मास का गर्भ है। कहीं थोड़ा-सा नर माँस एवं उष्ण रुधिर मिले तो क्षणमात्र में तृष्णा मिट जाय।

गृद्ध-प्यारी अभी जाता हूँ। अवश्य तेरी इच्छा पूरी करूँगा। इस लड़ाई में नर माँस कहीं न मिला। राक्षसों के रुधिर माँस से तो सहस्रों गृद्ध तृप्त हुये पर कोमल किशोर का माँस आज ही प्राप्त होगा।

गृद्धिणी—रुधिर प्रिय ! आज कहाँ से ऐसा माँस लाओगे ?

गृद्ध—अहा ! आज दशरथ के कुमारों का बलिदान होगा। अहिरावण राम, लक्ष्मण दोनों को पाताल लोक को गत रात्रि में ले गया है। अति उत्तम माँस वहीं आज बड़े भाग्य से प्राप्त होगा।

गृद्धिणी—रुधिर प्रिय ! सत्ययुग में शुम्भ निशुम्भ महिषासुर के युद्ध जैसा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माँस लिया था, अहा वैसा इस राम रावण के युद्ध में कहाँ ? तब तो और ही समय था।

गृद्ध-प्यारी ? देवासुर संग्राम में इतने बड़े शूर थे कि हम पाँच-पाँच गृद्ध एक-एक वीर असुर की भुजा को नहीं उठा सकते थे। पर ये राक्षस वानर तो बड़े हल्के हैं।

(हनुमान का प्रवेश, गृद्ध उड़ता है, हनुमान भी जाते हैं)

—:पर्दा उठता है:—

नवम दृश्य—अहिरावण वध

स्थान—पाताल लोक

(मकरध्वज दरवाजे पर खड़ा है, हनुमान का प्रवेश)

मकरध्वज-(हनुमान को रोकता है) चौपाई

निडर जाति तोहि मम डर नाहीं ❀ जिमि दीपहिं न पतंग डराहीं।
जानेसि मोहि न मरुतसुत बालक ❀ स्वामिभक्त भञ्जन मुखकालक।

हनुमान—(मकरध्वज से)

कहत वचन शठ संयुत खोरी। काम विवश कब भई मति मोरी।
मम सुत बनसि मूढ़ केहि काजा। इतना कहत तोहि नहिं लाजा।
केहि प्रकार तुम मम सुत भएउ। निज उत्पति मोसन किन कहेऊ।

हनुमान (मकरध्वज से) चौराई

सुनहु तात मोरे यह वचना ❀ कियउ दाह रावणपुर रचना।
जब चलि आयहु उदधि समीपा ❀ तब प्रस्वेद बहेउ कपि दीपा।
सो प्रस्वेद सागर महँ गयेउ ❀ पियउ मीन तेहिते मैं भयऊ।
यहि प्रकार मैं तब सुत ताता ❀ गोवहुँ नहिं निज पिता न माता।
अहिरावण सेवा नित करऊँ ❀ यह द्वारे प्रभु आज्ञा रहऊँ।

हनुमान— चौपाई

कहहु तात तेहि अस्थल नाऊँ ❀ जान चहौं मैं निज प्रभु ठाऊँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मकरध्वज-

जान कहहु मैं जान न देऊँ। प्रभु आज्ञा तजि अयश न लेऊँ ॥
जो कुछ निज श्रवणन सुनि पायऊ। तात सकल मैं तुमहिं सुनायऊ ॥
करत अपार होम दह आजू। देविहिं बलि देइहिं नृपराजू ॥

हम स्वामी की आज्ञा बिना नहीं जाने देंगे !

(दोनों में युद्ध होता है, हनुमान मकरध्वज को उसकी पूंछ से बाँधकर भीतर जाते हैं। अहिरावण को मारकर राम लक्ष्मण को ले आते हैं।)

पटाक्षेप

—०००—

दशम दृश्य--रावण युद्ध

स्थान—रणक्षेत्र सन्निकट

(रावण सेना सहित लंका द्वार पर खड़ा है सेना में राक्षस आते हैं।)

रावण—(सेना से) चौपाई

निज भुज बल मैं बैर चढ़ावा। देहुं उत्तर जो रिपु चढ़ि आवा ॥
सर्बस खाय भोग करि नाना। समर भूमि भा दुर्लभ प्राना ॥
सुनहु सुभट सब मोरे बोला। रण सन्मुख जाकर मन डोला ॥
सो अबहीं बरु जाइ पराई। रण सन्मुख भागे न भलाई ॥
सुनहु निशाचर सकल सुभट्टा। मर्दहु भालु कपिन कर ठट्टा ॥
हौं मारिहों भूप दोउ भाई। जो रणभूमि भगै नहिं जाई ॥

रागिनी तर्ज-थियेटरी

ए मर्दानो जंगी जवानो, शेर जियानो आवो ।
वक्त गँवावो देर लगावो, फिर क्या पावो आवो ॥
निश्चर वीरो ए रणधीरो, या कपदिल को खावो ।
भालू बानर पकड़ २ कर, सब भक्षण कर जावो ॥

(सेना को बाकायदे कर बिदा होते हैं)

पटाक्षेप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकादश दृश्य--राम रावण युद्ध

स्थान—रणभूमि

(राम लक्ष्मणादि विभीषण बैठे हैं)

नैपथ्य से–(कोलाहल) रे भालु वानरों ! तपस्वी कहाँ हैं ? उनके प्राणों का ग्राहक मैं आ गया। (प्रवेश)

विभीषण–(रथारूढ़ देखकर) चौपाई

नाथ न रथ नाहीं पद त्राना । केहि विधि जीतिय रिपु वलवाना ।।
परम सुभट रजनीचर भारी । कहँ दशमुख कहँ लघु बनवारी ।।

राम (विभीषण से) चौपाई

सुनहु सखा मम वचन प्रमाना । जेहि जय होहिं सो स्यंदन आना ।।
शौरज धर्म जाहि रथ चाका । सत्य शीय दृढ़ ध्वजा पताका ।।
बल विवेक दम पर हित घोरे । क्षमा दया समता रज जोरे ।।
ईश भजन सारथी सुजाना । विरति चर्म सन्तोष कृपाना ।।
दान परशु बुधि शक्ति प्रचण्डा । वर विज्ञान कठिन कोदण्डा ।।
संयम नियम शिली मुख नाना । अमल अचल मन त्रोण समाना ।।
कवच अभेद विप्र पद पूजा । इहि सम विजय उपाय न दूजा ।।
सखा धर्ममय अस रथ जाके । जीत न सकहिं कतहुँ रिपु ताके ।।

दोहा—महा घोर संसार रिपु, जीति सके सो वीर ।
जाके अस रथ होई दृढ़, सुनहु सखा मति धीर ।।

रावण–(गर्जता हुआ सामने आता है। भालू वानरों को मारता एवं छिन्न भिन्न करता है !) अरे राक्षसों ! इस हनुमान को खाओ, अंगद को गिराओ !

(वानरों का रावण से घोर युद्ध होता है)

लक्ष्मण–(रावण से) चौपाई

रे दशशीश कहूं प्रण रोपी । राम विमुख त्राता नहिं कोपी ।।
रे शठ का मारेसि कपि भालू । मोहि विलोकु तौर मैं कालू ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रावण–(लक्ष्मण से)

खोजत रहेउ तोहिं सुत घाती। आज निपाति जुड़ावौं छाती ।।

(लक्ष्मण रावण दोनों में परस्पर युद्ध)

हनुमान–रे रे राक्षसाधम। मेरे सम्मुख आ (गदा लेकर कूदता है)

रावण–अरे नीच बन्दर। अक्षयकुमार जैसे बालकों को मारना नहीं है। आ दुरात्मा ! रावण के पाले अभी तू नहीं पड़ा (दोनों का युद्ध होता है)

हनुमान–(गदा मारता है, रावण जमीन में गिर, फिर उठता है) शाबास, है, शाबास ! (दोनों में फिर युद्ध होता है)

—: पटाक्षेप :—

--०००--

बाहरवां दृश्य--योगिनी दर्शन

स्थान–रणभूमि

(रुण्ड-मुण्ड हाथ-पैर कटे हुये अनेक वीर पड़े हैं। भूत-प्रेत-पिशाच नाच रहे हैं। योगिनी हाथ में खप्पर लिये रुधिर एवं नरमुण्ड लिये आती है)

पिशाच–(परस्पर माँस छीनते हुये लड़ते हैं) आ हा ! ऐसे माँस की बहुताई में तुम्हारा दरिद्र न जाइत।

योगिनी–(नाचती हुई गाती है) भजन करताल

"तर्ज–धर्म सभाओं की"

करियो संहार पापी बड़े अधरमी ।।

जय दुर्गे मातु भवानी, लेकर भैरव अगवानी।
कर में धर तलवार, पापी बड़े अधरमी ।।
माता तुम जल्दी आवो, फिर काली रूप बनाओ।
मुण्डन की माला धार, पापी बड़े कुकर्मी ।।
ये चण्ड मुण्ड के भाई, बढ़ गये हैं फिर दुखदाई।
काटो मार कटार, पापी बड़े अधरमी ।।

(परदा गिरता है)

–०००–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तेरहवां दृश्य-- संग्राम वृद्धि

स्थान–रणक्षेत्र

(दोनों ओर से घोर युद्ध हो रहा है ! राक्षसों की सेना बड़ा दल बांधे जा रही है।)

रावण–(वानरों की सेना को विफल करता हुआ गर्जता है) आह ! अरे तापस ! तू क्यों भागता है ?

राम–रे रे दशग्रीव ! तेरे रुधिर के प्यासे मेरे वाण छूटते हैं (बाण मारते हैं)

(दोनों का घोर युद्ध प्रारम्भ होता है)

पटाक्षेप

इति नवम चरित्र मेघनाद तथा अहिरावण वध समाप्तम् ।

–०००–

दशम दिवस

प्रथम दृश्य--राम रावण युद्ध

स्थान–समरक्षेत्र

[रामचन्द्र लक्ष्मण वानरी सेना एवं विभीषणादि सहित बैठे हैं]

विभीषण–[राम से] चौपाई

नाथ करै रावण एक यागा। सिद्ध भये नहि मरहिं अभागा ।।

पठवहु नाथ बेगि भट बन्दर। यज्ञ विध्वंस करहिं दशकन्धर ।।

सुग्रीव–हे वीर कीशो ! अभी जाकर रावण का यज्ञ विध्वंस करो।

वानर–जो आज्ञा [कहकर विदा होते हैं।]

[नैपथ्य में यज्ञ विध्वंस कर रावण सहित दौड़े आते हैं।]

"देवराज इन्द्र राम के लिये मालती द्वारा रथ भेजते हैं"

रावण–[राम से] चौपाई

जीतेउ जो भट संयुग माहीं । सुन तापस मैं तिन सम नाहीं ।।

रावण नाम जगत यश जाना। लोकप जाके बन्दी खाना ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खरदूषण विराध तुम मारा । हतेउ व्याध इव बाली बिचारा ।।
निशिचर सुभट सकल संहारे । कुम्भकर्ण घननादहिं मारे ।।
आज करौं खल काल हवाले । परेउ कठिन रावण के पाले ।।
आज बैर सब लेउँ निवाहीं । जो रणभूमि भागि नहिं जाहीं ।।

राम–(रावण से) छन्द-हरिगीतिका

जनि जल्पना करि सुयश नाशहिं नीति सुन शठ करु क्षमा ।
संसार महँ पुरुष त्रिविधि पाटल रसाल पनसः समा ।।
एक सुमन प्रद एक सुमन फल इक फल केवल लागहीं ।
एक कहहिं करहिं न एक कहि कर एक करहिं न बागहीं ।।

रावण–(राम से)

दोहा–बचत न देखे प्राण जब, मोहि सिखावहु ज्ञान ।
बैर करत तब नहिं डरेउ, अब लागत प्रिय प्रान ।।

(राम रावण युद्ध होता है)

विभीषण–(गदा लेकर दौड़े आते हैं) रे रे दशग्रीव ! खड़ा रह ।

रावण–अरे विभीषण ? दुरात्मा ??कायर??? नीच तू क्या लड़ेगा? भला तुझमें लड़ने की शक्ति होती तो तू नर वानरों की शरण क्यों लेता?

विभीषण–(रावण से) चौपाई

रे अभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे । तें सुर नर मुनि नाग विरुद्धे ।।
सादर शिव कहँ शीश चढ़ाये । एक एक के कोटिन पाये ।।
तेहि कारण खल अब लगि बाँचा । अब तव काल शीश पर नाचा ।।

(रावण के गदा मारता है, दोनों लड़ते हैं पीछे से हनुमान एक पर्वत उठाकर दौड़े हुये आते हैं)

पर्दा गिरता है

दूसरा दृश्य--सीता विकलता

स्थान–अशोक वाटिका

(सीता बैठी हैं, त्रिजटा इत्यादि राक्षसी रखवाली में हैं । रावण का प्रवेश)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रावण–हे सीते ! अब तू देख ! तेरे भर्ता रामचन्द्र गत रात्रि के युद्ध में लक्ष्मण सहित मारे गये। आज से लड़ाई बन्द हो गई। भालू वानर सब एक दो तीन हो गये हैं। तुझे अविश्वास है तो चल पुष्पक विमान में चढ़कर दिखा दें।

सीता—हाय ! दैव आज क्या सुन रही हूँ ? मेरा वैधव्य योग किसी देवज्ञ महात्मा ने आज तक नहीं बताया। बड़े बड़े ऋषि मुनि "सत्य नामामि षट्मनि इत्यादि" श्लोक जानते थे। हाय ! केश, रोम, जंघा एवं दन्तों के चिन्ह सब मेरे उत्तम सौभाग्य बढ़ाने वाले हैं ऐसा कहते थे। हा दैव ! आज क्या सबके वाक्य झूठे हो गये।

एक राक्षस–(दौड़ा हुआ आता है) हे नाथ ! वानरों ने अन्त:पुर में स्त्रियों की दुर्दशा कर दी है। रानी मन्दोदरी के महल में घुस गये।

(रावण भागता है)

त्रिजटा–हे सीते ! सब यह राक्षसी माया है डरना नहीं।

सीता–(त्रिजटा से) चौपाई

जेई कृत कनक कपट मृग झूठा। अजहुँ सो दैव मोहि पर रूठा।।
जेहि विधि मोहि दुख दुसह सहावा। लक्षमण कहँ कटु वचन कहावा।।
रघुपति विरह विषम दुख भारी। तकि तकि बार बार मोहि मारी।।
मोर अभाग्य जिआवत ओही। जेही हौं हरिपद कमल बिछोही।।

त्रिजटा–(सीता से)

मोर वचन सुन राजकुमारी। उर शर लागत मरहिं सुरारी।।
ताते उर प्रभु हतहिं न तेही। इहिके हृदय वसत वैदेही।।

छन्द–इहिके हृदय बस जानकी, मम जानकी उर वास है।
मम उदर भुवन अनेक लागत वाण सबको नाश है।।

दोहा–काटत शिर होइहिं विकल, छूटि जाइ तब ध्यान।
तब रावण के हृदय शरं, मारहिं, राम सुजान।।

(पर्दा गिरता है)

—०००—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीसरा--दृश्य रावण वध

स्थान—रणक्षेत्र

(राम, लक्ष्मण, विभीषण एवं भालू, वानर दल विराजमान हैं)

राम—लक्ष्मण, आज के युद्ध में रावण मारा जायगा। देखो भूकम्प के साथ केतु उदय हो गया दिग्दाह एवं उल्कापात, भयंकर शब्द शृगाल कर रहे हैं। काक एवं गृद्ध लंका राजमहल के ऊपर अशुभ शब्द कर रहे हैं। ओह ! देखो विना वृष्टि वायु के पर्वत टूट रहे हैं ! कहा है "वाताश्च वलुषायान्ति कम्पतेत्व वसुन्धरा" ये अशगुन राक्षस राज के प्राणत्याग सूचक हैं।

लक्ष्मण—आर्य सत्य है। इसमें संशय नहीं।

(रावण का सेना सहित प्रवेश युद्ध आरम्भ होता है)

रावण–(राम से) अरे क्षत्रिय ! प्राण बचा। राजा अनरन्य तेरे पूर्व-पुरुष के प्राण इसी से हरे थे।

(फिर युद्ध होता है)

विभीषण–(राम से) चौपाई

सुन सर्वज्ञ चराचर नायक। प्रणतपाल सुर मुनि सुखदायक।
नाभी कुण्ड सुधा वस वाके। नाथ जियत रावण बल ताके।

हे नाथ ! नाभी का अमृत कुण्ड वाण मारकर सोखिये।

(रामचन्द्र वाण मारते हैं, रावण हरे राम कहता हुआ प्राण त्याग कर भूमि पर गिर पड़ता है। मन्दोदरी रोती पीटती हुई आती है।)

मन्दोदरी–(रावण के मृत शरीर के निकट) चौपाई

तव बल नाथ डोल नित धरणी। तेजहीन पावक शशि तरणी।
शेष कमठ सहि सकहिं न भारा। सो तनु आजु परा महि छारा।
वरुण कुवेर सुरेश समीरा। रण-सन्मुख धरि काहु न धीरा।
भुजबल जीति काल यम साईं। आजु सो परेउ अनाथ की नाईं।
जगत विदित तुम्हार प्रभुताई। सुत परिजन बल वरणि न जाई।
राम विमुख अस हाल तुम्हारा। रहा न कुल कोउ रोवन हारा।
तव वशविधि प्रपंच सब नाथा। सब दिगपति नित नावहिं माथा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब तव शिर भुज जम्बुक खाहीं। राम विमुख यह अनुचित नाहीं।
काल विवश पति कहा न माना। अग जगनाथ मनुज करि जाना।

छन्द

जानेउ मनुज करि दनुज कानन, दहन पावक हरि स्वयं।
जेहि नमत शिव ब्रह्मादि सुर पिय, भजेहु नहिं करुणा मयं।
आजन्मते परद्रोहरत पापोघमय तव तनु अयं।
तुमहूँ दियो निज धाम राम, नमामि ब्रह्म निरामयं।
दोहा—अहह नाथ रघुनाथ सम, कृपासिन्धु को आन।
मुनि दुर्लभ जो परम गति, तुमहिं दीन्ह भगवान।

विभीषण-(दुखी हो) रागिनी भूपाली

स्वामी ने आज तज दिये हैं प्रान प्रान प्रान।
कुम्भकर्ण घननाद भट, कोई रहा न आज।
मुनि पुलस्त्य के वंश का रहा नाम ना ताज।
सब कुल का नाश करके खोई जान जान जान।

राम-हे विभीषण ! भाई की अन्त्येष्टि क्रिया करो और मन्दोदरी को समझाओ।

लक्षमण से चौपाई

तुम कपीश अंगद नल नीला। जामवन्त मरुत सुत शीला।
सब मिलि जाहु विभीषण साथा। सारहु तिलक करहु महि नाथा।

लक्ष्मण-जो आज्ञा।

पर्दा गिरता है।

चौथा दृश्य--अन्तर्गत

स्थान-लंका

(विभीषण को सिंहासन पर बैठा लक्ष्मण तिलक कर रहे हैं। चारों ओर भालू, बानर, राक्षस खड़े हैं। शंख ध्वनि व जय-जय शब्द हो रहा है)

पटाक्षेप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंचम दृश्य--सिया मिलाप

स्थान—राम निवेश

(रामचन्द्र बैठे हैं सब वानरों सहित लक्ष्मण जी का प्रवेश)

राम-हनुमन्त वीर ! सीता को समाचार दे आओ, शीघ्र लौटकर आओ।

हनुमान—जो आज्ञा (कहकर जाते हैं और शीघ्र ही लौट आते हैं)

राम— चौपाई

सुन सुग्रीव कीश कुल भूषण। तुम मारुत सुत और विभीषण।
अब ही लंकापुरी सिधावहु। सादर जनक, सुता लै आवहु।

सुग्रीवादि—जो आज्ञा।

(जाते हैं, सीता को लेकर प्रवेश)

राम—सखा ! जानकी पयादे ही लाओ, माता की भाँति कपि दल देखेगा।

सीता—(राम के चरणों में गिरकर प्रणाम करती हैं)

राम—प्यारी लोकापवाद मेटने के हेतु अग्नि परीक्षा द्वारा अपने सतीत्व का परिचय तुम्हें देना होगा।

सीता—जो आज्ञा नाथ की (लक्ष्मण से)

चौपाई

लक्ष्मण होहु धर्म के नेगी। पावक प्रगट करहु तुम वेगी।

लक्ष्मण—(सीता को प्रणाम करके) जो आज्ञा। (जाते हैं)

पटाक्षेप

छठा दृश्य--अग्नि परीक्षा

स्थान—अग्नि कुण्ड समीप

(अग्नि जल रही है। सीता कुण्ड में परिक्रमा करके प्रवेश करती हैं)

सीता—(परिक्रमा करके) चौपाई

जो मन क्रम बच मम उर माहीं। तजि रघुवीर आन गति नाहीं।
तौ कृशानु सबकी गति जाना। होहु मोहिं श्री खण्ड समाना।

(अग्नि में कूदती हैं तीन बार परीक्षा देती देख अग्निदेव प्रगट हो राम के अर्पण करते हैं)

(नेपथ्य में 'धन्य सीता' शब्द होता है)

पटाक्षेप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सातवां दृश्य--देवस्तुति

स्थान–राम निवेश

(राम, लक्ष्मण, सीता सहित बैठे हैं। पुष्प वृष्टि हो रही है)

देवगण-(नैपथ्य) तोटक छन्द

जय राम सदा सुख धाम हरे, रघुनायक शायक चाप धरे।
भव वारण दारुण सिंह प्रभो, गुण सागर नागर नाथ विभो॥
तनु काम अनेक अनूप छवी, गुण गावत सिद्ध मुनीन्द्र कवी।
यश पावन रावण नाम महा, खग नाथ यथा करि कोप महा।१।
जनरंजन भंजन शोक भयं, गत कोह सदा प्रभु बोध मयं।
अवतार उदार अपार गुनं, महि भार विभंजन ज्ञान घनं।
आज व्यापक मेक मनादि सदा, करुणा कर राम नमामि मुदा।
रघुवंश विभूषण दूषण हा, कृत भूप विभीषण दीन रहा।२।
गुण ज्ञान निधान अपान अजं, नित राम नमामि विभुंविरजं।
भुजदण्ड प्रचण्ड प्रताप बलं, खल वृन्द निकन्द महा कुशलं।
बिन कारण दीनदयाल हितं, छवि धाम नमामि रमासहितं।
भवतारण कारण काज परं, मन सम्भव दारुण दोष हरं।६।
शर चाप मनोहर तूण धरं, जलजारुण लोचन भूपवरं।
सुख मन्दिर सुन्दर श्री रमनं, मद मार महा ममता शमनं।
अनवद्य अखण्ड अगोचर गो, सम रूप सदा सब होई न सो।
इति वेद वदन्ति न दन्त कथा, रचि आतप भिन्न न भिन्न यथा।४।
कृतकृत्य विभो सब वानर ये, निरखन्त तवानन सादर ये।
धिक जीवन देव शरीर हरे, तब भक्ति बिना भव भूलि परे।
अब दीन दयाल दया करिये, मति मोर विभेद करी हरिये।
जेहिते विपरीत क्रिया करिये दुख में सुख मान सुखी चरिये।५।
खल खण्डन मण्डन रम्य क्षमा, पद पंकज सेवित शम्भु उमा।
नृपनायक दे वरदान मिदं, चरणाम्बुज प्रेम सदा शुभदं।६।

— पटाक्षेप —

इति दशम चरित्र रावण वध नाम समाप्तम्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकादश दिवस

प्रथम दृश्य--हनुमान प्रयाण

स्थान–मार्ग

(राम, लक्ष्मण, सीता, सुग्रीवादि सहित–पुष्पक विमान पर बैठे हैं)

राम–(हनुमान से) चौपाई

सुन हनुमान कहौं समुझाई । धरि बटु रूप अवधपुर जाई ।
भरतहिं कुशल हमार सुनाबहु । समाचार लैं आतुर आवहू ।

हनुमान–(प्रणाम करके जाते हैं)

✾ पटाक्षेप ✾

द्वितीय दृश्य–भरत विरह

स्थान—अयोध्यापुरी

(तपस्वी भेष में भरत जी बैठे हैं, राम के विरह में व्याकुल हो रहे हैं।)

भरत–(आप ही आप) चौपाई

कारन कवन नाथ नहिं आये । जानि कुटिल प्रभु मोहि बिसराये ।
अहह! धन्य लक्ष्मण बड़ भागी । राम पदार बिन्दु अनुरागी ।
कपटी कुटिल नाथ मोहि चीन्हा । ताते प्रभु मोहि संग न लीन्हा ।
जो करनी समुझे प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कल्प शत कोरी ।
जन अवगुण प्रभु मान न काऊ । दीन बन्धु अति मृदुल सुभाऊ ।
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिं राम शगुन शुभ होई ।
बीते अवधि रहे जो प्राना । अधम कवन जग मोहिं समाना ।

"विप्र रूप हनुमान का प्रवेश"

हनुमान–(भरत से)

जासु विरह सोचहु दिन राती । रटहु निरन्तर गुण गण पाती ।
रघुकुल तिलक सुजन सुख दाता । आवत कुशल देव मुनि त्राता ।
रिपु गण जीति सुयश सुर गावत । सीता अनुज सहित प्रभु आवत ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भरत—

को तुम तात कहाँ ते आये। मोहि परम प्रिय वचन सुनाये।

हनुमान—

मारुत सुत मैं कपि हनुमाना। नाम मोर सुन कृपानिधाना।
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर। करहिं कृपा रघुनायक हम पर।

भरत—

कपि तब दरश सकल दुख बीते। मिले राम मोहि आज सप्रीते।
नाहिन तात उऋण मैं तोही। शुभ सम्वाद सुनायहु मोही।

(हनुमान विदा होता है)

❀ पटाक्षेप ❀

—oo——•o—

तृतीय दृश्य—भरत मिलाप

स्थान—अयोध्या मार्ग

(एक ओर सेना सहित रघुनाथजी हैं, दूसरी ओर से पुरवासियों सहित भरत जी आते हैं। परस्पर प्रणामाशीर्वाद करके मिलते हैं)

भरत—(राम से)

राग—बिहाग। (तर्ज—नाथ कैसे गज को फन्द छुड़ायो)

प्रभु दुख बन में बहुत उठाया, रहे कैसे वहाँ रघुराया।
सियाजी का हरण मरण दशमुख का कैसे सेतु बँधाया।
कुम्भकर्ण घननाद को मारा, बालि स्वर्ग पठाया।
खरदूषण त्रिशिरा बध कीन्हा, ऋषियन सुख पहुँचाया।
वानर कटक मिला प्रभु कैसे, राज विभीषण पाया।

राम—(भरत से) राग पीलू

भरत कपि से उऋण हम नाहीं।
सौ योजन मर्यादा सिंधु की, कूद गयो क्षण माहीं।
लंका जार सिया सुध लाये, गर्व नहीं मन माहीं।
शक्ति बाण लग्यो लछिमन के, शोर भयो दल माहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्रोणागिरि पर्वत ले आये, भोर होन नहिं पाई।
आज्ञा भंग कभी नहिं कीनी, जँह पठ्या तहँ जाई।
अहिरावण की भुजा उखाड़ी, पैठ रह्यो मठ माहीं।
जो भरत हनुमत नहिं होते, को लावै जगमाहीं।

(सर्वे निष्क्रान्ता)

पर्दा उठता है

चतुर्थ दृश्य--राज्याभिषेक

स्थान—अयोध्या राज भवन

सब पुरवासी एवं भालू वानरों सहित रामचन्द्र का ग्रह-प्रवेश" सिंह पर बैठकर वसिष्ठ जी रामचन्द्र के राज्य-तिलक करते हैं।

(मंगलगान शंखध्वनि एवं वेदपाठ स्वस्तिवाचन होता है। देवता पुष्पवृष्टि करते हैं।)

तोटक छन्द

(१)

जयराम रमारमणं शमनं भवताप भयाकुल पाहि जन
अवधेश सुरेश रमेश विभो, शरणागत माँगत पाहि प्रभो
दशशीश विनाशन बीस भुजा, कृत दूरी महा महि भूरि रुजा
रजनीचर वृन्द पतंग रहे, रहे शर पावक तेज प्रचण्ड दहे

(२)

महि मण्डल मन्डन चारु तरं, धृत शायक चाप निषंग वरं
मद मोह महा ममता रजनी, तम पुन्ज दिवाकर तेज अनी
मनु जात किरात निपात किये, मृग लोग कुभोग शरे न हिये
हित नाथ अनाथ नि पाहि हरे, विषयावश पामर भूलि परे

(३)

बहु रोग वियोगन लोग हुये, भवदंघ्रि निरादर के फल ये
भवसिन्धु अगाध परे नर ते, पद पंकज प्रेम न जे करते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भरत–

को तुम तात कहाँ ते आये। मोहि परम प्रिय वचन सुनाये।

हनुमान–

मारुत सुत मैं कपि हनुमाना। नाम मोर सुन कृपानिधाना।
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर। करहिं कृपा रघुनायक हम पर।

भरत–

कपि तब दरश सकल दुख बीते। मिले राम मोहि आज सप्रीते।
नाहिन तात उऋण मैं तोही। शुभ सम्वाद सुनायहु मोही।

(हनुमान विदा होता है)

पटाक्षेप

—oo——•o—

तृतीय दृश्य—भरत मिलाप

स्थान—अयोध्या मार्ग

(एक ओर सेना सहित रघुनाथजी हैं, दूसरी ओर से पुरवासियों सहित भरत जी आते हैं। परस्पर प्रणामाशीर्वाद करके मिलते हैं)

भरत–(राम से)

राग–बिहाग। (तर्ज–नाथ कैसे गज को फन्द छुड़ायो)

प्रभु दुख बन में बहुत उठाया, रहे कैसे वहाँ रघुराया।
सियाजी का हरण मरण दशमुख का कैसे सेतु बँधाया।
कुम्भकर्ण घननाद को मारा, बालि स्वर्ग पठाया।
खरदूषण त्रिशिरा बध कीन्हा, ऋषियन सुख पहुँचाया।
वानर कटक मिला प्रभु कैसे, राज विभीषण पाया।

राम–(भरत से) राग पीलू

भरत कपि से उऋण हम नाहीं।
सौ योजन मर्यादा सिंधु की, कूद गयो क्षण माहीं।
लंका जार सिया सुध लाये, गर्व नहीं मन माहीं।
शक्ति बाण लग्यो लछिमन के, शोर भयो दल माहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservatioh Foundation, Chandigarh

द्रोणागिरि पर्वत ले आये, भोर होन नहिं पाई।
आज्ञा भंग कभी नहिं कीनी, जँह पठ्या तहँ जाई।
अहिरावण की भुजा उखाड़ी, पैठ रह्यो मठ माहीं।
जो भरत हनुमत नहिं होते, को लावै जगमाहीं।

(सर्वे निष्क्रान्ता)

❀ पर्दा उठता है ❀

चतुर्थ दृश्य--राज्याभिषेक

स्थान—अयोध्या राज भवन

सब पुरवासी एवं भालू वानरों सहित रामचन्द्र का ग्रह-प्रवेश" सिंहासन पर बैठकर वसिष्ठ जी रामचन्द्र के राज्य-तिलक करते हैं।

(मंगलगान शंखध्वनि एवं वेदपाठ स्वस्तिवाचन होता है। देवता पुष्पवृष्टि करते हैं।)

तोटक छन्द

(१)

जयराम रमारमणं शमनं भवताप भयाकुल पाहि जनं।
अवधेश सुरेश रमेश विभो, शरणागत माँगत पाहि प्रभो।।
दशशीश विनाशन बीस भुजा, कृत दूरी महा महि भूरि रुजा।
रजनीचर वृन्द पतंग रहे, रहे शर पावक तेज प्रचण्ड दहे।।

(२)

महि मण्डल मन्डन चारु तरं, धृत शायक चाप निषंग वरं।
मद मोह महा ममता रजनी, तम पुन्ज दिवाकर तेज अनी।।
मनु जात किरात निपात किये, मृग लोग कुभोग शरे न हिये।
हित नाथ अनाथ नि पाहि हरे, विषयावश पामर भूलि परे।।

(३)

बहु रोग वियोगन लोग हुये, भवदंघ्रि निरादर के फल ये।
भवसिन्धु अगाध परे नर ते, पद पंकज प्रेम न जे करते।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अति दीन मलीन दुखी नितही, जिनमें पद पंकज प्रीति नहीं ।
अवलम्ब भवन्त कथा जिनके, भव भीति कदापि नहीं तिनके ।।

(४)

नहिं राग न रोष न मान मदा, तिनके सम वैभव वा विपदा ।
मुनि त्यागत योग भरोस सदा, यहिते सब सेवक होत मुदा ।
करि प्रेम निरन्तर नेम लिये, पद पंकज सेवत शुद्ध हिये ।
सम मान निरादर आदर ही, सोई सन्त सुखी विचरंत महीं ।

(५)

मुनि मानस पंकज भृंग भजे, रघुवीर महा रणधीर अ
तव नाम जपामि नमामि हरी, भवरोग महामद मान अ
गुण शील कृपा परमायतनं, प्रणमामि निरन्तर श्री रमनं ।
रघुनन्द निकन्दन द्वन्दघनं, महिपाल विलोकिय दीन जनं ।

दोहा—बार-बार वर माँगौं, हर्षि देहु श्री रंग ।
पद सरोज अन पावनी, भक्ति सदा सतसंग ।

(पुष्प वृष्टि होती है और धीरे धीरे यवनिका गिरती है)

शुभमस्तु

दोहा—राम चरित मानस निरखि, कछु निज मति अनुसार ।
रामदत्त पूरण कियो नाटक रचि विस्तार ।
छियासट्ट उन्नीस सों सम्वत् सुखद विचार ।
ज्येष्ठ कृष्ण पड़वा दिवस पूर्ण सुखद गुरुवार ।
यह लीला रघुराज की जो गावै दिन रैन ।
अन्त समय सद्गति मिले जीवित पावै चैन ।
ओं शन्नो मित्रः संवरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमः ।
शन्नो इन्द्रो वृहस्पतिः शन्नो विष्णु रुरुक्रमः ।
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

श्री रामलीला नाटक पं० रामदत्त ज्योतिर्विद् कृत समाप्तम्

卐

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh